राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

गौरवशाली भारत

दिल्ली से प्रकाशित

R.N.I. NO. DELHIN/2011/38334 वर्ष- 10, अंक- 295 पृष्ठ - 08, नई दिल्ली, गुरूवार ,29 अप्रैल 2021, मूल्य रु. 1.50

एक नज़र...

पारसी समुदाय ने बदला अंतिम संस्कार का तरीका

सूरत। कोरोना महामारी के चलते दुनिया भर में रीति रिवाजों, रहन सहन के तरीकों, शादी समारोह से लेकर अंतिम संस्कार तक के तौर तरीके बदल दिए गए हैं। कोरोना महामारी ने पारसी समुदाय को हजारों साल पुरानी परंपरा दोखमे नशीन को बदलकर दाह संस्कार करने पर मजबूर कर दिया है। हालात की गंभीरत को देखते हुए पारसी पंचायत पदाधिकारियों ने कोरोना के चलते जान गंवाने वाले लोगों को अग्निदाह करने की मंजूरी दे दी है।

चीनी सैनिक को 10 महीने की जेल

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा में एडिशनल ज्यूडिशियल कोर्ट देहरा में एक चीनी सैनिक को 10 महीने की सजा सुनाई है। इसके अलावा उस पर 11 हजार रुपए का जुमार्ना भी लगाया गया है। यह चीनी सैनिक पिछली साल अवैध तरीके से भारत की सीमा में दाखिल हुआ था। पुलिस ने इसे हिमाचल के देहरा से गिरफ्तार किया था। तब इसने खुद को चीनी पर्यटक बताया था। बुधवार को जज शीतल शर्मा ने चीनी सैनिक को दोषी मानते हुए यह फैसला सुनाया। 8 जुलाई 2020 को चीनी नागरिक लाइ क्सिओदन नेपाल के जरिए भारत की सीमा में दाखिल हुआ था। पुलिस जांच में लाइ क्सिओदन पीपल्स लिबरेशन आर्मी का सैनिक निकला था। जांच में सामने आया था कि वह नेपाल के रास्ते से अवैध रूप से भारत में आया था।

मरीज भर्ती नहीं करने पर 20 अस्पतालों पर कार्रवाई

आगरा। आगरा में मरीजों को भर्ती नहीं करने, उपचार में लापरवाही और तीमारदारों को अनावश्यक रूप से ऑक्सीजन सिलिंडर और रेमेडिसिवर इंजेक्शन के लिए पिछले पांच दिनों में परेशान करने पर जिलाधिकारी ने 20 कोविड अस्पतालों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए उन्हें कोविड सेंटर की सूची से बाहर कर दिया है। इनमें नए सिरे से चिकित्सा मानकों की जांच के आदेश सीएमओ को दिए हैं।

कोरोना संकट के बीच पीएम मोदी ने वायुसेना प्रमुख भदौरिया के साथ बैठक की

नई दिल्ली । देश में कोरोना की दूसरी लहर से मची अफरातफरी के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को वायुसेना प्रमुख आरकेएस भदौरिया के साथ बैठक की। इस बैठक में वायुसेना प्रमुख ने एयर फोर्स की ओर से कोरोना संकट को थामने के लिए चलाए जा रहे अभियानों के बारे में प्रधानमंत्री मोदी को जानकारी दी। प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से साझा की गई जानकारी के मुताबिक एयर चीफ मार्शल ने पीएम मोदी को सूचित किया कि वायुसेना ने अपने हेवी लिफ्ट बेड़े को कोरोना संकट को थामने के लिए चलाए जा रहे अभियान में बिना रुके 24 घंटे काम करने का आदेश दिया है। वायुसेना के ऑरिशन पूरे हफ्ते बिना रुके संचालित हो रहे हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने ऑक्सीजन टैंकरों एवं अन्य जरूरी सामग्री के परिवहन में वायुसेना के अभियान की गति को बढ़ाने पर जोर दिया। वायुसेना के ऑपरेशन सुरक्षित, व्यापक और सुगमतापूर्वक चलाए जाएं पीएम मोदी ने इस पर भी जोर दिया। पीएम मोदी ने वायुसेना प्रमुख को यह सुनिश्चित करने को कहा कि कोरोना संकट में चलाए जा रहे ऑपरेशनों में दिन रात काम कर रहे वायुसेना के जवान सुरक्षित और सकुशल रहें। यही नहीं पीएम मोदी ने इन ऑपरेशनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के बारे में भी बात की।

एयर चीफ मार्शल ने पीएम मोदी को बताया कि वायुसेना इन ऑपरेशनों को चलाने में अपने बड़े और मध्यम आकार के विमानों को तैनात कर रही है। वायुसेना प्रमुख ने पीएम मोदी को भारतीय वायुसेना की ओर से स्थापित किए गए एक समर्पित कोविड एयर सपोर्ट सेल के संचाल के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस सेल का काम कोरोना संकट में चलाए जा रहे वायुसेना के ऑपरेशनों के लिए विभिन्न मंत्रालयों और एजेंसियों के साथ तेजी से समन्वय सुनिश्चित करना है।

इस बैठक में पीएम मोदी ने भारतीय वायुसेना कर्मियों और उनके परिवारों के स्वास्थ्य और उनकी कुशलता के बारे में जानकारी ली। एयर चीफ मार्शल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अवगत कराया कि वायुसेना में टीकाकरण कवरेज संतोषजनक है और यह लक्ष्?य के बेहद करीब पहुंच गया है। वायुसेना प्रमुख ने पीएम मोदी को यह भी बताया कि भारतीय वायुसेना की ओर से संचालित अस्पतालों में कोविड-19 फेसेलिटी यानी कोविड केंद्रों की संख्या बढ़ाई गई है। साथ इनमें जहां तक संभव हो सके आम लोगों का इलाज करने के लिए भी कहा गया है। सनद रहे हाल ही में प्रधानमंत्री मोदी ने सीडीएस जनरल बिपिन रावत के साथ बैठक की थी। इस बैठक में उन्होंने कोरोना संकट में सैन्य बलों की ओर से चलाए जा रहे ऑपरेशनों के बारे में जानकारी ली थी।

संकट में आगे आई देश की फर्टिलाइजर कंपनियां, मरीजों के लिए प्रतिदिन करेंगी 50 मीट्रिक टन ऑक्सीजन की आपूर्ति

नई दिल्ली । कोरोना वायरस के मामलों में बढ़ोतरी के बाद कई राज्यों को ऑक्सीजन की कमी का सामना करना पड़ रहा है। वहीं, ऑक्सीजन की कमी को पूरा करने के लिए देश की फर्टिलाइजर कंपनियों ने मोर्चा संभाल लिया है। केंद्र सरकार ने बुधवार को कहा कि इफको जैसी फर्टिलाइजर कंपनियों ने कोविड-19 रोगियों के इलाज के लिए अस्पतालों में प्रतिदिन 50 टन मेडिकल ऑक्सीजन की आपूर्ति करने की उम्मीद जताई है। इफको, गुजरात राज्य उर्वरक और रसायन (जीएसएफसी), गुजरात नर्मदा घाटी उर्वरक और रसायन (जीएनएफसी) और अन्य उर्वरक कंपनियां ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ा रही है। हालांकि, सरकार ने कोई समयसीमा नहीं दी कि इन उर्वरक(फर्टिलाइजर) संयंत्रों द्वारा ऑक्सीजन की आपूर्ति कब तक उपलब्ध कराई जाएगी।

उर्वरक और रसायन राज्य मंत्री मनसुख मंडाविया ने यहां एक बैठक में सार्वजनिक और निजी दोनों उर्वरक कंपनियों के साथ ऑक्सीजन उत्पादन बढ़ाने की संभावना पर चर्चा की। मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि कुल मिलाकर यह उम्मीद की जाती है कि प्रतिदिन लगभग 50 टन मेडिकल ऑक्सीजन कोविड-19 रोगियों को उर्वरक संयंत्रों द्वारा उपलब्ध कराया जा सकता है। यह कदम आने वाले दिनों में देश के अस्पतालों में मेडिकल ग्रेड ऑक्सीजन की आपूर्ति को बढ़ाएगा।

मंत्रालय के अनुसार, उर्वरक सहकारी इफको गुजरात में अपनी कलोल इकाई में 200 घन मीटर प्रति घंटे की क्षमता के साथ एक ऑक्सीजन संयंत्र लगा रही है और कुल क्षमता 33,000 घन मीटर प्रति दिन होगी। जीएसएफसी ने अपने संयंत्रों में छोटे संशोधन किए हैं और तरल ऑक्सीजन की आपूर्ति शुरू की है, जबकि जीएनएफसी ने वायु पृथक्करण इकाई शुरू करने के बाद चिकित्सा उद्देश्यों के लिए तरल ऑक्सीजन की आपूर्ति भी शुरू कर दी है। जीएसएफएस और जीएनएफसी दोनों ने अपनी ऑक्सीजन उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए प्रक्रिया शुरू कर दी है। यह अन्य उर्वरक कंपनियां कॉरपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी (ष्टस्क्र) फंडिंग के जरिए देश के चुनिंदा स्थानों पर अस्पतालों / संयंत्रों में मेडिकल प्लांट स्थापित करेंगी।

बैठक में, मंत्री ने उर्वरक कंपनियों से कहा कि वे ऑक्सीजन उत्पादन की अपनी मौजूदा क्षमता को फिर से बढ़ाने और अस्पतालों को मेडिकल ग्रेड ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाने के लिए महामारी के समय में समाज की मदद करें। मंत्रालय ने कहा कि उर्वरक कंपनियों ने देश में कोविड-19 की स्थिति से लड़ने के लिए सरकार के प्रयासों में शामिल होने के लिए तत्परता दिखाई है।

यूपी सरकार नेशनल राशन पोर्टेबिलिटी की सुविधा के साथ गरीबों को मई और जून में देगी मुफ्त राशन

लखनऊ । कोरोना महामारी काल में लोगों को राहत देने में जुटी उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार गरीबों के लिए बड़ा कदम उठाया है। राज्य सरकार पीडीएस अंतर्गत पात्र गृहस्थी और अंत्योदय कार्ड धारक को मई और जून माह में निशुल्क राशन देगी। सीएम योगी आदित्यनाथ ने निर्देश दिया है कि ई-पॉस मशीनों से नेशनल राशन पोर्टेबिलिटी की सुविधा के साथ अधिकाधिक लोगों को लाभांवित किया जाए। राज्य सरकार द्वारा दिया जा रहा यह राशन केंद्र सरकार के एनएफएसए अंतर्गत मई और जून माह के लिए घोषित निशुल्क राशन के अतिरिक्त होगा।

सीएम योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को टीम 11 के साथ वर्चुअल बैठक में विभिन्न निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि ऑक्सीजन प्लांट की स्थापना के लिए निजी क्षेत्र की ओर से निवेश के कई बड़े प्रस्ताव मिले हैं। यह न केवल भविष्य में ऑक्सीजन उत्पादन को बढ़ाने वाले होंगे, बल्कि रोजगार सृजन के दृष्टिगत भी महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे। उन्होंने कहा कि कोविड की पिछली लहर में आयुष विभाग की भूमिका सराहनीय रही थी। इस बार उन्हें उसी तत्परता के साथ सक्रिय होने की आवश्यकता है। लोगों को आयुष काढ़ा सहित अन्य उपयोगी औषधियां मुहैया कराई जाएं।

टीम वर्क से मिल रहे अच्छे परिणाम = सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आइसीसीसी से भेजे गए मरीज को भर्ती करना अस्पतालों के लिए अनिवार्य है। रिक्त बेड्स के बारे में हर दिन दो बार सार्वजनिक रूप से जानकारी दी जाए। सरकारी अस्पताल में बेड नहीं खाली है तो निजी अस्पतालों में भर्ती कराया जाए, अगर मरीज भुगतान में सक्षम नहीं है तो राज्य सरकार भुगतान करेगी। लेकिन एक भी मरीज को इलाज से वंचित नहीं रखा जाएगा। सभी जिलों में यह व्यवस्था सुनिश्चित कराई जाए। उन्होंने कहा कि कोविड प्रबंधन की दिशा में टीम वर्क से अच्छे परिणाम मिल रहे हैं। लगभग एक सप्ताह से प्रदेश के रिकवरी दर में हर दिन सुधार देखने को मिल रहा है। सभी प्रदेशवासी कोविड विहेवियर के अनुरूप आचरण करें। मास्क, सैनिटाइजर और दो गज दूरी के सिद्धांत को व्यवहार में लाएं।

50-50 लाख डोज के ऑर्डर = सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि उत्तर प्रदेश सर्वाधिक टीकाकरण करने वाला राज्य है। प्रदेश में टीकाकरण अभियान तेजी से चल रहा है। दोनों स्वदेशी वैक्सीन निर्माता कंपनियों से सतत संपर्क बनाए रखा जाए। 50-50 लाख डोज के ऑर्डर दे दिए गए हैं। आवश्यकतानुसार और आर्डर दिए जाएं। एक मई से 18 वर्ष से अधिक आयु के लोगों का टीकाकरण कराया जाना है। यह टीकाकरण राज्य सरकार द्वारा कराया जाएगा। किसी भी दशा में वेस्टेज न हो, इसके लिए विशेष कार्ययोजना बनाई जाए।

45 वर्ष से अधिक आयु के लोगों के टीकाकरण में भारत सरकार से सहयोग प्राप्त हो रहा है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने निर्देश दिया है कि अस्पतालों और ऑक्सीजन प्लांट की सुरक्षा के सभी जरूरी इंतजाम किए जाएं। इन संवेदनशील स्थलों पर पुलिस बल की तैनाती रहे। जिलों में कंटेनमेंट जोन और क्वारन्टीन सेंटरों की व्यवस्था को सुदृढ़ किया जाए। सभी गांवों में क्वारन्टीन सेंटर तैयार किये जाएं।

डीआरडीओ ने किया हवा से हवा में मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र का सफल परीक्षण

बंगलुरू, (एजेंसी)। स्वदेश में बने हल्के लड़ाकू विमान तेजस की हवा से हवा में मार करने की हथियार क्षमता में बुधवार को पांचवीं पीढ़ी का पाइथन-5 प्रक्षेपास्त्र जुड़ गया। डीआरडीओ ने पाइथन-5 मिसाइल का परीक्षण किया जो कामयाब रहा। रक्षा अनुसंधान विकास संस्थान (डीआरडीओ) ने बुधवार को एक बयान में यह जानकारी दी। डीआरडीओ ने बताया कि इस परीक्षण का लक्ष्य तेजस पर पहले से ही एकीकृत डर्बी बियॉन्ड विजुअल रेंड (बीवीआर) एएएम की बढ़ी हुई क्षमता को सत्यापित करना था। डीआरडीओ ने कहा कि मंगलवार को गोवा में किए गए इस परीक्षण प्रक्षेपण से विभिन्न चुनौतीपूर्ण परिदृश्यों में इसके प्रदर्शन के प्रमाणन के लिए प्रक्षेपास्त्र परीक्षणों की श्रृंखला पूरी हुई।

डर्बी प्रक्षेपास्त्र ने तेज गति से हवा में करतब दिखा रहे लक्ष्य पर सीधा प्रहार किया और पाइथन प्रक्षेपास्त्र ने भी 100 प्रतिशत लक्ष्य पर वार किया, इस तरह अपनी पूर्ण क्षमताओं को प्रमाणित किया। इन परीक्षणों ने अपने सभी लक्षित उद्देश्यों की प्राप्ति की। इस परीक्षणों से पहले बंगलूरू में तेजस में लगी विमानन प्रणाली के साथ प्रक्षेपास्त्र के एकीकृत होने के आकलन के लिए व्यापक हवाई परीक्षण किए गए। इनमें लड़ाकू विमान की वैमानिकी, फायर-नियंत्रण रडार, प्रक्षेपास्त्र आयुध आपूर्ति प्रणाली, विमान नियंत्रण प्रणाली शामिल हैं। विमान से प्रक्षेपास्त्र के सफलतापूर्वक अलग होने संबंधी परीक्षणों के बाद गोवा में दुश्मन के लक्ष्य को भेदने के लिये परीक्षण किया गया।बयान में कहा गया कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने डीआरडीओ और परीक्षण से जुड़े सभी लोगों को बधाई दी है।

कोरोना को मात देने के लिए अब अधिक अनुभव के साथ मानसिक तरीके से तैयार है : हर्षवर्धन

नई दिल्ली, (एजेंसी)। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने वित्त और कॉरपोरेट मामलों के राज्यमंत्री अनुराग ठाकुर की उपस्थिति में एक वेबिनार के जरिए चंडीगढ़, पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में 13 अलग झ्र अलग स्थानों पर रक्तदान शिविर की एक श्रृंखला का उद्घाटन किया। कोविड महामारी के कारण रक्त की जरूरतों को पूरा करने के मद्देनजर इन रक्तदान शिविरों का आयोजन कम्पीटेंट फाउंडेशन द्वारा विभिन्न संघों, गैर सरकारी संगठनों और ब्लड बैंकों के सहयोग से किया जा रहा है। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने कोविड महामारी के कारण रक्त की जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से और अधिक शक्ति एवं प्रसार के साथ रक्तदान शिविर आयोजित करने के फाउंडेशन के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि व्यक्तिगत रूप से एक रक्तदाता के लिए रक्तदान करने के कई फायदे हैं, जबकि पूरी मानवता के लिए यह एक बड़ी मदद है। इस महान कार्य के लिए अधिक से अधिक लोगों को आगे आने का आह्वान करते हुए डॉ. हर्षवर्धन ने कहा कि लोग अपने जन्मदिन पर वर्ष में कम से कम एक बार रक्तदान जरूर करें क्योंकि यह मानवता के लिए एक बड़ी मदद है। उन्होंने कहा कि उनकी राय में, पूजनीय धार्मिक स्थलों में जाने की तुलना में रक्तदान करना अधिक पवित्र है। केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जनवरी, 2021 में दुनिया का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान शुरू किया था। इस टीकाकरण अभियान को अब और तेज किया जा रहा है क्योंकि 1 मई से युवाओं का टीकाकरण शुरू होने वाला है। उन्होंने यह भी कहा कि 2021 में, देश 2020 तक की तुलना में इस महामारी को मात देने के लिए अधिक अनुभव के साथ मानसिक और भौतिक रूप से बेहतर तरीके से तैयार है। उन्होंने इस तथ्य की सराहना की कि इन रक्तदान शिविरों की स्थापना सभी कोविड प्रोटोकॉल, दिशानिदेर्शों और एसओपी के पालन के बाद की गई है। उन्होंने कहा कि रक्तदान के इस अभियान का आयोजन युवाओं के टीकाकरण से पहले किया जाना सराहनीय है क्योंकि टीकाकरण के बाद 2 महीने तक रक्तदान नहीं करना उचित है।

शायद केंद्र सरकार लोगों को कोरोना से मरने देना चाहती है, दिल्ली हाई कोर्ट की फटकार

नई दिल्ली ।केंद्र सरकार शायद कोरोना संक्रमण से लोगों को मरने देना चाहती है। रेमडेसिविर इंजेक्शन को देने के प्रोटोकॉल को देखते हुए तो ऐसा ही लगता है। दिल्ली हाई कोर्ट ने बुधवार को एक मामले की सुनवाई करते हुए केंद्र सरकार को कड़ी फटकार लगाई है। अदालत ने कहा कि रेमडेसिविर इंजेक्शन देने के प्रोटोकॉल को देखते हुए ऐसा लगता है। केंद्र सरकार की ओर से जारी नए प्रोटोकॉल के मुताबिक रेमडेसिविर इंजेक्शन उन लोगों को ही दिया जाएगा, जो ऑक्सीजन के सपोर्ट पर हैं। इस पर अदालत ने कहा, %यह गलत है। यह पूरी तरह से दिमाग को इस्तेमाल न किए जाने जैसा है। अब उन लोगों को रेमडेसिविर इंजेक्शन नहीं मिलेगा, जो ऑक्सीजन सपोर्ट पर नहीं हैं।%

अदालत ने कहा कि इस नियम से ऐसा लगता है कि आप लोगों को मरने देना चाहते हैं। जस्टिस प्रतिभा एम. सिंह ने कहा कि ऐसा लगता है कि सरकार ने उपलब्धता को बढ़ाने की बजाय प्रोटोकॉल में ही बदलाव कर दिया है ताकि इंजेक्शन की कमी को छिपाया जा सके। अदालत ने कहा कि यह पूरी तरह से मिसमैनेजमेंट है। कोरोना संक्रमण के शिकार एक अधिवक्ता की ओर से दायर की गई याचिका पर सुनवाई करते हुए हाई कोर्ट ने यह टिप्पणी की है। वकील ने अपने अधिवक्ता के माध्यम से कहा कि उन्हें 6 इंजेक्शनों की जरूरत थी, लेकिन तीन ही मिल पाए। हालांकि अदालत के दखल के बाद उन्हें मंगलवार शाम को बाकी बचे इंजेक्शन मिल सके।

इससे पहले दिल्ली हाई कोर्ट ने ऑक्सीजन की कमी को लेकर दिल्ली सरकार पर भी कड़ी टिप्पणी की थी। कोर्ट ने केजरीवाल सरकार को फटकार लगाते हुए कहा था कि ऐसा लगता है कि आपका सिस्टम पूरी तरह से फेल हो चुका है। बीते कुछ दिनों में सुप्रीम कोर्ट से लेकर देश के कई उच्च न्यायालयों ने कोविड प्रोटोकॉल के पालन, ऑक्सीजन की कमी और रेमडेसिविर इंजेक्शन की कालाबाजारी को लेकर कड़ी टिप्पणियां की हैं।

मद्रास हाई कोर्ट ने कहा था कि चुनाव आयोग पूरी तरह से फेल दिखता है। उसकी वजह से ही देश में कोरोना वैक्सीन की दूसरी लहर ने जोर पकड़ा है। अदालत ने कहा था कि जिस तरह से कोरोना संक्रमण चुनाव के दौरान बढ़ा है, उस देखते हुए चुनाव आयोग के अधिकारियों पर हत्या का केस दर्ज किया जाना चाहिए।

पर्यावरण की कीमत पर विकास नहीं होना चाहिए : नायडू

नई दिल्ली, (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने कहा कि दुनिया को ऐसे उद्योग और व्यवसाय जगत के प्रमुखों की आवश्यकता है जो अल्पकालिक लाभ से उपर उठें और दीर्घकालिक स्थिरता की दिशा में काम करें। उपराष्ट्रपति निवास, नई दिल्ली से इंडियन बी-स्कूल्स लीडरशिप कॉन्क्लेव का वर्चुअल उद्घाटन करते हुए उपराष्ट्रपति ने सचेत किया कि हमारा विकास कभी भी पर्यावरण की कीमत पर नहीं होना चाहिए। ग्लोबल वार्मिंग और प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति में हो रही वृद्धि की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए, उन्होंने कहा कि इसके कारण व्यवसायों पर भी प्रभाव पड़ रहा है। इंडियन बी-स्कूल्सः नेविगेटिंग ए सस्टेनेबल फ्यूचर बाई मर्जिंग लोकल एंड ग्लोबल बेस्ट प्रैक्टिसेस विषय पर आयोजित होने वाले इस दो-दिवसीय वर्चुअल कॉन्क्लेव का आयोजन एसोसिएशन टू एडवांस कॉलेजिएट स्कूल्स ऑफ बिजनेस (एएसीएसबी), यूएसए और एजुकेशन प्रमोशन सोसाइटी फॉर इंडिया (ईपीएसआई) द्वारा संयुक्त रूप से किया जा रहा है। भारत और दुनिया के बी-स्कूलों में शिक्षकों के सामने उत्पन्न होने वाले विभिन्न मुद्दों पर 20 से ज्यादा चिंतनशील नेता, डीन, निदेशक और नीति निमार्ता अपना-अपना विचार रखेंगें। नायडू ने कोविड-19 महामारी से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों के बावजूद इस कॉन्क्लेव का आयोजन करने के लिए एएसीएसबी और ईपीएसआई की सराहना करते हुए कहा कि इस कठिन समय के दौरान यह भारतीय बी-स्कूलों के लिए प्रबंधन शिक्षा में स्थानीय और वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं से सीखने का एक उत्कृष्ट अवसर है।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि हमारी अर्थव्यवस्था और समाज में बी-स्कूल बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि यहां पर भविष्य के प्रबंधकों, नेताओं और नवोन्मेषकों को तैयार और

महाराष्ट्र में 15 दिन के लिए बढ़ेगा मिनी लॉकडाउन

मुंबई, (एजेंसी)। महाराष्ट्र में मिनी लॉकडाउन 15 और दिनों के लिए बढ़ना तकरीबन तय है। प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे ने इसके संकेत दिए हैं। उन्होंने कहा कि बुधवार को हुई कैबिनेट मीटिंग में इस पर सहमति बनी है कि प्रदेश में कोरोना के हालात को देखते हुए मिनी लॉकडाउन को 15 दिन और बढ़ा दिया जाए। मंत्री ने कहा कि इस पर अंतिम फैसला मौजूदा लॉकडाउन के अंतिम दिन किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि महाराष्ट्र भारत में कोरोना से सबसे ज्यादा प्रभावित राज्य है। यहां महामारी के बेकाबू होते मामलों को देखते हुए लॉकडाउन जैसे प्रतिबंध लगाए गए थे। इसके तहत आवश्यक कामों को छोड़कर प्रदेश में हर तरह की गतिविधियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। हालांकि, इसके बावजूद प्रदेश में कोरोना के मामलों पर कोई लगाम नहीं लगी। रोजाना महाराष्ट्र में 50 हजार से ज्यादा मामले सामने आ रहे हैं।

राज्य में कोरोना संक्रमण के मामलों को लेकर मंगलवार को कैबिनेट मंत्री विजय वडेट्टीवार ने भी लॉकडाउन बढ़ाने की सिफारिश की थी। बुधवार को उद्धव ठाकरे सरकार की कैबिनेट मीटिंग में इस बात पर सहमति बनी है कि लॉकडाउन को 15 और दिनों के लिए बढ़ा दिया जाए। हालांकि, अभी सरकार ने इसका ऐलान नहीं किया है। बताया गया कि मौजूदा लॉकडाउन के अंतिम दिन इसकी घोषणा की जाएगी। प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे ने यह संकेत दिया है।

इंडोनेशिया में माउंट सिनाबंग ज्वालामुखी से निकलता हुआ धुआं।

ऑस्ट्रेलिया में भारत की कोरोना जांच रिपोर्ट पर उठे सवाल

मेलबर्न, (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के एक राज्य ने भारत के कोविड टेस्ट की रिपोर्ट की विश्वसनीयता पर ही सवाल खड़ा कर दिया है। उसका दावा है कि भारत से कोरोना का टेस्ट कराकर लौट रहे यात्री उनके राज्य में किए गए टेस्ट में पॉजिटिव पाए जा रहे हैं। पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के प्रीमियर मार्क मैक्गोवन ने मंगलवार को आरोप लगाया कि लौट रहे यात्रियों की भारत में की गई कोविड-19 जांच या तो त्रुटिपूर्ण है या विश्वास योग्य नहीं है। उन्होंने तो भारत में व्यवस्था की ईमानदारी पर सवाल खड़े कर दिए। मैक्गोवन ने कहा कि भारत के गलत रिपोर्ट से उनके यहां कुछ समस्या पैदा हो रही है। प्रीमियर की टिप्पणी तब आई जब पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में अधिकारियों ने कहा कि पर्थ में होटल में पृथक-वास में रखे गए चार लोग भारत से वापस आने के बाद कोरोना वायरस से संक्रमित पाए गए हैं। पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के अधिकारी इसलिए चिंतित हैं क्योंकि लौट रहे यात्रियों में से ज्यादातर ऐसे हैं जो भारत से वापस आ रहे हैं जहां महामारी की दूसरी लहर ने गंभीर स्थिति उत्पन्न कर दी है। मैक्गोवन ने कहा कि यह बड़ा सवाल है कि विमानों में सवार होने से पहले लोगों द्वारा दिखाई जा रहीं जांच रिपोर्ट क्या पूरी तरह सही हैं। यदि जांच त्रुटिपूर्ण हैं या उनमें थोड़ी धोखेबाजी है जिससे कि लोग उड़ानों में सवार हो सकें तो इससे व्यवस्था की ईमानदारी पर सवाल खड़ा होता है और हमें इन समस्याओं से क्यों पीड़ित होना पड़ रहा है। मैक्गोवन ने लोगों से भारत की यात्रा न करने का भी आग्रह किया।

सिडनी से उड़ान भरने वाले एअर इंडिया विमान के चालक दल के एक सदस्य के कोरोना संक्रमित पाए जाने के बाद ऑस्ट्रेलिया के अधिकारियों ने यात्रियों को विमान में सवार होने से रोक दिया, जिसके बाद उड़ान मंगलवार को केवल सामान लेकर दिल्ली पहुंची। उन्होंने कहा कि दिल्ली-सिडनी के बीच उड़ान के संचालन से पहले शनिवार को दिल्ली में विमान के चालक दल के सभी सदस्यों की आरटी-पीसीआर जांच की गई और सभी की रिपोर्ट निगेटिव आई।

रूस जारी करेगा दुश्मन देशों की लिस्ट

मॉस्को, (एजेंसी)। रूस ने अमेरिका और यूरोपीय देशों के साथ बढ़ते तनाव के बीच अपने दुश्मन देशों की लिस्ट प्रकाशित करने का ऐलान किया है। रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा कि यह जल्द ही जारी होगा। दोस्त देशों के लिए हमने पहले से मानदंड तय करके रखे हुए हैं। इस ऐलान के बाद यह माना जाने लगा है कि अमेरिका और यूरोपीय देशों के साथ जारी तनाव में रूस एक कदम भी पीछे नहीं हटने वाला है। राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन खुद ही रूस के दुश्मनों को हदों में रहने की चेतावनी दे चुके हैं। सर्गेई लावरोव ने सरकारी न्यूज एजेंसी स्पूतनिक को दिए इंटरव्यू में कहा कि सरकार के पास विशिष्ट निर्देश हैं, इस कार्य में जो मापदंड हैं, वे स्पष्ट हैं। इसलिए, मुझे लगता है, हमें लंबा इंतजार नहीं करना पड़ेगा। पिछले हफ्ते ही राष्ट्रपति पुतिन ने उन देशों के विदेशी राजनयिक मिशनों में काम करने वाले रूसियों की संख्या को सीमित करने के लिए एक डिक्री पर हस्ताक्षर किए जिनका संबंध रूस के प्रति मैत्रीपूर्ण नहीं है। पुतिन ने ही रूसी विदेश मंत्रालय से ऐसे देशों की की सूची बनाने को कहा था, जो रूस के प्रति दुश्मनी का भाव रखते हैं। जिसके बाद विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव के निर्देशन में ऐसे देशों को पहचानने का काम जोरशोर से जारी है। विशेषज्ञों का मानना है कि रूस इस लिस्ट को सार्वजनिक तो नहीं करेगा, लेकिन उन देशों के प्रति कठोर नीति जरूर बनाएगा। इसमें ज्यादातर देश यूरोप के होंगे।

अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट का फैसला छात्रा के पक्ष में

वॉशिंगटन, (एजेंसी)। जब 2017 में पेंसिल्वेनिया की 14 साल की ब्रैंडी लेवी को सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर स्कूल से सस्पेंड किया गया था, तब किसी ने सोचा नहीं होगा कि यह मामला अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट तक जाएगा। पर इस हफ्ते ऐसा हुआ। दशकों में यह पहला मामला है जब सुप्रीम कोर्ट ने स्कूली छात्रों की अभिव्यक्ति की आजादी के अधिकार पर बात की। दरअसल मेहेनोय एरिया हाई स्कूल में नौवीं की छात्रा ब्रैंडी ने मई 2017 में ब्रैंडी ने खुद को चीयरलीडर टीम में शामिल न किए जाने पर एक पोस्ट में अपशब्द लिखे थे और उसकी एक सहपाठी ने मिडिल फिंगर दिखाते हुए फोटो भेजकर नाराजगी जाहिर की थी। स्कूल के कोच ने नियम तोडे का हवाला देते हुए ब्रैंडी को एक साल के लिए स्कूल से बाहर कर दिया। ब्रैंडी के माता-पिता ने संघीय कोर्ट में स्कूल के खिलाफ केस दायर किया। साथ ही अमेरिकी संविधान के पहले संशोधन (जो मुक्त अभिव्यक्ति की रक्षा करता है) के तहत ब्रैंडी को टीम में बहाल करने की मांग की। इस मामले में जज ने ब्रैंडी को बहाल करने का फैसला दिया। जज ने टिप्पणी में कहा कि छात्रा ने ऐसा कोई काम नहीं किया था कि उसे इतनी बड़ी सजा दी जाए। कोर्ट ने 1969 के एक मामले का जिक्र किया और कहा कि स्कूल के कैंपस के बाहर की गई बातों को स्कूल रेगुलेट नहीं कर सकते। फैसले के बाद ब्रैंडी ने कहा कि मैं अपनी बात रखने से नहीं डरती। इसके लिए सजा भी नहीं दी जानी चाहिए। मैंन किसी को टारगेट करके कुछ नहीं कहा था। न ही यह बदमाशी या उत्पीड जैसा कुछ था।

कोरोना संकट के दौर में भारत का साथ देने के लिए अमेरिकी सांसदों ने की बाइडेन की तारीफ

वाशिंगटन, (एजेंसी)। कोरोना संकट के समय में भारत का साथ देते हुए अमेरिकी सांसदों ने कोरोना संक्रमण से जूझ रहे लोगों की जान बचाने में हरसंभव मदद करने के लिए राष्ट्रपति जो बाइडेन की प्रशंसा की है। सांसद एवं सदन की विदेश मामले की समिति के वरिष्ठ सदस्य ब्रैड शर्मन ने कहा कि अमेरिका का हमारे सहयोगी भारत की मदद करने का नैतिक दायित्व है, जो कोविड-19 की गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

हमें यह सुनिश्चित करने के लिए हर आवश्यक कदम उठाना चाहिए कि भारतीय लोगों को सभी सहायता मिले जिनकी उन्हें इस संकट के दौर में जरूरत है। कांग्रेस सदस्य कैरोलिन बॉड्रियॉक्स ने कहा मेरी संवेदनाएं भारत और पड़ोसी देशों के लोगों के साथ हैं, क्योंकि वे कोविड-19 से कठिन लड़ाई लड़ रहे हैं। मुझे खुशी है कि व्हाइट हाउस ये जीवनरक्षक टीके उपलब्ध करा रहा है, लेकिन हमें आने वाले दिनों में मजबूत, समन्वित वैश्विक प्रतिक्रिया की जरूरत पड़ेगी।

कांग्रेस सांसद माइकल वाल्ट्ज प्रेस ने कहा कि चीन के साथ अमेरिका की वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारत अहम सहयोगी है। उन्होंने कहा उसकी ताकत एशिया तथा अमेरिका में स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है। हमें कोविड-19 के नए मामलों से निपटने के लिए उनकी हरसंभव मदद करनी चाहिए। एक अन्य सांसद बिल फोस्टर ने कहा कि चूंकि अमेरिका इस महामारी से निपटने में निरंतर प्रगति कर रहा है, तो भारत में गंभीर स्थिति को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। कई अन्य अमेरिकी सांसद भी भारत के समर्थन में आ खड़े हुए हैं।

सीनेटर रॉबर्ट मेनेंदेज ने कहा कि समान तरीके से टीकों की आपूर्ति करने से न केवल आर्थिक और स्वास्थ्य सुरक्षा मिलेगी बल्कि यह नैतिक अनिवार्यता है। नवोन्मेष का गढ़ और वंचित वर्ग के लोगों का चैम्पियन होने के नाते अमेरिका को देश तथा विदेश में हर किसी को टीका लगाने के प्रयासों का नेतृत्व करना चाहिए। भारतीय-अमेरिकी सांसद राजा कृष्णमूर्ति ने कहा कि वह खुश हैं कि अमेरिका, भारत और अन्य देशों को एस्ट्राजेनेका की आपूर्ति करेगा।

सूडान के लोग भारी गरमी और बिजली नहीं होने के कारण नील नदी में नहाकर राहत हासिल करते हुए।

द्विपक्षीय वार्ता के लिए चीन के रक्षा मंत्री श्रीलंका पहुंचे

कोलंबो। श्रीलंका के राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे और प्रधानमंत्री महिंदा राजपक्षे से द्विपक्षीय वार्ता करने के लिए चीन के रक्षामंत्री जनरल वेई फेंगही दो दिवसीय यात्रा पर कोलंबो पहुंचे। श्रीलंका के विदेश मंत्रालय ने बुधवार को यह जानकारी दी। मंत्रालय के मुताबिक जनरल फेंगही चीन के सैनिक विमान से कोलंबो के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचे और श्रीलंकाई सेना के कमांडर जनरल शिवेंद्र सिल्वा ने उनकी आगवानी की। गौरतलब है कि चीन के मंत्री की यात्रा ऐसे समय हो रही है जब श्रीलंका के उच्चतम न्यायालय ने चीन द्वारा निर्मित कोलंबो बंदरगाह शहर के लिए गठित प्रशासनिक निकाय की संवैधानिकता को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई की। बंदरगाह शहर आयोग की वैधानिकता को विपक्षी पार्टियों और नागरिक समूहों ने चुनौती दी है। उल्लेखनीय है कि 1.4 अरब डॉलर की इस परियोजना को कई स्थानीय कानूनों से छूट दी गई है जिसकी बड़े पैमाने पर आलोचना हो रही है।

सिंगापुर ने लॉकडाउन से संक्रमण दर शून्य की

सिंगापुर, (एजेंसी)। सिंगापुर पहले की तरह खुली हवा में सांस ले रहा है। कुछ सीमित पाबंदियों के बीच यहां के लोग जहां चाहे वहां घूम सकते हैं। हालांकि मास्क और सोशल डिस्टेंसिंग पूरी तरह अनिवार्य है।

फिलहाल एक ग्रुप में 8 से ज्यादा लोग नहीं घूम सकते हैं। बच्चे स्कूलों में लौट चुके हैं। एक साल के वर्क फ्रॉम फोम कल्चर के बाद ज्यादातर वर्कर्स दफ्तरों में लौट चुके हैं। अब मई में सिंगापुर के लोग मजबूत इकोनॉमी का सपना पूरा होने का इंतजार कर रहे हैं। सरकार का अनुमान है कि इस साल इकोनॉमी 4 से 6 फीसदी की विकास दर हासिल करेगी, जबकि पिछले साल इकोनॉमी 5.8 फीसदी तक सिकुड़ कर खराब स्थिति में पहुंच गई थी। मजबूत इकोनॉमी का संकेत सिंगापुर की कोविड संक्रमण पर जीत की कहानी को बयां करता है। अमेरिका, भारत, ब्राजील और यूरोप, दक्षिण अमेरिका और एशिया के कई देशों की तुलना में कोरोना के खिलाफ सिंगापुर की लड़ाई बहुत सफल रही है। हालांकि यहां के पैंतरे कहीं किसी और देश में आसानी से लागू नहीं किए जा सकते। जितना प्रभाव सरकार का सिंगापुर में रहा है उसकी भारत जैसे देशों में कल्पना भी नहीं की जा सकती। सरकार अब भी चुस्त और मुस्तैद है। बाहर से आए लोगों में 40 संक्रमित पाए गए हैं। इनमें वायरस की अलग म्युटेशन मिली है। दुनिया में 15 करोड़ लोग संक्रमित हो चुके हैं। पर सिंगापुर में लोग खुद को सुरक्षित महसूस कर रहे हैं। इधर, देश के 15त्न लोगों को पूरी वैक्सीन की डोज लग चुकी थी।

इजरायल पर हमास के रॉकेट के बाद हिजबुल्लाह का ड्रोन हमला

तेल अवीव, (एजेंसी)। इजरायल कोरोना वायरस के कहर से उबरने के बाद अब दूसरी मुश्किल में फंसता जा रहा है। दुनिया का एकमात्र यहूदी राष्ट्र इन दिनों एक साथ चार-चार दुश्मनों से उलझा हुआ है। वहीं, इजरायली डिफेंस फोर्स ने भी ऐलान किया है कि वे अपने देश के दुश्मनों को कड़ा सबक सिखाने से पीछे नहीं हटेंगे। यही कारण है कि इन दिनों यरुशलम में इजरायली फोर्स और प्रदर्शनकारियों के बीच टकराव भी बढ़ गया है। इन दिनों इजरायल का सबसे बड़ा दुश्मन गाजा पट्टी में सक्रिय हमास के आतंकी हैं। जिनके रॉकेट हमले ने इजरायल को परेशान किया हुआ है। दूसरा दुश्मन लेबनान का आतंकी संगठन हिजबुल्लाह है। यह संगठन भी इजरायल पर ड्रोन हमले कर रहा है। तीसरा दुश्मन यरुशलम में सक्रिय फिलिस्तीन समर्थक प्रदर्शनकारी हैं, जो पिछले कई दिनों से कोहराम मचाए हुए हैं। चौथा दुश्मन सीरिया है, जिसने कुछ दिनों पहले एंटी एयरक्राफ्ट मिसाइल से इजरायल के परमाणु रिएक्टर को निशाना बनाने की कोशिश की थी।

खुले के मुकाबले बंद जगह में संक्रमण के मामले 18 गुना

लंदन, (एजेंसी)। दुनिया में कोरोना महामारी को लेकर हाहाकार है। वैज्ञनिक इसके प्रसार के कारण और रोकथाम के लिए टीकों के आविष्कार के शोध में दिन-रात एक किए हुए हैं। ऐसे में वायरस के प्रसार को लेकर एक नई जानकारी सामने आई है कि वायरस खुले के मुकाबले बंद माहौल में तेजी से फैलता है।

ब्रिघम और महिला अस्पताल के संक्रामक रोग विशेषज्ञ डॉ. पॉल सैक्स के द न्यू वर्ल्ड जर्नल में प्रकाशित शोध के अनुसार खुले में वायरस बहुत देर तक जिंदा नहीं रह पाता। हाल के अध्ययन से पता चला है कि कोरोना वायरस और सांस से जुड़े अन्य वायरस का संक्रमण 10 प्रतिशत से कम खुली जगह हुआ। जबकि, बंद जगह में बाहर के मुकाबले संक्रमण के मामले 18 गुना अधिक थे। वहीं, बंद एरिया में होने वाले सामाजिक आयोजनों में वायरस सुपरस्प्रेडर बन गया, यहां संक्रमण की संभावना 33 गुना अधिक थी। कैलिफॉर्निया यूनिवर्सिटी के महामारी विज्ञान और जीव विज्ञान के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. नूशिन रजानी के अनुसार बाहर के माहौल में संक्रमित होना पूरी तरह इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति कितनी देर बाहर रहा। बाहर रहने का समय जितना अधिक होगा, संक्रमण की संभावना उतनी अधिक होगी। इसिलए मास्क पहनना, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करना बेहद जरूरी है।

कोरोना वायरस पाक के नेता का ज्ञान

इस्लामाबाद, (एजेंसी)। पाकिस्तान से निर्वासित मुत्तहिदा कौमी मूवमेंट के चीफ अल्ताफ हुसैन के कोरोना वायरस पर दिए ज्ञान का एक वीडियो इन दिनों खूब वायरल हो रहा है। इस वीडियो में अल्ताफ हुसैन अपनी टूटी-फूटी इंग्लिश में कोरोना को लेकर बड़े-बड़े दावे करते दिखाई देते हैं। पाकिस्तान में रहते समय हत्या की कई बार कोशिश होने के बाद वे लंदन में स्व निर्वासन की जिंदगी जी रहे हैं। उनकी पार्टी का कराची में बड़ा जनाधार माना जाता है। 25 सेकंड के इस वीडियो में अल्ताफ हुसैन कोरोना वायरस को लेकर बड़ा दावा करते नजर आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि मैं अब भी मेडिकल साइंस का स्टूडेंट हूं। मैं पहला व्यक्ति था जिसने कोरोना वायरस के बारे में लेक्चर दिया था कि कोरोना...वायरस क्या है। मैंने बनाया था, मैंने इसकी दवाईयां होम्योपैथिक की। इस वीडियो को पाकिस्तानी पत्रकार नायला इनायत ने शेयर किया है। जिसपर लोगों ने काफी फनी कमेंट्स किए हैं। कई लोग अल्ताफ हुसैन को डॉक्टर कोरोना कहते सुनाई दे रहे हैं। एक यूजर ने लिखा कि लगता है कोरोना दिमाग पर भी असल करता है। दूसरे ने लिखा कि इसमें कोई शक नहीं है कि पाकिस्तान बाकी दुनिया से काफी एडवांस सिविलाइजेशन है।

कोरोना के 617 वैरिएंट्स को बेअसर कर सकती है कोवैक्सिन

न्यूयार्क। कोरोना के खतरनाक होने के बीच स्वदेशी कोवैक्सिन को लेकर अच्छी खबर आई है। अमेरिका के चीफ मेडिकल एडवाइजर और महामारी के टॉप एक्सपर्ट डॉ. एंथनी फौसी के मुताबिक कोरोना के 617 वैरिएंट्स को बेअसर करने में कोवैक्सिन कारगर है। फौसी का कहना है कि भारत में कोवैक्सिन लगवाने वाले लोगों के डेटा से वैक्सीन के असर के बारे में पता चला है। इसलिए भारत में मुश्किल हालात के बावजूद वैक्सीनेशन काफी अहम साबित हो सकता है। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च ने 20 अप्रैल को कहा था कि कोवैक्सिन डबल म्यूटेंट कोरोना वैरिएंट के खिलाफ भी प्रोटेक्शन देती है। अपनी स्टडी के आधार पर ढ्ढष्टरूक्र ने कहा कि ब्राजील वैरिएंट, यूके वैरिएंट और दक्षिण अफ्रीकी वैरिएंट पर भी ये वैक्सीन असरदार है और उनके खिलाफ भी यह प्रोटेक्शन देती है। देश में चल रही सेकंड वेव के लिए इन वैरिएंट्स को ही जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। दरअसल, भारत के 10 राज्यों में सामने आया डबल म्यूटेंट कोरोना वैरिएंट सबसे घातक है। यह न केवल तेजी से ट्रांसमिट होता है, बल्कि बहुत कम समय में बहुत ज्यादा नुकसान पहुंचाता है। वहीं, यूके, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीकी वैरिएंट्स भी भारत में बढ़ रहे री-इन्फेक्शन के केसेस में सामने आए हैं।

मास्क नहीं पर थाई प्रधानमंत्री पर लगाया गया जुर्माना

बैंकॉक, (एजेंसी)। थाईलैंड में कोरोना के पाबंदी सम्बन्धी नियमों को लेकर सरकार कितनी पाबंद है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि मास्क न पहनने पर खुद थाइलैंड के प्रधानमंत्री प्रयुथ चान ओचा को भी 190 डॉलर यानी करीब 14 हजार रुपए से ज्यादा का जुमार्ना लगाया गया है। बैंकाक के गवर्नर ने इसकी जानकारी दी। बता दें कि प्रधानमंत्री प्रयुथ चान ओचा ने अपनी एक मीटिंग की फोटो फेसबुक पर पोस्ट की थी, जिसमें वो बिना मास्क के नजर आ रहे थे।

बगदाद के एक अस्पताल में आगे लगने के बाद जले हुए ऑक्सीजन सिलेंडर।

करीब आया ईरानी युद्धपोत तो अमेरिकी नौसेना ने की फायरिंग

वॉशिंगटन, (एजेंसी)। फारस की खाड़ी में अमेरिका और ईरान के बीच तनाव बढ़ता ही जा रहा है। पिछले कई दिनों से ऐसी रिपोर्ट्स आ रही थी कि ईरानी नौसेना इस इलाके में गश्त कर रही अमेरिकी पेट्रोल बोट्स को परेशान कर रही हैं। अमेरिकी सेना ने खुद बताया था कि ईरानी नौसेना के बड़े-बड़े युद्धपोत अमेरिका के छोटे पेट्रोल बोट्स के बिलकुल पास आकर खतरे को बढ़ा रहे हैं। अब अमेरिकी सेना ने मंगलवार को बताया कि हाल में ही ईरान का एक जहाज उनकी नौसेना के एक पेट्रोल बोट के काफी नजदीक आ गया था, जिसे भगाने के लिए वॉर्निंग शॉट फायर करना पड़ा। पिछले पांच साल में ऐसा बहुत ही कम हुआ है जब अमेरिकी नौसेना के जहाज के बिलकुल पास ईरानी नौसेना का कोई शिप आया हो। इन दिनों वियना में ईरान के साथ परमाणु समझौते में अमेरिका के लौटने को लेकर बातचीत चल रही है। माना जा रहा है कि ईरान इस बैठक में दबाव बनाने के लिए ऐसी हरकतें कर रहा है। अमेरिकी सेना ने दावा किया है कि समुद्र में ऐसी हरकतें ईरानी सेना के स्थानीय कमांडर के निर्देश पर की जाती हैं, इसके लिए उन्हें ऊपर से कोई आदेश नहीं होता है।

अमेरिकी सेना ने बताया कि गश्त के दौरान पेट्रोल बोट पर मौजूद सैनिकों ने ईरानी जहाज को पुल-टू-ब्रिज रेडियो और लाउड-हेलर उपकरणों के माध्यम से कई चेतावनी दी। इसके बाद भी ईरानी जहाज ने पास आना और खतरनाक तरीके से कट मारना जारी रखा। जिसके बाद सख्त चेतावनी देने के लिए अमेरिकी पेट्रोल बोट को आखिरी चेतावनी देने के लिए हवा में फायरिंग की। जिसके बाद ईरान जहाज, अमेरिकी पोत से सुरक्षित दूरी पर चले गए।

चिताओं के लिए दिल्ली के श्मशानों में हुई लकड़ी कमी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कोविड-19 से मौत के मामलों में तेजी से हो रही वृद्धि के कारण दिल्ली नगर निगमों द्वारा संचालित श्मशान घाटों में चिता की लकड़ियों की कमी के बीच उत्तरी दिल्ली के महापौर जय प्रकाश ने बुधवार को मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से अनुरोध किया कि वह वन विभाग को इन श्मशानों में लकड़ियों की सुगम आपूर्ति सुनिश्चित करने का निर्देश दें। राजधानी दिल्ली में अप्रैल में अब तक 4,063 कोविड-19 रोगियों की मौत हो चुकी है। इनमें से 2,500 से अधिक लोगों की मौत बीते सात दिन में हुई हैं। फरवरी में 57, जबकि मार्च में 117 रोगियों की मौत हुई थी। प्रकाश ने केजरीवाल को चिट्ठी में लिखा कि आपसे अनुरोध है कि वन विभाग को बिना किसी रुकावट के इन श्मशानों में लकड़ी की आपूर्ति सुनिश्चित करने का निर्देश दें। जय प्रकाश ने पत्र में लिखा कि कृपा करके वन विभाग को उचित निर्देश दें ताकि श्मशान घाट निर्बाध तरीके से अपना काम जारी रख सकें और शोकाकुल परिवारों को किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो। गौरतलब है कि कोरोना महामारी के इस दौर में आज लोगों को अपने टेस्ट कराने से लेकर ऑक्सीजन और आईसीयू बेड तक के लिए काफी जद्दोजहद करनी पड़ रही है। हालात इतने बदतर हो चुके हैं कि इलाज के अभाव में दम तोड़ रहे हैं लोगों के अंतिम संस्कार के लिए भी लंबा इंतजार करना पड़ रहा है। इस पर श्मशान घाटों में लड़की की कमी ने स्थिति और चिंताजनक बना दी है। कोविड-19 महामारी की सेकेंड वेव में न केवल अस्पताल, बल्कि श्मशान घाट तक फुल हो गए हैं और वहां पैर रखने तक की जगह नहीं बची है। अंतिम संस्कार के लिए आ रहे शवों की संख्या इतनी ज्यादा है कि श्मशानों को उनके अंतिम संस्कार के लिए अतिरिक्त चबूतरे बनाने पर पड़ रहे हैं।

महिला एसआई को नहीं मिला ऑक्सीजन बेड अस्पताल में हुई मौत

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कोरोना से संक्रमित दिल्ली पुलिस की एक महिला एसआई को अस्पताल में ऑक्सीजन नहीं मिल पाने की वजह से मौत हो गई। दिल्ली पुलिस की सिक्योरिटी यूनिट में तैनात उक्त महिला एसआई सुनीता पिछले कुछ दिनों से बीमार थी और घर पर ही अपना इलाज करवा रही थी। लेकिन तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें उनके परिजनों ने मनसा राम अस्पताल में भर्ती कराया था। जहां, मरीजों की संख्या ज्यादा होने की वजह से उन्हें ऑक्सीजन बेड नहीं मिला। आरोप है कि ऑक्सीजन बेड उपलब्ध कराने के लिए उन्होंने ट्विटर के माध्यम से अपने डिपार्टमेंट से आग्रह भी की। लेकिन फिर भी उन्हें ऑक्सीजन बेड उपलब्ध नहीं हो पाया। जिसकी वजह से उनकी आखिरकार मौत हो गई। हालांकि अभी इस आरोप के बारे में वरिष्ठ पुलिस अधिकारी बोलने के लिए तैयार नहीं है।

लॉकडाउन में भी चल रहा है नए संसद भवन का काम

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कोरोना के बढ़ते संक्रमण की वजह देश की राजधानी दिल्ली के हालात काफी खराब हैं। दिल्ली सरकार ने संक्रमण पर काबू पाने के लिए लॉकडाउन लगा दिया है। लॉकडाउन लगने के बावजूद प्रधानमंत्री मोदी की महत्वाकांक्षी परियोजना सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट पर काम जारी है। नई संसद भवन के निर्माण कार्य में लगे मजदूरों के ऊपर भी कोरोना के संक्रमण का खतरा मंडरा रहा है। निर्माण कार्य में लगे मजदूरों ने कहा है कि भयंकर महामारी के कारण उन्हें यहां काम करने में भी डर लगता है। सरकार द्वारा लॉकडाउन लगाए जाने के बाद सिर्फ उन्हीं निर्माण कार्यों को करने की अनुमति दी गई है जहां मजदूरों के रहने की व्यवस्था भी साइट पर ही हो। लेकिन सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट में इन नियमों का भी उल्लंघन किया जा रहा है। एनडीटीवी की रिपोर्ट के अनुसार नई संसद भवन के निर्माण कार्य में लगाए गए मजदूरों को 16 किलोमीटर दूर कीर्ति नगर और उसके आसपास से लाया जा रहा है। दरअसल इस विस्टा प्रोजेक्ट को साल 2023 तक पूरा किया जाना है। इसके लिए मजदूरों को दिन में 12 घंटे तक काम करना पड़ रहा है। पिछले दिनों कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भी ट्वीट करते हुए इस प्रोजेक्ट को लेकर प्रधानमंत्री मोदी पर निशाना साधा था। राहुल गांधी ने सेंट्रल विस्टा से जुड़ी एक खबर को ट्वीट करते हुए लिखा था कि कोविड संकट है। जांच नहीं, टीका नहीं, ऑक्सीजन नहीं, आईसीयू नहीं प्राथमिकताएं। इसके अलावा इतिहासकार रामचंद्र गुहा ने भी ट्वीट करते हुए लिखा था कि अप्रैल 2020 में, मैंने आग्रह किया था कि सेंट्रल विस्टा परियोजना को समाप्त कर दिया जाए और इसे आवंटित धनराशि को राज्यों को वितरित की जाए ताकि वे महामारी से लड़ सकें। यह परियोजना कितनी अधिक क्रूर और मारक है।

रोहिणी के अम्बेडकर अस्पताल में कोरोना विस्फोट, 47 स्वास्थ्यकर्मी मिले संक्रमित

नई दिल्ली, (एजेंसी)। राजधानी दिल्ली के रोहिणी इलाके में स्थित बाबा साहेब अम्बेडकर अस्पताल में कोरोना की दूसरी लहर में अब तक का सबसे बड़ा विस्फोट हुआ है। अस्पताल में गत दिनों यहां तैनात 58 कर्मचारियों की कोरोना जांच करवाई थी। मंगलवार को सभी जांच रिपोर्ट सामने आई तो हंगामा मच गया। अस्पताल के 47 कर्मचारी संक्रमित पाए गए। संक्रमितों में मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के कर्मचारी है, जो लगातार अस्पताल में काम कर रहे थे। ऐसे में अब माना जा रहा है कि यहां उपचार के लिए आने वाले मरीजों से भी संक्रमितों का सम्पर्क हुआ है। अस्पताल सूत्रो ने बताया कि कई कर्मचारियों की तबीयब खराब हुई थी और उनके लक्षण कोरोना संक्रमण से मिलते हुए थे। एतिहातन अस्पताल में तैनात कर्मचारियों की कोरोना जांच की गई। जांच कराने वालों में अस्पताल के मेडिकल डायरेक्टर, कोरोना प्रबंधन के इंजार्च भी शामिल थे। कुल 58 लोगों की जांच कराई गई थी। सभी 58 की रिपोर्ट मंगलवार दोपहर आई। रिपोर्ट आने के बाद अस्पताल में हडकंप मच गया क्योंकि मेडिकल डयरेक्टर सहित 47 लोग संक्रमण की चपेट में आ चुके थे और सभी की रिपोर्ट पॉजिटिव थी। ऐसे में सभी को क्वारंटाइ कर दिया गया है और उपचार शुरू कर दिया गया है। मरीजों और अन्य कर्मचारियों के संक्रमण की चपेट में आने की आशंका बड़ी संख्या में अस्पताल में तैनात कर्मचारियों के संक्रमित मिलने के बाद अब अन्य कर्मचारियों और अस्पताल में उपचार के लिए आने वाले मरीजों के भी संक्रमित होने की आशंका जताई जा रही है। अस्पताल के अधिकारियों का कहना है कि संक्रमित लोगों के सम्पर्क में आए लोगों की सूची तैयार की जा रही है। इसमें उन लोगों को शामिल किया जाएगा तो यहां उपचार करवाने के लिए आए थे। अधिकारियों का कहना है कि ऐसे लोगों को ढूंढा जाएगा।

कोरोना संक्रमित व्यक्ति की मौत के बाद नहीं आए पड़ोसी-रिश्तेदार

नई दिल्ली, (एजेंसी)। नोएडा में कोविड-19 से संक्रमित एक व्यक्ति की मौत के बाद जब कोई रिश्तेदार या पड़ोसी उसके शव को कंधा देने के लिए आगे नहीं आया तो मृतक की बेटी ने पुलिस से मदद की गुहार लगाई। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर मृतक का अंतिम संस्कार करवाने में पूरी मदद की। पुलिस आयुक्त आलोक सिंह के मीडिया प्रभारी ने बताया कि नोएडा के सेक्टर 19 में रहने वाले 52 वर्षीय व्यक्ति कोविड-19 से संक्रमित हो गए थे। उनका घर पर इलाज चल रहा था। इसी दौरान मंगलवार को उनकी मौत हो गई।

उन्होंने बताया कि मृतक की बेटी ने अपने नाते, रिश्तेदारों तथा परिचितों को फोन कर पिता को श्मशान घाट तक ले जाने के लिए मदद मांगी, लेकिन कोई भी मदद को आगे नहीं आया। अंत में मृतक की बेटी ने नोएडा पुलिस से सहायता मांगी। मीडिया प्रभारी ने बताया कि जैसे ही पुलिस को मामले की जानकारी मिली, सेक्टर-19 के चौकी प्रभारी हरि सिंह और अन्य पुलिसकर्मी मौके पर पहुंचे तथा शव को कंधा देकर श्मशान तक पहुंचाया और अंतिम संस्कार करवाया। महामारी के समय में पुलिस के इस मानवीय पहलू की सभी जमकर प्रशंसा कर रहे हैं। मीडिया प्रभारी ने बताया कि गौतमबुद्ध नगर पुलिस कमिश्नरेट यहां के लोगों की हर तरह से मदद कर रहा है। उन्होंने बताया कि थाना सूरजपुर क्षेत्र तथा बिसरख थाना क्षेत्र में रहने वाले कुछ लोगों की मंगलवार को कोविड-19 से मौत हो गई थी, जिनके परिजन भी उनके अंतिम यात्रा में शामिल होने नहीं आए। उनका भी पुलिस ने दाह संस्कार करवाया।

दिल्ली में चार बार कोरोना टेस्ट कराने के बाद भी जज साहब को नहीं मिली रिपोर्ट

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली में कोरोना टेस्ट की दिक्कत के साथ ही रिपोर्ट मिलने भी लोगों को मुश्किल का सामना करना पड़ रहा है। हालात यह हैं कि एक न्यायिक अधिकारी को चार बार कोरोना टेस्ट कराने के बाद भी अभी तक रिपोर्ट नहीं मिली है। न्यायिक अधिकारी की रैपिड एंटीजन रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी, तब से वह चार बार आरटी-पीसीआर जांच के लिए सैम्पल दे चुके हैं, लेकिन 15 दिन बीत जाने के बावजूद अभी तक उन्हें एक भी जांच रिपोर्ट नहीं मिली है। साकेत कोर्ट परिसर में रहने वाले और कड़कड़डूमा कोर्ट में कार्यरत अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश ने अपने कोरोना टेस्ट के लिए 14 अप्रैल को पहला सैम्पल दिया था। उसी दिन उन्होंने रैपिड एंटीजन टेस्ट भी कराया था। एंटीजन टेस्ट में उनकी रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी, जबकि आरटी-पीसीआर रिपोर्ट नहीं मिली। इसके बाद उन्होंने दोबारा साकेत अदालत परिसर स्थित डिस्पेंसरी में 17 तारीख को आरटी-पीसीआर जांच के लिए सैम्पल दिया। फिर भी रिपोर्ट नहीं आई। इसके बाद उन्होंने 21 तारीख को तीसरी बार डिस्पेंसरी में सैम्पल दिया, लेकिन इस बार भी कोई नतीजा नहीं आया। अब चौथी बार सत्र न्यायाधीश ने 26 अप्रैल को आरटी-पीसीआर सैम्पल दिया है, जिसकी रिपोर्ट का वह इंतजार कर रहे हैं। न्यायिक अधिकारी का कहना है कि उन्हें कोरोना के लक्षण हैं, लेकिन क्योंकि रैपिड एंटीजन पर पूरी तरह भरोसा ना करने की बात सामने आती रही है, इसलिए वह आरटी-पीसीआर टेस्ट से पुष्टि करना चाहते हैं।

शहाबुद्दीन के इलाज की निगरानी करे दिल्ली सरकार

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने बुधवार को दिल्ली सरकार और जेल प्रशासन को कोरोना से संक्रमित पूर्व आरजेडी सांसद मोहम्मद शहाबुद्दीन को समुचित इलाज मुहैया कराने और इलाज की निगरानी करने को कहा है। कोरोना से संक्रमित पूर्व सांसद को दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल में भर्ती हैं। जस्टिस प्रतिभा एम. सिंह ने अपने आदेश में कहा कि कोरोना मरीजों का इलाज कर रहे ड्यूटी पर मौजूद डॉक्टर शहाबुद्दीन के स्वास्थ्य की स्थिति पर नजर रखेंगे और उनका इलाज करेंगे। उन्होंने कहा कि जरूरत पड़ने पर इलाज कर रहे डॉक्टर हॉस्पिटल के वरिष्ठ डॉक्टरों से परामर्श भी करेंगे। हाईकोर्ट ने हत्या के मामले में उम्रकैद की सजा काट रहे राजद नेता को दिन में दो बार परिजनों से बात करने की अनुमति दे दी है। इसके साथ ही डीडीयू अस्पताल में उनके इलाज की निगरानी एवं समुचित इलाज की मांग को लेकर शहाबुद्दीन की ओर से दाखिल याचिका का हाईकोर्ट ने निपटारा कर दिया। दिल्ली सरकार के स्थायी वकील संतोष के त्रिपाठी ने कहा कि जेल नियमावली के अनुसार, जेल के बाहर रहने पर किसी कैदी को परिजनों से फोन पर बात करने की अनुमति नहीं होती है। इस पर हाईकोर्ट ने कहा कि शहाबुद्दीन बीमार हैं। इस पर वकील त्रिपाठी ने हाईकोर्ट से कहा कि दोषी को जेल अधिकारियों की निगरानी में किसी एक रिश्तेदार से बात करने की अनुमति दी जा सकती है। सरकार ने हाईकोर्ट को बताया कि पूर्व सांसद का समुचित इलाज किया जा रहा है और जो आगे भी जारी रहेगा। इसके बाद अधिकारियों की निगरानी में पूर्व सांसद को परिजनों से बात करने की अनुमति मिल गई।

डीयू में स्थगित हो सकती है ऑनलाइन ओपन बुक परीक्षा

नई दिल्ली, (एजेंसी)। दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा अंतिम सेमेस्टर के छात्रों की आयोजित होने वाली ओपन बुक परीक्षा पर कोरोना का साया छाया हुआ है। बड़ी संख्या में शिक्षक, कर्मचारी व छात्र कोरोना से संक्रमित हैं ऐसे में डीयू के समक्ष यह चुनौती है कि वह ऑनलाइन ओपन बुक परीक्षा कैसे कराएगा। ऐसे में डीयू के डीन ऑफ कॉलेजेज प्रो.बलराम पाणि ने बताया कि स्थिति गंभीर होने के कारण ओपन बुक परीक्षा स्थगित हो सकती है। हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि हम उस पहलू पर भी विचार कर रहे हैं कि जिन छात्रों को विदेश में दाखिला लेना है और उनको समय से परीक्षा परिणाम चाहिए उनकी क्या हम लोग अलग से परीक्षा आयोजित कर सकते हैं। डीयू एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि यह एक कठिन और चुनौतीपूर्ण समय है। निश्चित रूप से परीक्षा कराना कठिन होगा लेकिन अभी से अभिभावकों के मेल व फोन आ रहे हैं कि उनके बेटे को विदेश के किसी संस्थान में या कहीं और भी दाखिला लेना है इसलिए परीक्षा परिणाम जुलाई तक चाहिए। छात्रों के भविष्य का भी सवाल है। ज्ञात हो कि डीयू में 500 से अधिक शिक्षक बीमार हैं और कई शिक्षकों का कोरोना संक्रमण के कारण निधन भी हो गया है। इस बीच डीयू के शिक्षक संगठन इंटक व छात्र संगठन आइसा ने यह मांग की है कि डीयू प्रशासन इस परीक्षा को तुरंत स्थगित करे। प्राप्त जानकारी के अनुसार डीयू के परीक्षा विभाग में ही 14 कर्मचारी कोरोना संक्रमित हैं और कई ऐसे कर्मचारी हैं जिनके परिवार में लोग कोरोना संक्रमित हैं। इसके अलावा डीयू के हर कॉलेज में शिक्षक कोरोना संक्रमित हैं और कई शिक्षकों का निधन भी हो चुका है। यही नहीं उनके परिजन भी कोरोना संक्रमित हैं। ऐसे में उन शिक्षकों के समक्ष प्रश्नपत्र बनाने का संकट है। डीयू में शिक्षक संगठन इंडियन नेशनल टीचर्स कांग्रेस के संयोजक डा.पंकज गर्ग का कहना है कि डीयू प्रशासन को इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए परीक्षा कैसे स्थगित की जा सकती है। 15 मई से परीक्षा है और विशेषज्ञ इसी समय कोरोना के अपने चरम पर पहुंचने की बात कह रहे हैं। अधिकांश शिक्षक व छात्र कोरोना के कारण मानसिक अवसाद में हैं। उनके समक्ष यह संकट हैं कि वह अपने परिवार की या अपनी देखभाल करें कि डीयू द्वारा आयोजित होने वाली परीक्षा की तैयारी करें। ऐसी भी जानकारी है कि कई ऐसे शिक्षक हैं जो कोरोना से पीड़ित हैं और उनको प्रश्नपत्र बनाने के लिए डीयू ने भेजा है। स्वास्थ्य कारणों से परेशान शिक्षक कैसे प्रश्नपत्र बना पाएंगे।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा पत्रकार कप्पन को इलाज के लिए भेजा जाए

नई दिल्ली, (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश सरकार को बुधवार को सुझाव दिया कि पिछले साल गिरफ्तार किए गए केरल के पत्रकार सिद्दीकी कप्पन को बेहतर इलाज के लिए दिल्ली भेजा जाए। सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सुप्रीम कोर्ट के इस सुझाव का विरोध किया है। मेहता ने सुप्रीम कोर्ट से कहा यदि कोई मेडिकल इमरजेंसी है, तो उत्तर प्रदेश सरकार यह सुनिश्चित करे कि मथुरा के अस्पताल में ही उसकी जांच हो और जो कुछ भी करना पड़े, वह बिना किसी डर के किया जाएगा। उसे उसके परिवार के लिए दिल्ली भेजना लाखों के साथ अन्याय होगा। उन्होंने कहा कि मथुरा की जेल में कई मरीज बिना सुविधाओं के हैं और कई लोगों को बेड तक नहीं मिल रहे हैं। मेहता ने आगे कहा- मैं खुद उत्तर प्रदेश में बहुत से लोगों को जानता हूं जिन्हें इलाज के लिए अस्पताल में बेड तक नहीं मिल रहे। अगर डॉक्टर कहते हैं कि कप्पन को भर्ती करने की जरूरत है तो हम उन्हें मथुरा के अस्पताल में भर्ती कर सकते हैं। इधर, सुनवाई कर रही पीठ ने कहा, हम स्वास्थ्य के मुद्दे तक सीमित हैं। यह राज्य के हित में भी है कि आरोपी को बेहतर इलाज मिले। गौरतलब है कि पिछले साल 16 नवंबर को, शीर्ष अदालत ने पत्रकार की गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका पर उत्तर प्रदेश से जवाब दाखिल करने को कहा था। पोपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) से कथित तौर पर संबंध रखने के आरोप में चार लोगों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की विभिन्न धाराओं और गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) कानून (यूएपीए) के प्रावधानों के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई थी। बता दें कि पत्रकार सिद्दीकी कप्पन को 5 अक्टूबर को हाथरस जाते समय रास्ते में गिरफ्तार किया गया था। वह हाथरस में सामूहिक बलात्कार की शिकार हुई दलित युवती के घर जा रहे थे। इस युवती की बाद में दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई थी।

दिल्ली में कोरोना को लेकर सियासत भी गरमाई

नई दिल्ली। एक ओर राजधानी दिल्ली में जहां कोरोना वायरस संक्रमण के मामलों में बेतहाशा वृद्धि हो रही है, वहीं इस पर सियासत भी जमकर हो रही है। इस बीच में सत्तासीन आम आदमी पार्टी में पूर्व मंत्री रहे और फिलहाल भारतीय जनता पार्टी के नेता कपिल मिश्रा ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ एफआइआर दर्ज करने के लिए शिकायत दी है।

भाजपा नेता कपिल मिश्रा ने अरविंद केजरीवाल को आपराधिक उपेक्षा का आरोपित बताया है। कपिल मिश्रा ने बुधवार को दिल्ली के पुलिस कमिश्नर को मेल कर दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ एफआइआर दर्ज करने के लिए शिकायत दी है। कपिल मिश्रा के मुताबिक, सीएम अरविंद केजरीवाल आपराधिक उपेक्षा के आरोपित हैं। उन्होंने अपनी शिकायत में कहा है कि मुख्यमंत्री की आपराधिक लापरवाही के कारण ही दिल्ली में सैकड़ों लोगों की जान गई और लगातार कोरोना वायरस संक्रमण के मामले बढ़ रहे हैं।

रेमडेसिविर के लिए पैर पकड़ गिड़गिड़ाती रहीं महिलाएं

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कोरोना से जूझ रहे अपने परिजनों की जान बचाने के लिए मंगलवार को तीन महिलाओं ने गौतमबुद्ध नगर सीएमओ के पैर पर पकड़ लिए। महिलाओं ने आरोप लगाया कि उन्हें रेमडेसिविर देने की बजाय सीएमओ ने कहा कि दोबारा इंजेक्शन मांगने आईं तो पुलिस के हवाले कर देंगे। वहीं खोड़ा कॉलोनी निवासी रिंकू देवी ने बताया कि इंजेक्शन न मिलने से 24 साल के बेटे विकास की मौत हो गई। सेक्टर-39 स्थित सीएमओ कार्यालय में तीन महिलाएं अस्पताल में भर्ती कोविड मरीजों के लिए रेमडेसिविर की व्यवस्था के लिए भटक रही थीं। ऐसे में स्वास्थ्य विभाग में इंजेक्शन के लिए आई थीं, लेकिन यहां भी निराशा हाथ लगी। इस दौरान कार्यालय पहुंचे सीमएओ के पैर पकड़कर वो महिलाएं अपने मरीजों को अस्पतालों में रेमडेसिविर इंजेक्शन देने की गुहार लगाने लगीं। महिलाओं ने आरोप लगाया कि सीएमओ ने कहा कि अगर दोबारा इंजेक्शन मांगने आईं तो पुलिस के हवाले कर देंगे। वहीं इस मामले में सीएमओ डॉ. दीपक ओहरी का कहना है कि पुलिस शिकायत की बात उन्होंने नहीं कही है। उन्होंने कहा कि उनके पास में इंजेक्शन नहीं हैं। वहीं किसी व्यक्ति ने इसका वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। सेक्टर 39 कोविड अस्पताल में 21 अप्रैल को एक कोविड मरीज की मौत हो गई थी। मृतक का एक कीमती मोबाइल उस समय अस्पताल में गुम हो गया था। पांच दिन बाद भी मोबाइल न मिलने पर मृतक के परिजनों ने थाना सेक्टर 39 में रिपोर्ट दर्ज कराई है। सेक्टर 151 स्थित जेपी अमन सोसायटी में पंकज वांछिल रहते थे। 16 अप्रैल को कोरोना संक्रमित होने की वजह से पंकज को सेक्टर 39 स्थित कोविड अस्पताल में भर्ती कराया गया था। परिजनों ने बताया कि पंकज ने 19 अप्रैल को अपने कीमती मोबाइल से एक रिश्तेदार से वीडियो कॉल की थी। इसके बाद 21 अप्रैल को उनकी मौत हो गई। जब वह शव लेने पहुंचे तो पंकज का मोबाइल उनके पास नहीं था। पूछने पर अस्पताल प्रबंधन ने उनसे कहा कि वह मोबाइल ढूंढ़कर उन्हें बाद में दे देंगे। मगर अभी तक मोबाइल नहीं मिला है।

कोरोना टेस्ट से लेकर दवा–बेड तक के लिए मारामारी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कोरोना महामारी के इस दौर में आज लोगों को अपना टेस्ट कराने से लेकर ऑक्सीजन बेड तक के लिए जद्दोजहद करनी पड़ रही है। हालात इतने बदतर हैं कि इलाज के अभाव में लोग दम तोड़ रहे हैं। यहां तक कि अंतिम संस्कार के लिए भी सिफारिश करानी पड़ रही हैं। दिल्ली के रोहिणी इलाके में रहने वाले सूरज (बदला हुआ नाम) कोरोना के लक्षणों से ग्रसित थे। परिवार के सदस्य जांच कराने से लेकर ऑक्सीजन बेड के लिए एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल भटकते रहे, लेकिन कहीं से कोई मदद नहीं मिली। इस बीच उनकी हालत गंभीर होती चली गई। घर पर ही ऑक्सीजन सिलेंडर लगाना पड़ा, लेकिन इलाज के दौरान उन्होंने दम तोड़ दिया। उनके एक रिश्तेदार ने बताया कि उन्हें बुखार था, जिसके बाद कोरोना जांच कराने के लिए भी लेकर गए, लेकिन कहीं भी जांच नहीं हो सकी। घर पर भी सैंपल लेने के लिए कोई तैयार नहीं था। ऑक्सीजन स्तर कम होने पर अस्पतालों में ऑक्सीजन बेड भी तलाश किए, लेकिन किसी अस्पताल में कोई बेड खाली नहीं मिला। कहीं से ऑक्सीजन सिलेंडर की व्यवस्था की गई, जिसके लिए मनमानी कीमत देनी पड़ी। ऑक्सीजन सिलेंडर लगाने के बाद भी हालत में सुधार नहीं हो रहा था। इस बीच सूरज ने दम तोड़ दिया, जिसके बाद पुलिस को भी बुलाया गया और एंबुलेंस आई, लेकिन परेशानी यहीं खत्म नहीं हुई। उन्होंने बताया कि अंतिम संस्कार के लिए भी काफी भटकना पड़ा। मंगोलपुरी, पंजाबी बाग, पश्चिम पुरी में स्थित शवदाह स्थल भी गए। हर जगह लंबा इंतजार था, फिर किसी से सिफारिश करवाकर ख्याला के शवदाह में अंतिम संस्कार करवाया गया।

संपादकीय

अपने नेताओं से पूछना शुरू कीजिए

कोरोना की इस दूसरी लहर में देश के लगभग सभी जिलों की स्वास्थ्य सेवाएं चरमरा गई हैं। महामारी से निपटने के लिए जिन-जिन चीजों की दरकार होती है, उन सबमें कमी दिख रही है। फिर चाहे वे डॉक्टर हों, बेड, वेंटिलेटर, आईसीयू, दवाएं या फिर ऑक्सीजन। दुखद है कि अंतिम संस्कार के लिए भी लोगों को कतारों में खड़ा होना पड़ रहा है। हालांकि, यह भी सच है कि खास परिस्थितियों में मरीजों की संख्या में अप्रत्याशित बढ़ोतरी होने से स्वास्थ्य सेवाओं पर बोझ बढ़ना स्वाभाविक है। बहरहाल, पिछले एक वर्ष में चिकित्सा और स्वास्थ्यकर्मियों को हमने नायक की तरह सम्मानित किया, पर देश के विभिन्न हिस्सों से उनके साथ दुर्व्यवहार, धमकी, हमले और मार-पीट की भी खबरें आईं। करीब दो हफ्ते पहले ही सोशल मीडिया पर एक बड़े सरकारी अस्पताल के सीनियर डॉक्टर का वीडियो वायरल हुआ था, जिसमें उनके साथ सार्वजनिक तौर पर दुर्व्यवहार किया गया था। यह एक बड़े राज्य की राजधानी की घटना है। पता चला, जो लोग डॉक्टर से अभद्रता कर रहे थे, वे निर्वाचित जन-प्रतिनिधि थे, जबकि डॉक्टर पिछले एक साल से कोरोना के नोडल ऑफिसर। इस घटना के बाद उनके इस्तीफे और फिर से पदस्थापना की भी खबर आई। साफ है, यह महामारी हर मोर्चे पर देश के स्वास्थ्य तंत्र की परीक्षा ले रही है, और अपने गिरेबान में झांकने को कह रही है। हमें यह समझना होगा कि डॉक्टर व अन्य तमाम स्वास्थ्यकर्मी स्वास्थ्य सेवा मुहैया कराने के माध्यम भर हैं। अच्छी स्वास्थ्य सेवाएं तो निर्वाचित सरकारों के नीतिगत फैसलों और उन नीतियों पर प्रशासनिक मशीनरी व स्वास्थ्य क्षेत्र के प्रबंधकों के संजीदा अमल पर निर्भर करती हैं। विभिन्न स्तरों पर चुने गए प्रतिनिधि व सरकारें ही हैं, जो हर परिस्थिति में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराने के लिए जवाबदेह हैं। मगर असल में अग्रिम मोर्चे पर तैनात स्वास्थ्यकर्मी (डॉक्टर और नर्स) ही लोगों के गुस्से का निशाना बनते हैं। स्पष्ट है, विपरीत परिस्थितियों में भी अच्छी स्वास्थ्य सेवाएं तत्कालीन सरकार द्वारा लिए गए नीतिगत फैसलों और निचले तंत्र द्वारा उनके अमल पर निर्भर करती हैं। इसीलिए, चुने हुए जन-प्रतिनिधियों की भूमिका काफी अहम हो जाती है। स्वास्थ्य सुविधाएं तैयार करने संबंधी फैसले लेने (या नहीं लेने) के लिए वही उत्तरदायी हैं। वित्तीय संसाधनों को आवंटित करने उनका फैसला ही अस्पतालों या स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करता है। स्वास्थ्य कर्मियों की नियुक्ति और उनकी मौजूदगी भी सरकार की नीतियां तय करती हैं। इसलिए, किसी जिले, राज्य या देश में स्वास्थ्य सेवाएं कितनी अच्छी या बुरी हैं, यह अमूमन चुने हुए नेता और सरकारों की जवाबदेही है।

मगर अपने देश में सरकार स्वास्थ्य पर सकल घरेलू उत्पाद का बहुत कम हिस्सा, यानी सिर्फ 1.2 फीसदी (दुनिया में सबसे कम) खर्च करती है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, 2017 कहती है कि राज्य सरकारों को स्वास्थ्य क्षेत्र पर अपने बजट का आठ फीसदी खर्च करना चाहिए, मगर वे आज भी औसतन पांच प्रतिशत खर्च करती हैं। दुखद यह है कि 2001-02 से लेकर 2015-16 के बीच इसमें सिर्फ आधा फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। यह उदाहरण भर है कि स्वास्थ्य पर राज्य सरकारों के वायदे किस कदर अधूरे हैं। स्वास्थ्य सेवाओं में निजी क्षेत्र की हिस्सेदारी और लोगों का अपनी जेब से स्वास्थ्य-खर्च दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है, जो स्वास्थ्य में निवेश के सरकार के इरादों को बेपरदा करता है। देश के ज्यादातर राज्यों में चुने हुए नेताओं की सर्वोच्च प्राथमिकता में स्वास्थ्य नहीं है। पिछले कई वर्षों से यही प्रतीत होता रहा है कि सरकारों ने सेहत को लोगों की व्यक्तिगत जिम्मेदारी मान ली है। दिक्कत की बात यह है कि विपक्ष भी इस पर सवाल नहीं उठाता। यह मुद्दा जनादेश निर्धारित करने वाला कारक नहीं माना जाता। कोविड-19 के इस चरम में ही विधानसभा व पंचायतों के चुनाव हो रहे हैं, मगर स्वास्थ्य कोई मुद्दा नहीं है, जबकि इन चुनावों से लोगों की जान खतरे में डाली जा रही है। सवाल यह है कि अगर महामारी के समय भी स्वास्थ्य मुद्दा नहीं बनता, तो फिर भला कब यह चुनावी एजेंडा बनेगा? बहरहाल, कोरोना की इस दूसरी लहर ने मजबूत स्वास्थ्य सेवाओं के महत्व को उजागर किया है। अच्छी स्वास्थ्य सेवाओं का एक मापक यह है कि 3,000 से 10,000 की आबादी पर कम से कम एक डॉक्टर और नर्स के साथ बेहतर प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाएं लोगों को मिलें। मगर अपने यहां ग्रामीण इलाकों में यह सुविधा 25,000 की आबादी पर और शहरों में 50,000 की आबादी पर उपलब्ध है। इसका यह भी अर्थ है कि भारत आज जिन स्वास्थ्य चुनौतियों का मुकाबला कर रहा है, उसकी एक वजह यह है कि पिछले सात दशकों में स्वास्थ्य सेवाओं पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया। संविधान के मुताबिक, स्वास्थ्य राज्य का विषय है। यानी, स्वास्थ्य सेवाओं की ज्यादातर जिम्मेदारी राज्यों पर है। मगर इसका यह मतलब नहीं कि केंद्र सरकार इसके लिए जवाबदेह नहीं है। विशेषकर, स्वास्थ्य आपातकाल, महामारी जैसी परिस्थितियों में उसे ज्यादा जिम्मेदार बनाया गया है। देश का 74वां संविधान संशोधन कहता है कि नगर निगम और नगर पालिका जैसे स्थानीय शहरी निकायों का यह कर्तव्य है कि वे शहरी क्षेत्र में प्राथमिक व सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया कराएं। देखा जाए, तो स्वास्थ्य विभिन्न स्तरों पर हर निर्वाचित सदस्य की जिम्मेदारी है, फिर चाहे वे पंचायत प्रतिनिधि हों, पार्षद, विधायक या फिर सांसद। साफ है, देश के स्वास्थ्य तंत्र और सेवाओं को तुरंत मजबूत करने की जरूरत है, और यह तभी संभव होगा, जब लोग अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों से यह पूछना शुरू करेंगे कि आखिर किस तरह उन्होंने अपने क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं को सुधारा है? हमें आज से ही यह पूछना शुरू कर देना चाहिए। आप अपने पार्षद से यह पूछें कि क्या हर 10,000 की आबादी पर वार्ड में स्वास्थ्य सुविधाएं मौजूद हैं? विधायक, सांसद जैसे हर चुने हुए प्रतिनिधि से भी यही सवाल करें। इसी तरह से आप बतौर जिम्मेदार नागरिक देश के स्वास्थ्य तंत्र और इसकी सेवाओं को मजबूत बनाने में अपना योगदान दे सकते हैं। और, इसी तरह से भारत भी भविष्य में महामारियों से निपटने के लिए तैयार हो सकता है।

प्रवीण कुमार सिंह

कोरोना महामारी से लड़ाई में कहां हुई चूक, सामाजिक जिम्मेदारी का अभाव

इस बीच संक्रमित व्यक्ति कई और लोगों तक संक्रमण फैला चुका होता है। वैसे एक बात और है। जन स्वास्थ्य के जानकारों का कहना है कि संक्रमण के मामलों में 90 प्रतिशत से ज्यादा ऐसे मामले हैं, जिनका उपचार क्वारंटाइन करके घर में ही किया जा सकता है। दिलचस्प है कि जब तक लोग स्वस्थ रहे, तब तक उनमें से ज्यादातर लोग बिना मास्क के बेपरवाह घूमते रहे। कहते रहे कि कोरोना उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। लेकिन जैसे ही उन्हें संक्रमण की आशंका होती है, वही व्यक्ति अस्पतालों में बेड के चक्कर में अपनी पूरी सामाजिक और राजनीतिक ताकत झोंक देता है।

इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि कोरोना महामारी को लेकर लोगों में जागरूकता बढ़ी है। शायद ही कोई व्यक्ति होगा, जिसे यह पता नहीं होगा कि यह बीमारी कैसे फैलती है और किस तरह इस पर काबू पाया जा सकता है। आमतौर पर यह मान्यता रही है कि अशिक्षा और गरीबी बीमारियां बढ़ने की वजह है। यह माना जाता रहा है कि शिक्षित और समृद्ध समाज में छुआछूत आधारित बीमारियां कम पनपती हैं। लेकिन कोरोना ने इस अवधारणा को भी खत्म कर दिया है। शत-प्रतिशत साक्षरता वाला राज्य भी इस बीमारी की चपेट में है। उत्तर प्रदेश और बिहार की तुलना में ज्यादा शिक्षित और समृद्ध राज्य पंजाब और महाराष्ट्र में भी यह बीमारी पैर फैला रही है। मुंबई को तो कला और संस्कृति का शहर माना जाता है। देश की आर्थिक राजधानी तो वह है ही, ऐसे में वहां भी इस महामारी का फैलना यही साबित करता है कि कोरोना ने प्रचलित अवधारणाओं को खारिज किया है। जन स्वास्थ्य के जानकारों का मानना है कि इस रोग के प्रति जागरूकता का ही असर है कि इसके रोगियों की संख्या बढती जा रही है।

आज हर व्यक्ति जान गया है कि कोरोना एक ऐसी बीमारी है, जो संक्रमित व्यक्ति के नजदीक जाने, बिना मास्क के रहने आदि से फैलती है। लोग यह भी जान गए हैं कि इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है। ऐसे में यह सवाल उठना लाजमी है कि आखिर क्या वजह रही कि यह बीमारी लगातार बढ़ती चली गई। इसे समझने के लिए अपने देश के मानस के साथ ही मनुष्य की मूल प्रवृत्ति को समझना होगा। भारत में अपने टीका के विकसित होने की खबरें पिछले साल नवंबर से आने लगी थीं और दिसंबर से उनके सफल परीक्षण की कहानियां भी सामने आने लगी थीं। लोगों ने तभी से यह मानना शुरू कर दिया कि अब तो इस बीमारी पर विजय प्राप्त कर ली गई। इसके पहले

सितंबर से संक्रमण की संख्या में गिरावट का दौर था। ऐसे माहौल में भय तो कम हो ही रहा था, टीके के सफल परीक्षण की बात सामने आते ही लोगों ने मान लिया कि देश ने कोरोना के खिलाफ आधी लड़ाई जीत ली। इसके बाद तो लोगों ने अपनी मूल मनोवृत्ति यानी स्वाधीनता के मुताबिक काम करना शुरू कर दिया। लोगों के चेहरे से मास्क गायब होने लगे। सार्वजनिक जगहों पर जाने के बावजूद बेपरवाही बढ़ती चली गई।

इसी बीच देश में टीकाकरण आरंभ हो गया। एकाध अपवादों को छोड़ दें तो टीका ले चुके व्यक्तियों पर कोई दुष्प्रभाव नजर नहीं आया। इसका असर यह हुआ कि टीका केंद्रों पर लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। अब तक 11 करोड़ से ज्यादा लोगों का पहला डोज ले लेना भारत जैसे देश में बड़ी कामयाबी माना जाना चाहिए। बहरहाल इस टीकाकरण ने लोगों के अंदर थोड़ा-बहुत भी कोरोना बीमारी के लिए जो भय था, उसे खत्म कर दिया। सरकारों और सरकारी तंत्र को इस दौरान ज्यादा जिम्मेदारी दिखानी थी। लेकिन वह तंत्र अपनी कामयाबियों के ढोल पीटने में अधिक व्यस्त हो गया। इसका असर यह हुआ कि निचले स्तर पर जिस प्रशासन को सख्त रहना था, लोगों को अब भी अनुशासन में बांधे रखना था, वह सुस्त होता चला गया। लोगों ने तो खुद को सहस्त्रबाहु मान ही लिया था, निचले स्तर के प्रशासनिक तंत्र की ढिलाई ने उनकी इस सोच को बढ़ावा ही दिया। दिल्ली का ही उदाहरण लें। यहां की नागरिक सुरक्षा सेवा के जवान आम लोगों को मास्क पहनने के लिए मजबूर करने या भय दिखाने की बजाय व्यस्त सड़कों के चौराहों और लाल बत्तियों पर कारों में चलने वाले लोगों के मास्क पर नजर बनाए रखे। उनके बगल से पैदल या साइकिल से चलते लोग बिना मास्क के घूमते रहे। लेकिन सिविल डिफेंस के लोगों का ध्यान सिर्फ कार वालों पर रहा। विडंबना यह रही कि जिस सड़क या चौराहे के नजदीक सिविल डिफेंस के लोग कारों में चलने वाले अकेले या दो-तीन सवारों को मास्क पहना रहे थे, उसी चौराहे या सड़क के नजदीक के बाजार और कॉलोनियों के अंदर के ठेले-दुकानों, चाय-पान के ठीयों आदि पर बिना मास्क घूमते लोगों की ओर न तो सिविल डिफेंस के लोगों का ध्यान रहा और न ही उन्हें नियंत्रित करने वाले अधिकारियों का। दिल्ली-मुंबई हो या कोई अन्य स्थान, घनी बस्तियों के सब्जी बाजार, किराना की दुकानों के साथ ही अंदरूनी इलाकों, पार्कों आदि में अब भी लोग लगातार बिना मास्क के घूम रहे हैं। लेकिन प्रशासनिक तंत्र का ध्यान इनकी ओर अब भी नहीं है। भारतीय प्रशासनिक तंत्र की सोच में एक खामी है। वह अपनी चुस्ती उन इलाकों में ज्यादा दिखाता है, जहां से राजनीतिक नेतृत्व के लोग या आलाधिकारी रोजाना गुजरते हैं या जहां से उनका पाला ज्यादा होता है। सुदूर इलाकों में नियम-कानून का पालन कराना उनके लिए द्वितीयक काम होता है। जबकि वहां कानून का पालन कराना ज्यादा आसान होता है। केजरीवाल सरकार ने कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए रोजाना रात 10 बजे से सुबह छह बजे तक के लिए कफ्यरू का एलान किया है। दिलचस्प यह है कि मुख्य सड़कों पर तो रात 10 बजे तक दुकानें बंद करने और लोगों के जुटने पर प्रतिबंध लागू हो रहा है, लेकिन गली-मोहल्लों में अब भी दुकानें देर तक खुल रही हैं। वहां बिना मास्क के लोगों का आवागमन हो रहा है। माना जा सकता है कि या तो इलाकाई पुलिस इसे जानबूझकर अनदेखी कर रही है या फिर इन दुकानों को खुलने देने के लिए बदले में मोटी कमाई कर रही है।

जाहिर है कि जब दिल्ली जैसे इलाके में ऐसी स्थिति है, जो कोरोना के हॉटस्पॉट हो सकते हैं, उन जगहों पर कड़ाई नहीं है तो फिर कैसे कोरोना पर काबू पाया जा सकता है। प्रशासनिक तंत्र को इस परिधि से पार भी व्यवस्था लागू करने की व्यवस्था पर जोर देना होगा। अन्यथा मुख्य सड़कों पर बंदी दिखाने और घनी बस्तियों में बिना मास्क के चलने देने से कोरोना को रोका नहीं जा सकता।

भारत में अब भी स्वास्थ्य सेवाएं बहुत बेहतर स्थिति में नहीं हैं। देहाती इलाकों को छोड़िए, उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों के जिला मुख्यालयों तक में जांच के उचित केंद्र नहीं हैं। उदाहरण के लिए बलिया जैसी जगहों से जो सैंपल लिया जाता है, उन्हें जांच के लिए 130 किमी दूर आजमगढ़ या फिर 150 किमी दूर वाराणसी भेजा जाता है। वहां से जांच रिपोर्ट आने में तीन दिन का समय लगता है। इस बीच संक्रमित व्यक्ति कई और लोगों तक संक्रमण फैला चुका होता है। वैसे एक बात और है। जन स्वास्थ्य के जानकारों का कहना है कि संक्रमण के मामलों में 90 प्रतिशत से ज्यादा ऐसे मामले हैं, जिनका उपचार क्वारंटाइन करके घर में ही किया जा सकता है। दिलचस्प है कि जब तक लोग स्वस्थ रहे, तब तक उनमें से ज्यादातर लोग बिना मास्क के बेपरवाह घूमते रहे। कहते रहे कि कोरोना उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। लेकिन जैसे ही उन्हें संक्रमण की आशंका होती है, वही व्यक्ति अस्पतालों में बेड के चक्कर में अपनी पूरी सामाजिक और राजनीतिक ताकत झोंक देता है। जानकारों का मानना है कि इस वजह से भी अस्पतालों में रोगियों की संख्या बढ़ी है और बेड की कमी हुई है।

यह बिडंबना ही कही जाएगी कि जब पिछले साल कोरोना का प्रसार बढ़ रहा था, तब प्रधानमंत्री द्वारा लगाए गए कड़े लॉकडाउन का इंटरनेट मीडिया पर विरोध होने के साथ विपक्ष ने भी मुद्दा बनाया।

बाजार की जरूरतों के अनुरूप कंप्यूटर शिक्षा मिलने से नौकरियों के बढ़ेंगे अवसर

पिछली सदी के आखिरी दशक में कंप्यूटर शिक्षा को स्कूल की शिक्षा का अंग बनाया गया। परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में इस सदी के आरंभिक दौर में ही भारतीय परचम लहराने लगा। इससे मध्यवर्गीय सफलता की कई कहानियां बनीं। पर सफलता की ये कहानियां लंबे समय तक जारी नहीं रह सकीं। इन दिनों भारत की एप इकोनॉमी बहुत तेजी से बढ़ रही है, जबकि चीन राजस्व और उपभोग के मामले में दुनिया का सबसे बड़ा बाजार बना हुआ है। वहीं अमेरिकी कंपनियां एप निर्माण के मामले में शायद सबसे ज्यादा इनोवेटिव (नवोन्मेषी) हैं। भारत सबसे ज्यादा प्रति माह एप इंस्टॉल करने और उसका प्रयोग करने के मामले में अव्वल है। भारतीय एप परिदृश्य का नेतृत्व दो दिग्गज टेलीकॉम करती हैं। यद्यपि स्ट्रीमिंग कंपनियां जैसे नोवी डिजिटल व जिओ सावन समेत पेटीएम, फोन पे और फ्लिपकार्ट जैसी ई-कॉमर्स वेबसाइट्स ने स्वयं को वैश्विक परिदृश्य पर भी स्थापित किया है। फोर्टी टू मैटर्स डॉट कॉम के मुताबिक गूगल प्ले स्टोर पर करीब 8,82,939 एप पब्लिशर्स में से 24,359 भारतीय हैं। कुछ बड़े भारतीय एप पब्लिशर्स में गेमेशन टेक्नोलॉजी, वर्डस मोबाइल, मूटोन, मिलीयन गेम्स, एआइ फैक्ट्री जैसे नाम शामिल हैं। गूगल प्ले स्टोर्स में उपलब्ध सभी एप पब्लिशर्स में से मात्र तीन प्रतिशत ही भारतीय हैं। वहीं गूगल प्ले स्टोर पर लगभग 29.4 लाख एप हैं जिसमें भारतीय एप की संख्या 1.22 लाख है जो प्ले स्टोर पर कुल उपलब्ध एप्स का मात्र चार प्रतिशत है।

आंकड़ों के नजरिये से देश में उपभोक्ताओं की उपलब्धता के हिसाब से भारतीय एप की संख्या बहुत कम है। वैश्विक परिदृश्य में आंकड़ों के विश्लेषण से कई रोचक तथ्य सामने आते हैं जैसे प्ले स्टोर्स पर उपलब्ध कुल भारतीय एप पब्लिशर्स की औसत रेटिंग पांच में से 3.65 है जो प्ले स्टोर पर सभी पब्लिशर्स की औसत रेटिंग 3.22 से बेहतर है। उसी तरह प्ले स्टोर पर भारतीय एप की औसत रेटिंग 1,874 है जबकि प्ले स्टोर पर उपलब्ध सभी एप की औसत रेटिंग 1,112 से ज्यादा है। आंकड़ों की दुनिया से दूर आखिर भारतीय एप वैश्विक स्तर पर सफल क्यों नहीं हैं?

भारत में सूचना प्रौद्योगिकी का बाजार करीब 150 अरब डॉलर का है जो भारत के कुल सकल घरेलू उत्पाद का 9.5 प्रतिशत है। अर्थव्यवस्था को इतना महत्वपूर्ण योगदान देने वाला क्षेत्र आज उत्पादकता के लिहाज से इसलिए पिछड़ रहा है, क्योंकि भारत की कंप्यूटर शिक्षा में नवोन्मेष की भारी कमी है और यह बाजार की मांग के हिसाब से खासी पिछड़ी हुई है। तकनीक पर बढ़ती इस निर्भरता को अनवरत और लाभ उठाने वाला तभी बनाया जा सकता है, जब सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षा का अभ्यास कॉलेज और स्कूली स्तर पर ज्यादा अद्यतन तरीके से कराया जाए। स्कूल स्तर पर कंप्यूटर शिक्षा दो तरह की समस्याओं का शिकार है। पहला, स्कूलों में अभी भी फोकस एमएस वर्ड, एक्सेल, पावर प्वाइंट आदि पर है।

दूसरा, कंप्यूटर की प्राथमिक भाषाओं को सिखाने में सारा जोर बेसिक और लोगो पर है। एक समय की अग्रणी कंप्यूटर भाषाएं जैसे सी, लोगो, पास्कल, कोबोल, बेसिक, जावा अब चलन से बाहर हैं, पर अभी भी पाठ्यक्रम का हिस्सा हैं, जबकि कंप्यूटर प्रौद्योगिकी में अग्रणी देश ओपेन सोर्स सोफ्टवेयर और ओपन सोर्स लैंग्वेज को अपना चुके हैं जैसे आर, पायथॉन, रूबी ऑन रेल, लिस्प, टाइप स्क्रिप्ट, कोटलिन, स्विफ्ट और रस्ट इत्यादि। ये भाषाएं सी, लोगो, पास्कल, कोबोल बेसिक, जावा के मुकाबले ज्यादा संक्षिप्त, सहज और सरल हैं। इन भाषाओं के प्रयोग से किसी भी काम को कल्पना से व्यवहार में बड़ी आसानी से लाया जा सकता है। ये भाषाएं ही हैं जिनसे एक कोड का निर्माण कर किसी भी काम को करने के लिए सॉफ्टवेयर का निर्माण किया जाता है। ये भाषाएं उन क्षेत्रों में ज्यादा काम की हैं जो आजकल बहुत मांग में हैं जैसे आर्टिफिशयल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स आदि।

भविष्य की दुनिया तकनीक और ऑटोमेशन की है जहां सभी प्रकार के उद्योग धंधे और व्यवसाय सॉफ्टवेयर आधारित होंगे। आज हर उद्योग किसी न किसी रूप में आइटी की सहायता से चल रहा है। वह चाहे निर्माण, परिचालन या लेखा हो, सभी कंप्यूटरीकृत हो रहे हैं। अब कंप्यूटर कौशल और उसकी भाषाएं आधारभूत जरूरतें हैं। कंप्यूटर की उच्च शिक्षा का और भी बुरा हाल है। शिक्षण संस्थान प्रायोगिक कार्य और वास्तविक कोड निर्माण नहीं करवा पा रहे हैं, इसलिए जब कोई कंप्यूटर स्नातक किसी नौकरी में आता है तो उसे अपनी कंपनी में इन कार्यो को सीखना पड़ता है।

वर्ष 2011 में आई नैसकॉम की एक रिपोर्ट के अनुसार देश के 25 प्रतिशत आइटी स्नातक ही रोजगार के लायक थे, पर छह साल बाद स्थिति और खराब हुई। एस्पायरिंग माइंड स्टडी की एक रिपोर्ट स्थिति की गंभीरता की ओर इशारा करती है। रिपोर्ट के अनुसार भारत के पांच प्रतिशत कंप्यूटर इंजीनियर ही उच्च स्तर की प्रोग्रामिंग के लिए उपयुक्त हैं। यह रिपोर्ट तब आई है जब ग्राहकों की मांग लगातार बढ़ रही है। तेजी से डिजिटल होते भारत में रोजगार के नए क्षेत्र तेजी से ऑनलाइन दुनिया में प्रवेश कर रहे हैं।

नई-नई तकनीक और तकनीकी नवोन्मेष को भारतीय कौशल की विचार शक्ति में लाने के लिए ज्यादा मुक्त और उन्नत कंप्यूटर शिक्षा की तरफ बढ़ना ही एकमात्र समाधान है अन्यथा एक वक्त में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अगुआ बनकर उभरे भारत के लिए प्रतिस्पर्धा के बाजार में टिकना संभव नहीं होगा।

अनाज ही नहीं, टीका भी मिले मुफ्त

चुनाव आयोग की चूक

मद्रास हाईकोर्ट ने देश में कोरोना की विनाशकारी दूसरी लहर के मद्देनजर चुनाव आयोग द्वारा विधानसभा चुनावों के प्रचार के दौरान बरती गई ढिलाई के लिए उसे कड़ी फटकार लगाते हुए यहां तक कह दिया कि आयोग के अधिकारियों पर संभवत~ हत्या का मुकदमा चलना चाहिए। हत्या के मुकदमे वाली बात को अदालत की अत्यधिक नाराजगी का संकेत मान लिया जाए तो भी इसमें दो राय नहीं कि कोरोना की दूसरी लहर की गंभीरता को समझने में चुनाव आयोग से चूक हुई है। वह चुनावी रैलियों में उमड़ती भीड़ और उनमें कोरोना प्रोटोकॉल की अनदेखी को समय रहते रोकने का अपना दायित्व पूरी तरह से नहीं निभा पाया। वैसे, आयोग ने कहा कि उसने चुनाव प्रचार के दौरान कोरोना प्रोटोकॉल पर अमल कराने की पूरी कोशिश की। लेकिन हकीकत उसके दावे से मेल नहीं खाते। तथ्य यह है कि कोरोना की दूसरी लहर की चर्चा पहले चरण की वोटिंग शुरू होने से पहले से ही होने लगी थी। फिर भी पहले चरण का वोट पड़ने के ठीक बाद यानी 28 मार्च को नए मरीजों की संख्या करीब 62 हजार थी। उसके बाद इसमें जिस तेजी से इजाफा हुआ वह किसी का भी ध्यान खींचने के लिए काफी था।

अगले ही चरण यानी 1 अप्रैल की वोटिंग के दिन यह संख्या बढ़कर 81,466 हुई और 6 अप्रैल तक 1,15,736 हो गई। इस दिन असम, केरल, तमिलनाडु और पुडुचेरी में वोटिंग समाप्त हो गई। अब सिर्फ पश्चिम बंगाल में पांच चरणों की वोटिंग बाकी रह गई थी। सभी पार्टियों का जोर इसी राज्य पर आ गया और यहां बड़ी-बड़ी रैलियां आयोजित करने की होड़ चलती रही। इस बीच हर फेज की वोटिंग तक नए केसों की संख्या बढ़ती जा रही थी। 10 अप्रैल को यह संख्या डेढ़ लाख के पार हुई तो 16 अप्रैल को ढाई लाख से ऊपर हो गई। मीडिया में चुनाव रैलियों पर रोक लगाने की जरूरत लगातार बताई जा रही थी।

यहां तक कि लेफ्ट फ्रंट और कांग्रेस ने अपनी तरफ से कोरोना संक्रमण के मद्देनजर राज्य में बड़ी रैलियां न करने का ऐलान कर दिया। लेकिन चुनाव आयोग ने रोड शो और बड़ी रैलियों पर रोक लगाने की घोषणा 22 तारीख को की, जब खुद प्रधानमंत्री ने कोरोना संबंधी बैठकों की वजह से पश्चिम बंगाल का चुनावी दौरा रद्द कर दिया। तब तक रोजाना नए मामलों की संख्या बढ़कर 3,32,921 हो चुकी थी। चुनाव आयोग एक जिम्मेदार संस्था है। इसलिए उससे समय रहते इस गलती को सुधारने की उम्मीद थी। उसने आखिरकार बड़ी रैलियों पर रोक लगाई भी, लेकिन देर से। उम्मीद की जानी चाहिए कि चुनाव आयोग ही नहीं अन्य तमाम एजेंसियां भी इस उदाहरण से सबक लेंगी और अपना संवैधानिक और कानूनी दायित्व पूरा करने में किसी तरह की सुस्ती या उदासीनता के लिए कोई गुंजाइश नहीं छोड़ेंगी।

बेकाबू न होने पाए कोरोना की दूसरी लहर, बचने के लिए सावधानी बरतने के अलावा और कोई आसान उपाय नहीं

अगर कोरोना की दूसरी लहर से बचना है तो पहले से ज्यादा सावधानी बरतने के अलावा और कोई आसान उपाय नहीं। कोरोना की दूसरी लहर इतनी घातक नहीं होती, यदि लोगों ने मास्क लगाने और शारीरिक दूरी के पालन के प्रति सर्तकता बरती होती। यदि हर नागरिक यह ठान ले कि वह बेवजह बाहर नहीं निकलेगा और मास्क लगाने के साथ शारीरिक दूरी का ध्यान रखने के साथ अपनी सेहत की परवाह करेगा तो हालात बदले जा सकते हैं। राज्य सरकारों की ओर से रात के कर्फ्यू लगाने जैसे जो कदम उठाए जा रहे हैं, वे लोगों के लिए चेतावनी हैं। इस चेतावनी को समझा जाना चाहिए। इसी के साथ यह भी समझा जाना चाहिए कि यदि हालात नहीं सुधरे तो मजबूरी में लॉकडाउन लगाना पड़ सकता है। अगर ऐसा हुआ तो आम आदमी की मुश्किलें और बढ़ेंगी।

कोरोना वायरस से उपजी महामारी कोविड-19 की दूसरी लहर ने भारत को झकझोर कर रख दिया है। नए साल के आगमन पर भारतीयों को लग रहा था कि महामारी से राहत मिल गई है। फरवरी आते-आते तक आम जनता से लेकर नेता-नौकरशाह और यहां तक कि तमाम डॉक्टर भी यह मानने लगे कि महामारी की व्यापकता से भारत ने पार पा लिया है। जब देश कोरोना काल से पहले की स्थिति बहाल होता हुआ देख रहा था, तब संक्रमण ने नए सिरे से सिर उठाना शुरू कर दिया और देखते-देखते ही प्रतिदिन कोरोना मरीजों की संख्या दो लाख के आंकड़े को पार कर गई।

आज हालत यह है कि बड़े शहरों में भी कोरोना मरीजों को न तो अस्पताल में बेड मिल रहे हैं, न वेंटीलेटर। ऑक्सीजन और जरूरी दवाओं का भी अभाव देखने को मिल रहा है। कोरोना से होने वाली मौतों के कारण श्मशान गृहों और कब्रिस्तान में शवों के आने का सिलसिला टूट नहीं रहा है। यदि चरमारते स्वास्थ्य ढांचे को संभाला नहीं गया तो हालात और अधिक बेकाबू हो सकते हैं।कोविड महामारी ने बीते साल के आरंभ में ही भारत में दस्तक दे दी थी। मार्च में जब कोरोना के करीब पांच सौ मरीज ही थे, तभी लॉकडाउन लगा दिया गया था। यह संपूर्ण लॉकडाउन मई तक चला, फिर धीरे-धीरे रियायत दी जाने लगी। इससे लोगों की आवाजाही बढ़ने लगी और आर्थिक-व्यापारिक गतिविधियां भी चलने लगीं। हालांकि इस दौरान भी कोरोना मरीज बढ़ते रहे, लेकिन स्वास्थ्य ढांचे पर जो दबाव आया, उस पर थोड़ी मुश्किलों के बाद काबू पा लिया गया। परिणाम यह हुआ कि लोगों ने बाजार जाना शुरू कर दिया और स्कूल-कॉलेज,

सिनेमाहॉल भी खुलने लगे। हालांकि यह वह दौर था, जब यूरोप, अमेरिका आदि कोरोना की दूसरी-तीसरी लहर से दो-चार हो रहे थे, फिर भी भारत में किसी ने यह नहीं सोचा कि ऐसा यहां भी हो सकता है। आम जनता, नेताओं और नौकरशाहों न सही, स्वास्थ्य क्षेत्र के विशेषज्ञों को तो यह पता होना ही चाहिए था कि कोरोना की दूसरी लहर आ सकती है और वह पहली से घातक हो सकती है। आखिर उन्होंने देश को और खासकर सरकारी-गैर सरकारी स्वास्थ्य तंत्र के लोगों को आगाह क्यों नहीं किया? वे तो देश के साथ दुनिया में कोरोना के हालात की निगरानी कर रहे थे। आखिर उनसे चूक कैसे हो गई?

कोरोना की दूसरी लहर तेज होने के पीछे एक वजह तो लोगों की ओर से पर्याप्त सावधानी न बरतना है और दूसरी, कोरोना वायरस के प्रतिरूप पैदा हो जाना। कोरोना के बदले रूप कहीं अधिक तेजी से संक्रमण फैलाने के साथ अपेक्षाकृत कम आयु वालों को भी अपनी चपेट में ले रहे हैं। कोरोना के बदले हुए जो प्रतिरूप ब्रिटेन, दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील आदि में पनपे, वे भारत भी आ चुके हैं। यह भी स्पष्ट है कि कोरोना वायरस के कुछ प्रतिरूप भारत में पनप गए हैं। ये ब्रिटेन, दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील आदि से आए कोरोना प्रतिरूप के नए प्रतिरूप यानी डबल वेरिएंट भी हो सकते हैं। फिलहाल कहना कठिन है कि कोरोना वायरस का कौन सा प्रतिरूप कितना घातक साबित हो रहा है, लेकिन इसमें दो राय नहीं कि उन पर लगाम लगती नहीं दिख रही है। भारत में अब तक स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं सफाई कर्मियों के साथ 45 साल से ऊपर के 12 करोड़ से अधिक लोगों का टीकाकरण हो चुका है। यह एक बड़ी संख्या है, लेकिन भारत की बड़ी आबादी को देखते हुए कम है। यद्यपि कोवैक्सीन और कोविशील्ड के बाद रूस में बनी वैक्सीन स्पुतनिक को भी हरी झंडी देने के साथ कुछ अन्य वैक्सीन के लिए रास्ता साफ कर दिया गया है, लेकिन उनके भारत में बनने या आयात होने में समय लगेगा। यह ध्यान रहे कि कई राज्यों ने कोरोना वैक्सीन की कमी की बात कही है। चूंकि भारत एक युवा आबादी वाला देश है, इसलिए आवश्यकता इसकी भी है कि 45 साल से कम आयु वालों का भी टीकाकरण शुरू हो। जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक सभी को सावधानी बरतनी होगी, क्योंकि जहां टीके की दूसरी खुराक के 10-12 दिन बाद ही शरीर प्रतिरोधक क्षमता से अच्छी तरह लैस हो पाता है, वहीं कोरोना वायरस के बदले प्रतिरूप हवा के जरिये फैलने लगे हैं।

कोरोना की दूसरी लहर के कारण त्राहिमाम की जो स्थिति है, उसकी अनदेखी किसी को भी नहीं करनी चाहिए। शायद इसी कारण प्रधानमंत्री ने कुंभ मेले को प्रतीकात्मक तौर पर मनाने की अपील की है। इस अपील पर सभी को गौर करना चाहिए। जैसे पिछले साल सभी समुदायों के लोगों ने अपने पर्व-त्योहार संयम से मनाए थे, वैसे ही इस बार भी करना होगा। इन दिनों सरकार स्वास्थ्य क्षेत्र की हर समस्या का समाधान करने के लिए तत्परता दिखा रही है। वह टीका उत्पादन क्षमता बढ़ाने के साथ आक्सीजन आपूर्ति की व्यवस्था मजबूत कर रही है, लेकिन इसके बावजूद न तो अस्पतालों पर दवाब कम होने वाला है और न ही स्वास्थ्य क्षेत्र की कमियों से तत्काल छुटकारा मिलने वाला है।

इन कमियों से पार पाने के लिए स्वास्थ्य क्षेत्र के लोगों को कमर कसनी होगी और केंद्र एवं राज्य सरकारों को यह देखना होगा कि स्वास्थ्य क्षेत्र की जरूरतें प्राथमिकता के आधार पर पूरी हों। यह समय राजनीतिक रोटियां सेंकने का नहीं, लेकिन कुछ नेता और खासकर राहुल गांधी यही करने में लगे हुए हैं। यदि उनके पास समस्या के समाधान का कोई कारगर उपाय नहीं तो बेहतर होगा कि वह सरकार की खिल्ली उड़ाने से बाज आएं। कम से कम उन्हें मुश्किल हालात से आनंदित होने का आभास तो नहीं ही कराना चाहिए।अगर कोरोना की दूसरी लहर से बचना है तो पहले से ज्यादा सावधानी बरतने के अलावा और कोई आसान उपाय नहीं। कोरोना की दूसरी लहर इतनी घातक नहीं होती, यदि लोगों ने मास्क लगाने और शारीरिक दूरी के पालन के प्रति सर्तकता बरती होती। यदि हर नागरिक यह ठान ले कि वह बेवजह बाहर नहीं निकलेगा और मास्क लगाने के साथ शारीरिक दूरी का ध्यान रखने के साथ अपनी सेहत की परवाह करेगा तो हालात बदले जा सकते हैं। राज्य सरकारों की ओर से रात के कर्फ्यू लगाने जैसे जो कदम उठाए जा रहे हैं, वे लोगों के लिए चेतावनी हैं। इस चेतावनी को समझा जाना चाहिए। इसी के साथ यह भी समझा जाना चाहिए कि यदि हालात नहीं सुधरे तो मजबूरी में लॉकडाउन लगाना पड़ सकता है। अगर ऐसा हुआ तो आम आदमी की मुश्किलें और बढ़ेंगी।

गौरवशाली भारत के स्वामी प्रकाशक एवं मुद्रक प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं, दिल्ली.... से मुद्रित एवं, ब्लॉक नं. 23 मकान नं. 399 त्रिलोकपुरी दिल्ली....91 से प्रकाशित संपादक -प्रवीण कुमार सिंह टेलीफोन नं. 011.22786172 फैक्स नं. 011.22786172
RNI, No. DELHIN383334, E-mail: gauravashalibarat@gmail.com इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के पीआरबी एट के तहत

राजस्थान में ऑक्सीजन की कमी से 10 मरीजों ने दम तोड़ा

जयपुर, (एजेंसी)। राजस्थान में ऑक्सीजन और बेड की कमी के चलते हालात बेकाबू हो रहे हैं। ऑक्सीजन की कमी के चलते जयपुर, बीकानेर, कोटा में 10 मरीजों ने दम तोड़ दिया। जयपुर के एक निजी अस्पताल में मंगलवार रात ऑक्सीजन सिलेंडर खत्म होने से 4 मरीजों की मौत हो गई। कोटा और बीकानेर में भी ऑक्सीजन के कमी के कारण 6 मरीजों की जान गई। राज्य में एक सप्ताह के अंदर 1.07 लाख से ज्यादा केस सामने आए हैं। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, 599 लोगों की मौत हुई है। केसों की संख्या तेजी से बढे की वजह से अस्पतालों में बेड की कमी भी बढ़ती जा रही है।

राजस्थान में कोरोना के पिछले 24 घंटे के अंदर 16 हजार 89 केस मिले हैं। पहली बार 121 मरीजों की एक दिन में मौत हुई है।

27 दिनों में कोरोना के 2.13 लाख नए केस मिल चुके हैं। राजधानी जयपुर में रिकॉर्ड 3 हजार 289 संक्रमित मिले और 21 मरीजों की मौत हुई है। जयपुर के आदर्श नगर श्मशान घाट की स्थिति ये है कि कोरोना संक्रमितों का अंतिम संस्कार करने के लिए जगह नहीं बची। शव लेकर पहुंची एंबुलेंस को इंतजार करना पड़ रहा है। जयपुर में कोरोना के बढ़ते केसों के कारण सभी अस्पतालों में बेड्स फुल हो गए। प्रदेश के सबसे बड़े कोविड केयर अस्पताल में मंगलवार को बेड्स उपलब्ध नहीं होने के बाद लोगों रोकने के लिए गेट बंद करना पड़ गया।

अमरिंदर ने सिद्धू को उनके खिलाफ चुनाव लड़ने की चुनौती दी

चंडीगढ़, (एजेंसी)। पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने पूर्व मंत्री नवजोत सिंह सिद्धू को पटियाला से उनके खिलाफ चुनाव लडे की चुनौती दी। उन्होंने एक बयान जारी कर साफ किया कि पार्टी में अनुशासनहीनता किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी। पंजाब में अगले साल विधानसभा चुनाव होने हैं।

अमरिंदर ने कहा कि अगर नवजोत सिंह सिद्धू उनके खिलाफ चुनाव लडा चाहते हैं तो वह ऐसा करने के लिए आजाद हैं। उनका नसीब भी जनरल जेजे सिंह की तरह हो जाएगा। जनरल सिंह पिछले चुनाव में शिरोमणि अकाली दल की टिकट पर अमरिंदर के खिलाफ लड़े थे, लेकिन उनकी जमानत जब्त हो गई थी। अमरिंदर ने कहा कि नवजोत सिंह सिद्धू साफ करें कि वह कांग्रेस के सदस्य हैं या नहीं। अगर है, तो मुख्यमंत्री और सरकार के खिलाफ उनकी लगातार बयानबाजी अनुशासनहीनता मानी जाएगी। अमरिंदर सिंह ने कहा कि कांग्रेस के असंतुष्ट धड़े को अपना पक्ष चुन लेना चाहिए, क्योंकि वह पार्टी का अनुशासन तोडे में लगे हुए हैं। भाजपा उन्हें वापस नहीं ले जाएगी। जहां तक शिरोमणि अकाली दल का संबंध है, वे भी उनसे चिढ़े हुए हैं। मुख्यमंत्री ने पंजाब प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष सुनील जाखड़ की भी सराहना की और कहा कि उनके बाद वह अच्छा काम कर रहे हैं और अपनी जिम्मेदारी अच्छी तरह निभा रहे हैं। इसलिए सिद्धू के सुनील जाखड़ की जगह नियुक्त होने का कोई सवाल ही नहीं है।

बुधवार को सिद्धू ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट से कांग्रेस का नाम हटा दिया था। साथ ही उन्होंने कैप्टन अमरिंदर सिंह के खिलाफ मोर्चा भी खोल दिया। सिद्धू ने कोटकपूरा और बहिबल कलां फायरिंग मामले में एसआईटी की जांच रद्द होने पर बिना नाम लिए कैप्टन पर तंज कसा। सिद्धू ने सोशल मीडिया पर लिखा कि हम तो डूबेंगे सनम, तुम्हें भी ले डूबेंगे। उन्होंने लिखा है कि यह सरकार या पार्टी की नाकामी नहीं है, बल्कि एक आदमी है, जिसने दोषियों से हाथ मिला रखा है।

मुठभेड़ में मारा गया एक लाख का इनामी बदमाश

लखनऊ, (एजेंसी)। बिहार और उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में आतंक का पर्याय बना एक लाख रुपए का इनामी बदमाश लालू यादव बुधवार तड़के मऊ जिले में पुलिस से मुठभेड़ में मारा गया। अपर पुलिस महानिदेशक (कानून-व्यवस्था) प्रशांत कुमार ने बताया कि सूचना मिलने पर पुलिस ने बदमाश लालू यादव का तड़के करीब साढ़े तीन बजे मऊ जिले के सराय लखंसी क्षेत्र स्थित भंवरेपुर के पास घेराव किया था। इस दौरान हुई मुठभेड़ में लालू यादव घायल हो गया। उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

उन्होंने बताया कि मुठभेड़ के दौरान चिरैयाकोट थाना अध्यक्ष अविनाश कुमार सिंह, इंस्पेक्टर राजेश प्रसाद यादव, उपनिरीक्षक अमित मिश्रा और कॉन्स्टेबल विवेक सिंह पर गोली चलाई गई, लेकिन बुलेट प्रूफ जैकेट पहने होने की वजह वे सभी बच गए। कुमार ने बताया कि पुलिस ने मौके से एक पिस्तौल कुछ कारतूस और मोटरसाइकिल बरामद की है।

गौरतलब है कि एक लाख रुपए इनामी बदमाश लालू यादव का बिहार और उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में खासा आतंक था। उस पर मऊ जिले में आरटीआई कार्यकर्ता बाल गोविंद सिंह की हत्या के साथ-साथ हत्या के प्रयास और जौनपुर में दो करोड़ रुपए की डकैती तथा एक सुरक्षाकर्मी की हत्या कर 25 लाख रुपए लूटने समेत कुल 82 मुकदमे दर्ज थे।

यूपी में कोरोना से मचा हाहाकार, ऑक्सीजन-बेड्स के लिए मारामारी, कई जगह हास्पिटल स्टाफ से मारपीट

लखनऊ, (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में कोरोना का संक्रमण लगातार बढ़ता ही जा रहा है। कोरोना से संक्रमित मरीजों की संख्या बढ़ने की वजह से अस्पतालों पर दबाव बढ़ता जा रहा है। किसी अस्पताल में बेड नहीं है, तो किसी में ऑक्सीजन की कमी है। मरीजों के परिजनों को ऑक्सीजन के लिए दर-दर भटकना पड़ रहा है। वहीं, कई शहरों में अस्पताल की लापरवाहियां भी सामने आई हैं, जिसके बाद परिजनों का गुस्सा फूट रहा है और चिकित्सा कर्मियों के साथ मारपीट की घटनाएं सामने आ रही हैं।

उत्तर प्रदेश के वाराणसी में कोविड के प्रकोप के कारण अस्पतालों की व्यवस्था बिगड़ गई है। रोहनिया क्षेत्र में जब निजी अस्पताल ने लापरवाही की हद पार कर दी, तो गुस्साए परिजनों ने अस्पताल में जमकर तोड़फोड़ की। इस दौरान मरीज की मौत हो गई। रोहनिया के बच्छाव इलाके में निजी अस्पताल में जब डॉक्टर, स्टाफ गायब दिखे तो परिजनों ने इस पर आपत्ति दर्ज की। परिजनों ने आरोप लगाया कि अस्पताल ने मरीज को भर्ती तो कर लिया है, लेकिन उसकी देखभाल नहीं हो रही है। रोते-बिलखती महिला ने बताया कि अस्पताल में कोई मरीज को दवा देने वाला भी नहीं है। इस दौरान एक मरीज की तबीयत बिगड़ गई और बाद में उसकी मौत हो गई। इस अस्पताल को कुछ दिन पहले जिलाधिकारी ने रेमेडेसिविर इंजेक्शन के लिए नोटिस जारी किया था।

इटावा के अस्पतालों में कोविड मरीजों की संख्या बढ़ रही है लेकिन अव्यवस्थाएं दूर नहीं की जा सकी हैं। हाल ही में एक महिला की मौत के बाद परिजनों का गुस्सा फूट पड़ा। उसने कोविड अस्पताल के आइसोलेशन सेंटर में तोड़फोड़ कर की और डॉक्टर तथा अन्य स्वास्थ्यकर्मियों के साथ मारपीट भी की । परिजनों का आरोप है कि अस्पताल स्टाफ की लापरवाही से उनके मरीज की मौत हो गई। वे खुद ऑक्सीजन सिलेंडर का प्रबंध कर रहे हैं और डाक्टरों के पास मरीज को देखने का समय नहीं है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) ने कहा कि जिले में आक्सीजन की कमी नहीं है। मरीजों के परिजनों ने कहा कि यहां चार-चार दिन से मरीज भर्ती है, लेकिन कोई देखने वाला नहीं है। ऑक्सीजन की व्यवस्था नहीं है और वेंटिलेटर भी काम नहीं कर रहे हैं, जिसके कारण लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ रही है। लोगों ने दावा किया कि बीते दिन 5 लोगों की मौत हुई हैं। परिजनों के हंगामे की वजह से जब हालात बिगड़ने लगे, तो पुलिस को बुलाया गया तब स्थिति नियंत्रित हो सकी। वाराणसी, इटावा के अलावा फरुर्खाबाद, मुरादाबाद, मेरठ समेत अन्य कई शहरों से भी ऑक्सीजन की कमी की वजह से लोग परेशान हैं। मरीजों के लिहाज से बेड्स उपलब्ध नहीं हैं और कुछ मामलों में डॉक्टरों की लापरवाही की रिपोर्ट सामने आई है। फरुर्खाबाद का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें परिजन मरीज के लिए ऑक्सीजन की मांग कर रहे हैं, क्योंकि ऑक्सीजन लगातार कम होता जा रहा है।

अस्पताल में लगी आग, 4 की मौत

मुंबई, (एजेंसी)। मुंबई में एक निजी अस्पताल में आग लग जाने से उसमें जलकर चार लोगों की मौत हो गई। यह घटना महाराष्ट्र के ठाणे के मुंब्रा इलाके में आज (बुधवार) तड़के 3:40 बजे हुई। अस्पताल का नाम प्राइम क्रिटिकेयर अस्पताल में बताया जा रहा है। इस आगजनी में आईसीयू में भर्ती 4 मरीजों की मौत हो गई। घटना के बाद विधायक और मंत्री जितेंद्र आव्हाड ने भी घटनास्थल का दौरा किया। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने इस हादसे में मारे गए लोगों के परिजनों को 5 लाख रुपए मुआवजा और घायलों को एक लाख रुपए मुआवजा देना का ऐलान किया है। बताया जा रहा है कि हादसे के वक्त आईसीयू में आठ मरीज एडमिट थे। दमकल और बचाव वाहन ने आग पर काबू पा लिया है।

दर्द निवारक दवाओं से और बिगड़ सकता है रोगी का स्वास्थ्य : आईसीएमआर

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) का दावा है कि देश मे 80 फीसदी कोविड-19 मरीजों में बेहद सामान्य लक्षण जैसे बुखार, गले में दर्द और खांसी नजर आ रहे हैं। यह श्वसन प्रणाली में सामान्य संक्रमण के लक्षण हैं और यह मरीज पूरी तरह ठीक हो जा रहे हैं। इसके साथ ही चेताया है कि आईब्रूफेन और इस प्रकार की अन्य दर्द निवारक दवाएं रोगी की सेहत और बिगाड़ सकती हैं। इनकी वजह से हार्ट फेल होने और किडनी क्षतिग्रस्त होने के खतरे बढ़ते हैं।

आईसीएमआर ने सुझाव देते हुए कहा, जरूरत हो तभी पैरासिटामोल जैसी दवा लें। नॉन स्टेरॉयड एन्टी इंफ्लेमेट्री कही जाने वाली दवाओं को आईसीएमआर ने घातक बताया है। आईसीएमआर ने अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न नामक शृंखला में मरीजों के प्रश्नों का जवाब दिया है। ब्लड प्रेशर की दवाओं से कोविड-19 की गंभीरता बढ़ने का कोई साक्ष्य नहीं मिला है। यह दवाएं हार्ट फेल होने से रोकने में काम आती हैं, हृदय को काम करने में साथ देती हैं और उच्च रक्तचाप नियंत्रित रखती है। मरीज अगर खुद ही इनका उपयोग रोकेगा तो यह घातक हो सकता है। उसके हृदय को नुकसान पहुंच सकता है। पुरानी बीमारियों जैसे हृदय रोग, मधुमेह और हाइपरटेंशन के मरीजों में कोरोना का संक्रमण जल्दी होने की आशंका को खारिज करते हुए देश की इस सबसे बड़ी चिकित्सा शोध संस्था ने कहा कि अब तक ऐसा कोई साक्ष्य सामने नहीं आया है। हालांकि इन रोगों से प्रभावित लोगों में कोविड-19 के बेहद गंभीर मामले हो सकते हैं, इसलिए उनकी खास देखभाल करने की जरूरत है। उसने चिकित्सा विशेषज्ञों व हृदय रोग विशेषज्ञों के समूह के अनुभवों के आधार पर यह दावे किए। आईसीएमआर ने कहा कि मधुमेह के मरीज अगर रोग को नियंत्रित नहीं रखते हैं तो उन्हें कई प्रकार के संक्रमण होने की संभावना वैसे ही बढ़ जाती है। वे लोग अपने खान-पान पर विशेष ध्यान दें और व्यायाम को नियमित दिनचर्या का हिस्सा बनाएं। दवाई नियमित रूप से लें और शुगर स्तर लगातार जांच करते रहें ताकि इसे नियंत्रित रख सकें।

अनुपम खेर ने जारी किया पत्नी किरण खेर का हेल्थ अपडेट

नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्टर अनुपम खेर की पत्नी और चंडीगढ़ सांसद एक्ट्रेस किरण खेर के पति अनुपम खेर ने उनकी हेल्थ अपडेट जारी किया है जिसमें उन्होंने एक्ट्रेस को लेकर कई अहम जानकारियां दी हैं। दरअसल, अनुपम खेर हाल ही में अपने इंस्टाग्राम पर लाइव आए। इस दौरान उन्होंने किरण के बारे में फैंस के पूछे गए कई सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा, किरण की तबियत में अब पहले से ज्यादा सुधार है। वह ठीक हो रही हैं, लेकिन जो दवाइयां वह ले रही हैं उसके कई साइड इफेक्ट्स हैं। वह काफी स्ट्रॉन्ग हैं और उम्मीद है कि जल्द ही ठीक होकर वापस आएंगी। आपकी दुआएं उनके साथ हैं, वह जल्द ठीक होकर आएंगी। आपको बता दें कि किरण खेर के कैंसर से जंग लड़ने की खबर उनके पति अनुपम खेर ने ही दी थी। उन्होंने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर एक पोस्ट में लिखा था कि, अफवाहों से किसी का भला नहीं होता, इसलिए सिकंदर और मैं आपको सूचित कर रहे हैं कि किरण को मल्टीपल माएलोमा हुआ है, जो एक प्रकार का ब्लड कैंसर है। अभी उनका इलाज चल रहा है और हमें यकीन है कि वह पहले से ज्यादा मजबूत होकर बाहर आएंगी। हम खुशकिस्मत हैं कि उनका इलाज कुछ बेहतरीन डॉक्टर्स कर रहे हैं। वह हमेशा से जुझारू रही हैं और मुश्किलों से सीधे टकराती हैं। उन्हें कई लोग दिल से प्यार करते हैं। इसलिए प्यार भेजते रहिए। उन्हें दिल और दुआओं में रखिए। वो रिकवरी के रास्ते पर हैं। उन्हें प्यार और सहारा देने के लिए सभी का शुक्रिया। मालूम हो कि किरण इन दिनों कैंसर जैसी बीमारी से जूझ रही हैं। किरण के कैंसर की बीमारी होने की खबर सामने आते ही उनके फैंस काफी निराश हो गए थे। किरण की सलामती की दुआएं उनके फैंस लगातार कर रहे हैं।

डीएम ने मैरिज हॉल में मारा छापा, अब मांगी माफी, हुए सस्पेंड

अगरतला, (एजेंसी)। पश्चिम त्रिपुरा के जिलाधिकारी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें वो एक शादी हॉल पर छापेमारी कर रहे हैं, जहां कोरोना के नियमों की अनदेखी की जा रही है। इस वीडियो में जिलाधिकारी शैलेश यादव काफी गुस्से में नजर आ रहे हैं और हॉल में मौजूद पुलिसकर्मियों को डांट लगा रहे हैं। हालांकि वीडियो के वायरल होने और मुख्यमंत्री की दखलअंदाजी के बाद डीएम को सस्पेंड कर दिया गया है। वीडियो में जिलाधिकारी ने पुलिसकर्मियों को निर्देश दिए कि वो दुल्हा और दुल्हन के समेत पूरी भीड़ को हॉल से बाहर निकाले और सभी लोगों को गिरफ्तार करने की भी बात कही। डीएम शैलेश यादव ने कहा कि इन लोगों के खिलाफ नाइट कर्फ्यू और महामारी आपदा कानून के तहत मामला दर्ज होना चाहिए। यही नहीं डीएम यादव ने वहां मौजूद पुलिसकर्मियों पर आरोप लगाया कि वो प्रशासन को सहयोग नहीं दे रहे हैं। वीडियो में शैलेश यादव यह कहते हुए नजर आते हैं कि वो सरकार से पूर्व अगरतला पुलिस स्टेशन के प्रभारी की शिकायत करेंगे और उन्हें निलंबित करने की सिफारिश करेंगे।

सोशल मीडिया पर तेजी से वीडियो के वायरल होने के बाद लोगों ने जिलाधिकारी के रवैये के खिलाफ सवाल उठाने शुरू कर दिए। यूजर्स ने इस वीडियो पर कमेंट करते हुए जिलाधिकारी के रवैये की निंदा की और कहा कि प्रशासन को सिर्फ आम लोग ही दिखते हैं कार्रवाई के लिए, नेता नहीं। इधर मंगलवार को जिलाधिकारी शैलेश यादव ने शादी रुकवाने के लिए माफी मांग ली है और कहा कि उनका उद्देश्य किसी की भावना को आहत करना नहीं था। वहीं मुख्यमंत्री बिप्लब कुमार देव ने मुख्य सचिव मनोज कुमार से घटना को लेकर रिपोर्ट तलब करने को कहा है। वहीं पश्चिम त्रिपुरा की सांसद और भाजपा नेता प्रतिमा भौमिक ने कहा कि वो दुल्हन के रिश्तेदारों से मिलने जाएंगी और उनसे घटना के बारे में पूर्ण जानकारी लेंगी।

पूजा में चढ़ाई शराब पीने के बाद 5 की मौत

हाथरस, (एजेंसी)। कुल देवता को पूजन के दौरान चढाई गई शराब पीने से पांच लोगों की मौत हो गई। छह अन्य लोगों की हालत गंभीर है। इस घटना के बाद गांव में दहशत फैल गई है यह घटना उत्तर प्रदेश के हाथरस गेट कोतवाली क्षेत्र के गांव नगला सिंघी की है। यहां दो दिन के अंतराल में पांच लोगों की मौत से गांव में दहशत बनी है। बताया जा रहा है कि दो दिन पहले कुल देवता पीर बाबा की पूजा के दौरान रिवाज के तहत शराब चढ़ाई गई थी। उसी शराब को पीने के बाद कुछ लोगों की हालत बिगड़ गई। एक के बाद एक कुल पांच लोगों की मौत हो गई। छह लोगों का उपचार अलीगढ़ के एक निजी अस्पताल में चल रहा है। पुलिस ने शराब की बिक्री करने वाले व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया है। हाथरस के गांव नगला सिंघी और नगला प्रह्लाद में सिंघी समाज के लोग रहते हैं। सोमवार को वहां के लोगों ने कुलदेवता शहीद बाबा पीर की पूजा की थी। इसमें रिवाज है कि पूजा में समाज के लोग अपने कुलदेवता को शराब चढ़ाते हैं। उसी शराब को प्रसाद के रूप में समाज के लोग ग्रहण करते है। इसी को पीने के बाद लोगों की हालत बिगड़ गई है। एक ग्रामीण ने इसकी सूचना दी पुलिस को दी। देर रात जिलाधिकारी रमेश रंजन, एसपी विनीत जायसवाल गांव पहुंचे और जांच की। तीन लोगों के शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। तबीयत बिगड़ने वाले सात लोगों को जिला अस्पताल से अलीगढ़ के लिए रेफर किया गया। इनमें से बुधवार की सुबह एक और व्यक्ति की मौत हो गई। शेष का उपचार चल रहा है। एसपी विनीत जायसवाल ने बताया कि मृतकों के पोस्टमार्टम में मौत का कारण स्पष्ट नहीं हो सका है। इसके चलते बिसरा सुरक्षित रखा गया है। एसपी ने बताया कि गांव में शराब बेचने वाले रामहरी नाम के व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया गया है। उसके पास से दो दर्जन करीब शराब के खाली क्वार्टर मिले हैं, जिन्हें स्कैन करने पर वह सासनी के एक देशी शराब के ठेके से खरीदे गए हैं। इसकी जांच आबकारी टीम कर रही है। जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।पीड़ीत परिजनों ने आरोप लगाया कि गांव के ही रामहरी द्वारा से पूजन के लिए 20 क्वार्टर देशी शराब ली थी। इसको पीने के बाद मंगलवार को चार लोगों की हालत बिगड़ी, जिसमें से एक की दोपहर में और तीन लोगों की शाम को मौत हो गई।

महामारी पर यूपी सरकार को हाई कोर्ट की फटकार

लखनऊ, (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में कोरोना तेजी से फैल रहा है। इस बीच इलाहाबाद हाईकोर्ट ने प्रदेश में कोरोना संक्रमण से निपटने के सरकारी तौर तरीकों पर नाराजगी जताते हुए कहा है कि सरकार माई-वे या नो-वे का रास्ता छोड़े और लोगों के सुझावों पर भी अमल करे। नागरिकों को ऑक्सीजन न दे पाना शर्मनाक है।

हाईकोर्ट ने तीखी टिप्पणी करते हुए कहा कि कोरोना का भूत गली, सड़क पर दिन-रात मार्च कर रहा है। लोगों का जीवन भाग्य भरोसे है। डर से सड़कें, गलियां रेगिस्तान की तरह सुनसान पड़ी हैं। शहरी आबादी कोरोना की चपेट में है। जस्टिस सिद्धार्थ वर्मा और जस्टिस अजित कुमार की बेंच ने मंगलवार को कोरोना के मामले से जुड़ी एक पिटीशन पर सुनवाई करते हुए यह कमेंट किए। साथ ही सबसे ज्यादा प्रभावित 9 शहरों के लिए कई सुझाव भी दिए हैं। इन पर अमल करने और सचिव स्तर के अधिकारी के हलफनामे के साथ 3 मई तक रिपोर्ट पेश करने के लिए भी कहा है। इस केस की अगली सुनवाई भी उसी दिन होगी।

अदालत ने कहा कि भारी संख्या में लोग संक्रमित हो रहे हैं और जीवन बचाने के लिए बेड की तलाश में अस्पतालों का चक्कर लगा रहे हैं। अस्पताल मरीजों की जरूरत पूरी करने में असमर्थ हैं। डॉक्टर, स्टाफ थक चुके हैं।

जीवन रक्षक दवाओं, इंजेक्शन की मारामारी है। ऑक्सीजन की मांग के मुताबिक सप्लाई नहीं हो रही। कई लोग नकली दवाएं बेचते पकड़े जा रहे हैं। सरकार के इतंजाम नाकाफी हैं। इस मामले में सरकार की तरफ से कहा गया कि संक्रमण को काबू करने के लिए हरसंभव उपाय किए गए हैं। गृह सचिव ने एफिडेविट दाखिल कर अभी तक किए गए उपायों की जानकारी दी है। इसके मुताबिक प्रदेश को 857 मीट्रिक टन आक्सीजन अलॉट हुई है। आक्सीजन की कमी को खत्म करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। सप्लाई के लिए कंट्रोल रूम बनाया गया है।

हाईकोर्ट ने राज्य चुनाव आयोग को नोटिस जारी करते हुए पूछा है कि पंचायत चुनाव के दौरान सरकार की गाइडलाइंस का पालन क्यों नहीं किया गया, जिसकी वजह से चुनाव ड्यूटी कर रहे 135 लोगों की मौत की खबर है। कोर्ट ने पूछा कि क्यों न आयोग के खिलाफ आपराधिक केस चलाया जाए। कोर्ट ने बचे हुए चुनाव में गाइडलाइंस का पालन करने का निर्देश भी दिया है।

यूपी-गुजरात टेस्ट कराने में फिसड्डी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कोरोना की दूसरी लहर में पहली लहर की तुलना में तीन गुना ज्यादा मामले सामने आ रहे हैं। पहली लहर में एक दिन में सबसे ज्यादा 97 हजार 859 नए मामले 16 सितंबर 2020 को आए थे। और 25 अप्रैल को नए केस 3 लाख 54 हजार 531 थे। इस दिन कोरोना के लिए सटीक माना जाने वाला टेस्ट 5 लाख 99 हजार 431 लोगों का किया गया। यानी हर दूसरा शख्स जिसने टेस्ट कराया वो पॉजिटिव निकला। यह केवल एक दिन की कहानी है। बीते पांच दिन में कुल 16 लाख 98 हजार 96 लोग संक्रमित हुए हैं और इन्हीं पांच दिनों में 39 लाख 71 हजार 70 लोगों के टेस्ट कराए गए हैं। यानी फिलहाल यही ट्रेंड है। इसके बावजूद उत्तर प्रदेश, बिहार जैसे बड़ी आबादी वाले राज्यों में कोविड टेस्ट की हालत बेहद खराब है।

मध्य प्रदेश की आबादी 7 करोड़ 25 लाख से ज्यादा है। यहां रोजाना एक लाख लोगों पर 9 हजार 478 लोगों का टेस्ट हो रहा है। मानकों के अनुसार इतनी आबादी पर कम से एक दिन में 10 हजार से ज्यादा टेस्ट होने चाहिए। यहां पिछले एक सप्ताह में रोजाना करीब 13 हजार लोग संक्रमित हो रहे हैं, जो पहली लहर के चरम करीब 2 हजार तीन सौ से 6 गुना ज्यादा है। लेकिन टेस्ट के मामले में हम पहली लहर के 2,358 से 9,478 तक ही पहुंच पाए हैं।

6 करोड़ 86 लाख आबादी वाला राजस्थान हर रोज एक लाख लोगों में से 11 हजार से ज्यादा टेस्ट करा के10 हजार वाले मानक को तो पार गया है, लेकिन पहली लहर के चरम के वक्त भी यहां एक दिन में प्रति लाख 3 हजार टेस्ट हो रहे थे। तब एक दिन में करीब 1700 लोग पॉजिटिव आ रहे थे, अब ये आंकड़ा 15,809 पर पहुंच गया है। लेकिन टेस्ट महज तीन गुना ही बढ़ पाए हैं। जबकि मरीज आठ गुना से ज्यादा बढ़ चुके हैं।

6 करोड़ 3 लाख से ज्यादा आबादी वाले राज्य गुजरात में एक लाख लोगों में से अब भी महज 5344 का ही टेस्ट हो पा रहा है। यह 10 हजार के आंकड़े का आधा है। यानी इस राज्य की हालत टेस्ट के मामले में लचर है। जब पहली लहर उफान पर थी तो यहां एक दिन में 1300 नए मामले आ रहे थे। अब 14 हजार से ज्यादा आ रहे हैं। लेकिन प्रति लाख टेस्ट औसत 1200 से बढ़कर 5300 तक पहुंच पाए हैं। अगर आबादी के लिहाज से टेस्ट कराए जाएं तो यहां के मामले दोगुने से ज्यादा हो सकते हैं।

19 करोड़ 95 लाख से ज्यादा आबादी वाला उत्तर प्रदेश अभी टेस्ट का सटीक आंकड़ा ही नहीं बता पा रहा है। हर तरह का टेस्ट मिलाकर ये राज्य एक लाख की आबादी पर महज 234 टेस्ट करा पा रहा है। कम से कम 10 हजार टेस्ट के आंकड़े को भी स्टैंडर्ड मानें तो यहां 43 गुना कम टेस्ट हो रहे हैं। इसके बावजूद हर रोज 35 हजार नए मामले सामने आ रहे हैं। अगर टेस्ट का यही आंकड़ा 10 हजार या इसके पार होता तो हर रोज नए मामलों की संख्या कहीं अधिक होती। पहली लहर में यूपी के टेस्ट के आंकड़े मौजूद नहीं हैं। तब भी हर रोज 6800 तक नए मामले आ रहे थे।

गुवाहाटी में उच्च तीव्रता वाले भूकंप के कारण एक आदमी गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त दीवार के पास खड़ा है।

पुष्कर में तालाबंदी के दौरान लंगूरों को खाना खिलाता एक व्यक्ति।

सूरत में तालाबंदी के पालन पर कड़ी निगरानी रखने के लिए पुलिस ने फ्लैग मार्च किया।

एक नजर

बंगाल के मंत्री फिरहाद हकीम को कथित रूप से हिंसा भड़काने के लिए चुनाव आयोग का नोटिस

कोलकाता । चुनाव आयोग ने तृणमूल कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और बंगाल के शहरी विकास मंत्री फिरहाद हकीम को कथित रूप से हिंसा भड़काने वाले भाषण देने पर मंगलवार देर शाम कारण बताओ नोटिस नोटिस जारी किया है। साथ ही केंद्रीय बलों के खिलाफ कथित बयान को लेकर भी चुनाव आयोग ने उन्हें नोटिस जारी किया है। आयोग ने मंत्री हकीम को अपनी टिप्पणियों पर जवाब देने के लिए 24 घंटे का समय दिया है।आयोग ने भाजपा की शिकायत के बाद यह कार्रवाई की है। प्रदेश भाजपा के प्रतिनिधिमंडल ने हाल ही में चुनाव आयोग से शिकायत कर आरोप लगाया था कि मंत्री फिरहाद हकीम ने मतदाताओं को पार्टी के खिलाफ हिंसा करने के लिए उकसाया है। नोटिस में कहा गया है कि तृणमूल कांग्रेस के नेता ने लोगों से भाजपा कार्यकर्ताओं पर हमला करने को कहा था। बता दें कि इससे पहले इसी महीने 13 अप्रैल को फिरहाद हकीम ने भाजपा पर आरोप लगाया था कि वो ध्रुवीकरण की राजनीति को और आगे बढ़ाने की कोशिश के तहत उनकी धार्मिक पहचान को निशाना बना रही है। हकीम ने भाजपा के इस दावे की आलोचना की कि वो राज्य को मिनी पाकिस्तान बना देंगे। उन्होंने कहा कि वो राष्ट्रवादी हैं और राजनीति के ध्रुव्रीकरण की कोशिश भारतीय संविधान की भावना के विपरीत है। उन्होंने कहा कि मैं एक भारतीय के रूप में अंतिम सांस लूंगा और मेरी कब्र इसी जमीन पर होगी। हकीम ने कहा कि भाजपा को मोदी और शाह की संयुक्त साझेदारी चला रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा ने ममता दीदी और हमारी पार्टी के अन्य नेताओं पर व्यक्तिगत हमले करके चुनाव का स्तर बहुत गिरा दिया है। केवल व्यक्तिगत हमले करना राजनीति नहीं हो सकती। बंगाल के लिए उनके पास क्या एजेंडा है।

नए विधायकों के लिए तैयारी कर रही है बंगाल विधानसभा, दो मई को होगी मतगणना

कोलकाता । विधानसभा चुनाव की मतगणना दो मई को होगी। परिणाम घोषित होते ही पश्चिम बंगाल विधानसभा में नवनिर्वाचित विधायकों का शपथ ग्रहण शुरू हो जाएगा। इसलिए धीमी गति से विधानसभा के अंदर तैयारी शुरू हो गई है। चुनाव जीतने के बाद चुने हुए प्रतिनिधियों को विधानसभा में एक फॉर्म भरना होता है। अभी के लिए उस फॉर्म की छपाई लगभग फाइनल हो चुकी है। दो मई को परिणामों की घोषणा के बाद हालात कैसे रहते हैं उस पर विधानसभा के अधिकारियों से लेकर कर्मचारियों तक की नजर है। क्योंकि, कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर में पूरा देश उथल-पुथल में है। उस कहर से बंगाल भी त्रस्त है। इसलिए इस मामले में वे स्थिति को समझते हुए निर्णय लेना चाहते हैं। विधानसभा कर्मचारियों के एक वर्ग के अनुसार, कोरोना के संक्रमण के मामले में 294 विधायकों का एक ही समय में शपथ ग्रहण करना संभव नहीं है। इसलिए हमें इस समस्या को वैकल्पिक तरीके से हल करना होगा। जैसा कि संसदीय राजनीति में प्रथा है। विधानसभा के सबसे अनुभवी निर्वाचित सदस्य विधायकों को प्रोटेम स्पीकर के रूप में शपथ दिलाते हैं। लेकिन इससे पहले, निवर्तमान विधानसभा के अध्यक्ष की भी कुछ भूमिका होती है। 16 वीं विधानसभा के अध्यक्ष बिमान बंद्योपाध्याय, वकील और बारुईपुर पश्चिम से विधायक हैं। इसलिए उनके निर्देश भी निर्णय लेने में विधान सभा के अधिकारियों के लिए महत्वपूर्ण हैं। विधानसभा के एक अधिकारी के अनुसार, सरकार बनाने वाली राजनीतिक पार्टी का निर्णय इस मामले में सबसे महत्वपूर्ण है। प्रशासन को संकेत दिया जाता है कि प्रोटेम स्पीकर कौन होगा या अगला स्पीकर कौन होगा। इसलिए परिणाम के बाद इसे हमेशा की तरह देखना होगा। जैसे ही उन्हें उस दिशा से हरी झंडी मिलती है, विधानसभा के अधिकारी सभी कामों में तेजी लाते हैं। इसलिए भले ही इस मामले में तैयारी शुरू कर दी जाए, लेकिन नतीजों की घोषणा के बाद ही सभी फैसले लिए जा सकते हैं।

जम्मू बना नया कोरोना हॉटस्पाट, शहर में बीस दिनों में बन गए 35 माइक्रो कंटेनमेंट जोन

जम्मू । कोविड-19 की दूसरी लहर जम्मू जिले को भी बढ़ी तेजी से अपनी चपेट में ले रही है। पूरे जम्मू संभाग में रोजाना कोविड-19 के जितने केस आ रहे हैं, उसमें से औसतन साठ फीसद केस केवल जम्मू जिले से रिपोर्ट हो रहे हैं। जम्मू जिले में रोजाना करीब 500 नए केस रिपोर्ट हो रहे हैं और यहीं कारण है कि अब यहां का स्वास्थ्य ढांचा भी तनाव में आ चुका है। निजी अस्पतालों में बेड नहीं मिल रहे और गवर्नमेंट मेडिकल कालेज में दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है। इसी के चलते गांधी नगर अस्पताल में सभी सामान्य गतिविधियां बंद करके इसे कोविड-19 अस्पताल बना दिया गया है। स्वास्थ्य विभाग के जानकारों की माने तो अगर जम्मू जिले में कोविड-19 मरीजों की रफ्तार इसी तरह जारी रही तो आने वाले एक पखवाड़े में हालात बिगड़ सकते हैं।जम्मू में हालात काबू में रहे, इसके लिए प्रशासन ने सख्ती शुरू कर दी है। यहीं कारण है कि पिछले बीस दिनों में जिन क्षेत्रों में कोविड-19 के अधिक केस मिले हैं, उन्हें माइक्रो कंटेनमेंट जोन बनाया जा रहा है। जम्मू में इन केसों की संख्या में लगातार वृद्धि का अंदाजा इसी बात से लग रहा है कि पिछले बीस दिनों में 35 माइक्रो कंटेनमेंट जोन बने है और मंगलवार को सबसे अधिक 14 माइक्रो कंटेनमेंट जोन बने। इन जोन में अब सीआरपीसी की धारा 144 लागू कर दी गई है और अब यहां के हर निवासी की कोविड-19 जांच होगी।

रंगदारी गिरोह बाहरी राज्यों से मंगवाता था पिस्तौल और देशी कट्टे

जम्मू । जम्मू में बीते 5 सालों से सिर उठा रहा रंगदारी गिरोह के सरगना सुप्रीत सिंह उर्फ राजा समेत पकड़े गए 15 सदस्यों से अब तक पूछताछ में पुलिस ने अहम सुराग जुटाएं है।रंगदारी के लिए गिरोह से जब्त की गई 5 पिस्तौले और 4 देशी कट्टे व उनके कारतूस बाहरी राज्य उत्तरप्रदेश व बिहार से लाए गए थे। इन हथियारों की आपूर्ति में जम्मू शहर के कुछ व्यापारियों का नाम आ रहा है, जिसने इस गिरोह को व्यापार की आड़ में इन हथियारों की खेप को बाहरी राज्यों से जम्मू पहुंचाया और बाद में गिरोह को सौंप दिए।हथियार मुहैया करवाने वाले लोगों से गांधीनगर पुलिस पूछताछ में लगी हुई है।अभी तक पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार नही किया है।पुलिस का कहना है कि बाहरी राज्यों में कौन से लोग थे जिनसे यह हथियार खरीदे जाते थे? इसकी पड़ताल जारी है।गांधीनगर के एसएचओ भरत शर्मा का कहना है कि अभी मामले में कुछ कहना जल्दबाजी होगी, क्योंकि अभी कुछ और गिरफ्तारियां की जानी बाकी हैं। शहर के जानेमाने रघुनाथ,बाजार और कनक मंडी के कुछ व्यापारियों को भी रंगदारी गिरोह ने लूटा है। गिरोह का मास्टर माइंड राजा जम्मू शहर में अपराधियों के ऐसा साम्राज्य तैयार किया था कि अब यह गिरोह नागों जैसे व्यापारियों से रंगदारी के लिए पैसों की उगाही करना चाहते थे।किसी समय में नागों का शहर में सिक्का चलता था,

महाराष्ट्र कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व एमपी एकनाथ गायकवाड़ का निधन

मुंबई । पूर्व कांग्रेस सांसद, पूर्व मंबई कांग्रेस अध्यक्ष और पार्टी के वरिष्ठ नेता एकनाथ गायकवाड़ का मुंबई में निधन हो गया। एकनाथ गायकवाड महाराष्ट्र की शिक्षा मंत्री वर्षा गायकवाड के पिता थे। उनका मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में इलाज चल रहा था, जहां उन्होंने अंतिम सांस ली। वह कांग्रेस के कद्दावर नेताओं में शुमार किए जाते थे। महाराष्ट्र में कांग्रेस को आगे ले जाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। गायकवाड़ ने मुंबई दक्षिण केंद्रीय लोकसभा सीट का दो बार प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने धारावी से तीन बार जीतकर महाराष्ट्र विधानसभा के सदस्य के रूप में भी कार्य किया। उन्होंने राज्य मंत्रिमंडल के एक प्रमुख सदस्य के रूप में भी काम किया था। 2017 से 2020 तक वह मुंबई कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे।

कांग्रेस सहित तमाम राजनेता उनके निधन पर शोक व्यक्त कर रहे हैं। कांग्रेस ने अपने ट्वीटर हैंडल पर लिखा है कि पूर्व सांसद और कांग्रेस के कद्दावर नेता एकनाथ गायकवाड़ जी के निधन से हम बेहद दुखी हैं। महाराष्ट्र और राष्ट्र के विकास में उनका योगदान और कांग्रेस पार्टी के लिए उनका समर्पण कई को प्रेरित करेगा। उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति हमारी हार्दिक संवेदनाएं।

गृह राज्य मंत्री और कांग्रेस नेता सतेज पाटिल ने एकनाथ गायकवाड़ को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि पिछले 20-25 सालों से हम युवा नेता उन्हें एक वरिष्ठ नेता के रूप में देख रहे हैं। उनके जाने से निश्चित रूप से मुंबई प्रदेश कांग्रेस के लिए झटका है। उन्हें एक ऐसे नेता के रूप में देखा गया है जो सभी को साथ लेकर चलते थे। उनसे बहुत सी बातें सीखी हैं, जैसे किसी के राजनीतिक जीवन में कड़ी मेहनत करने की इच्छा, कुछ हासिल करने का संकल्प। मध्य प्रदेश भाजपा नेता और राज्यसभा सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया ने ट्वीट कर लिखा है कि वरिष्ठ कांग्रेस नेता एकनाथ गायकवाड जी के दुःखद निधन पर मेरी गहरी संवेदनाएं। ईश्वर से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिजनों को यह आघात सहने की शक्ति दे।

महाराष्ट्र में ठाणे के प्राइम क्रिटिकेअर हॉस्पिटल में लगी आग, चार मरीजों की मौत

मुंबई, एजेंसी । महाराष्ट्र के ठाणे शहर के मुंबरा में प्राइम क्रिटिकेयर अस्पताल में बुधवार को आग लगने से 4 मरीज़ों की मौत हो गई। आग सुबह अस्पताल की पहली मंजिल पर लगी। आग लगने के बाद मरीजों को दूसरे हॉस्पिटल में शिफ्ट किया जाने लगा, इस दौरान चार मरीजों की मौत हो गई। दमकल की गाड़ियां फिलहाल मौके पर मौजूद हैं और आग बुझाने का काम जारी है।

जानकारी के अनुसार ठाणे महानगर में आज सुबह 03:40 बजे ठाणे के मुंब्रा में प्राइम क्रिटिकेअर अस्पताल में आग लग गई, दो दमकल और एक बचाव वाहन घटनास्थल पर हैं, आग बुझाने का काम चल रहा है, दूसरे अस्पताल में मरीजों की शिफ्टिंग के दौरान चार की मौत हो गई है। मौत का आंकड़ा और बढ़ सकता है। अस्पताल आग बुझाने की कोशिश जारी है। जानकारी हो कि कोरोना संकट के बीच महाराष्ट्र के अस्पतालों में आग लगने की घटनाएं बढ़ गई हैं। 26 मार्च को मुंबई के भांडुप उपनगर स्थित ड्रीम्स माल के सनराइज कोविड अस्पताल आग लग गई थी। इस हादसे में 11 मरीजों को अपनी जान गवांनी पड़ी थी। मरने वाले सारे मरीज वेंटिलेटर पर थे, जिसकी वजह से बाहर नहीं निकल सके थे। अस्पताल में कोरोना पीड़ितों के अलावा दूसरी बिमारियों के मरीज भी भर्ती थे।

महाराष्ट्र के अस्पतालों में लगातार हादसे हो रहे हैं। विरार में आग से पहले नासिक महानगरपालिका द्वारा संचालित डा. जाकिर हुसैन अस्पताल के ऑक्सीजन टैंक लीक हो गई। इसे रोकने के लिए मरीजों को आक्सीजन की आपूर्ति कुछ समय के लिए रोक दी गई। इस वजह 24 कोरोना मरीजों की मौत हो गई थी, जो वेंटिलेटर पर थे। जानकारी हो कि कोरोना कहर बन कर टुटा है।

महाराष्ट्र में 18 से 44 वर्ष के सभी लोगों को मुफ्त में लगेगी कोरोना वैक्सीन

मुंबई । मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के नेतृत्व में बुधवार को कैबिनेट ने महाराष्ट्र के18-44 वर्ष के सभी नागरिकों को मुफ्त कोरोना वैक्सीन लगाने का निर्णय लिया है। यह जानकारी सीएमओ महाराष्ट्र ने दी। गौरतलब है कि प्रदेश में कोरोना के मामले बढ़ते जा रहे हैं। कई जिलों में नित नए मामले सामने आ रहे हैं।महाराष्ट्र में मंगलवार को कोविड संक्रमण से 895 लोगों की मौत हो गई। यह आंकड़ा एक दिन में अब तक का सबसे ज्यादा आंकड़ा है। महाराष्ट्र में पिछले 24 घंटे में 66,358 नए मामले दर्ज किए गए हैं। महाराष्ट्र में अभी 6,72,434 सक्रिय मामले हैं। राज्य में अब तक 2,62,54,737 लोगों के टेस्ट किए गए हैं, जिनमें से 44,10,085 पॉजिटिव निकले हैं। राज्य में अब तक कोरोना वायरस से 36,69,548 लोगों की मौत हो गई है। वहीं, मुंबई में पिछले 24 घंटे में कोरोना के 4014 नए मामले सामने आए, 59 मौतें हुई और 8,240 रिकवर हुए। कुल मामले 6,35,541 हैं।

कोरोना की दूसरी लहर 10 फरवरी से शुरू होने के बाद पिछले ढाई महीनों में मुंबई में 6,35,541 संक्रमण के मामले आ चुके हैं। मार्च महीने के आखिर तक पहुंचते-पहुंचते मुंबई में प्रतिदिन कोरोना रोगियों की संख्या 10 हजार से ऊपर पहुंच गई थी। अप्रैल के प्रथम सप्ताह में यह संख्या बढ़ने के बजाय स्थिर रही, और चार अप्रैल के बाद से इसमें लगातार कमी आती दिखाई देने लगी। बीच में 15,16 एवं 18 अप्रैल को यह संख्या पुन- 8000 से ऊपर गई, लेकिन उसके बाद से यह लगातार घट रही है। 26 अप्रैल को सामने आए सक्रिय मामले सिर्फ 3,792 यानी चार अप्रैल की संख्या 11,163 की लगभग एक तिहाई है। बता दें कि कोरोना की दूसरी लहर शुरू होने से पहले मुंबई में यह संख्या 300-400 प्रतिदिन तक पहुंच गई थी। इसके बाद ही मुंबई में लोकल ट्रेनें सभी के लिए शुरू करने सहित, पाबंदियों में कुछ और ढील देने का निर्णय किया गया

महाराष्ट्र में पिछले 24 घंटे में कोरोना संक्रमण के 66,358 नए मामले, 895 लोगों की मौत, मुंबई में 59 मौतें

मुंबई । महाराष्ट्र में पिछले 24 घंटे में कोविड संक्रमण से 895 लोगों की मौत हो गई। यह आंकड़ा एक दिन में अब तक का सबसे ज्यादा आंकड़ा है। महाराष्ट्र में पिछले 24 घंटे में 66,358 नए मामले दर्ज किए गए हैं। महाराष्ट्र में अभी 6,72,434 सक्रिय मामले हैं। राज्य में अब तक 2,62,54,737 लोगों के टेस्ट किए गए हैं, जिनमें से 44,10,085 पॉजिटिव निकले हैं। राज्य में अब तक कोरोना वायरस से 36,69,548 लोगों की मौत हो गई है। वहीं, मुंबई में पिछले 24 घंटे में कोरोना के 4014 नए मामले सामने आए, 59 मौतें हुई और 8,240 रिकवर हुए। कुल मामले 6,35,541 हैं। कोरोना की दूसरी लहर 10 फरवरी से शुरू होने के बाद पिछले ढाई महीनों में मुंबई में 6,35,541 संक्रमण के मामले आ चुके हैं। मार्च महीने के आखिर तक पहुंचते-पहुंचते मुंबई में

प्रतिदिन कोरोना रोगियों की संख्या 10 हजार से ऊपर पहुंच गई थी। अप्रैल के प्रथम सप्ताह में यह संख्या बढ़ने के बजाय स्थिर रही, और चार अप्रैल के बाद से इसमें लगातार कमी आती दिखाई देने लगी।

बीच में 15,16 एवं 18 अप्रैल को यह संख्या पुन- 8000 से ऊपर गई, लेकिन उसके बाद से यह लगातार घट रही है। 26 अप्रैल को सामने आए सक्रिय मामले सिर्फ 3,792 यानी चार अप्रैल की संख्या 11,163 की लगभग एक तिहाई है। बता दें कि कोरोना की दूसरी लहर शुरू होने से पहले मुंबई में यह संख्या 300-400 प्रतिदिन तक पहुंच गई थी। इसके बाद ही मुंबई में लोकल ट्रेनें सभी के लिए शुरू करने सहित, पाबंदियों में कुछ और ढील देने का निर्णय किया गया था। लेकिन इसका असर उलटा हुआ, और कोरोना के मामले फिर बढ़ने लगे। मुंबई महानगरपालिका के आयुक्त इकबाल सिंह चहल का कहना है कि कोरोना की दूसरी लहर एक-दूसरे को छूने से नहीं, बल्कि हवा से फैल रही है। इससे बचाव के लिए सिर्फ दूरी बनाए रखना ही पर्याप्त नहीं है। मास्क लगाकर ही इससे बचा जा सकता है।

चहल के अनुसार इसके लिए बीएमसी ने सख्त पाबंदियां एवं जागरूकता अभियान चलाया। मास्क न लगाने वाले 27 लाख लोगों पर जुर्माना लगाकर कुल 56 करोड़ रुपए वसूले गए। इससे लोगों के मन में प्रशासन के प्रति डर बैठा और आज 90 फीसद मुंबईवासी मास्क में दिखाई देने लगे हैं। उनके अनुसार जब मुंबई में कोरोना मरीजों की संख्या बढ़ने लगी तो यहां प्रतिदिन 50 हजार लोगों की जांच का लक्ष्य रखा गया। चहल का कहना है कि कोरोना की नई लहर में 90 फीसद से ज्यादा मामले ऊंची इमारतों से आए हैं, न कि झोपड़पट्टियों से। इसके कारण भी संख्या को नियंत्रित करना अपेक्षाकृत आसान रहा। राहत देनेवाला एक पहलू यह भी है कि मुंबई में संक्रमित पाए जा रहे रोगियों की तुलना में ठीक होनेवाले रोगियों की संख्या भी अब ज्यादा हो गई है। लेकिन मुंबई को लेकर एक नई चिंता बिना वैक्सीन लिए ही उनके शरीर में एंटीबाडी निर्माण होना है।

आइपीएल में सट्टा लगाने के आरोप में उदयपुर से पांच गिरफ्तार

उदयपुर । आइपीएल 2021 के मंगलवार रात हो रहे टवेंटी-टवेंटी मैच के लिए सट्टा लगाने के आरोप में उदयपुर पुलिस ने मध्य प्रदेश के पांच युवकों को गिरफ्तार कर लिया है। इनके कब्जे से तीन लैपटॉप, चालीस मोबाइल फोन, एक कार, टीवी तथा आठ करोड़ रुपये के सट्टे का हिसाब के साथ सोलह हजार छह सौ रुपये नकद बरामद किए गए हैं। इस संबंध में उदयपुर जिला स्पेशल टीम के प्रभारी हनमंत सिंह राजपुरोहित ने बताया कि मीरां नगर के हाइट कॉम्प्लेक्स के एक फ्लैट में सट्टे का खेल चल रहा था। पकड़े गए आरोपियों में कमलेश कालरा, नदीम मेवाती, लवि शर्मा, शाहनवाज हुसैन और मोहम्मद ईशाक शामिल हैं, ये सभी आरोपित मध्य प्रदेश के नीमच तथा मंदसौर जिले के हैं, जो उदयपुर में छोटे बुकी से संपर्क में थे।

पुलिस ने बताया कि आरोपितों ने सट्टा लगाने के लिए एक ऑटोमेटिक सिस्टम भी तैयार किया था। जिससे कई छोटे बुकी सीधे सट्टे की लाइन से जुड़े हुए थे। पुलिस ने उनसे एक ऐसी मशीन बरामद की, जिससे सोलह मोबाइल एक-दूसरे से कनेक्टेड थे। पूछताछ में आरोपितों ने बताया कि एक पेटी नुमा मशीन में 16 मोबाइल लगे हैं। यानी सोलह बुकी एक-दूसरे से जुड़े हुए थे, जो अन्य कई लोगों के पैसे लगा रहे थे। ऑटोमेटिक पेटीनुमा मशीन में मोबाइल ऑटो रिसीव होता है और बुकी अपना दांव बोल देता था, जो बुकी दाव बोलता उसके कोड के अनुसार लैपटॉप में स्वत- ही एंट्री हो जाती थी। उदयपुर पुलिस का कहना है कि इन आरोपितों के खिलाफ पहले हथियार तस्करी का मामले भी दर्ज हैं और सभी जमानत पर रिहा थे। सट्टा खिलाने के मामले में पकड़े गए आरोपितों को बुधवार सुबह अदालत में पेश किया। जिन्हें अदालत के निर्देश के अनुसार चौदह दिनों के लिए न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। वहीं, पुलिस इस मामले के हर पहलू की जांच कर रही है। पूछताछ के दौरान अहम खुलासे की उम्मीद है।

पाली के सोजत थाना स्टाफ ने भरा थाना सफाईकर्मी की बेटी की शादी में इक्यावन हजार का मायरा, पेश की अनूठी मिसाल

जोधपुर । कोरोना गाइडलाइन के बीच लगी बंदिशों के बाद भी समाज का मानवीय पहलू भी देखने को मिल रहा है। आमतौर पर चौराहे पर सख्ती के साथ पेश आने वाली पुलिस का एक मानवीय चेहरा भी राजस्थान के पाली जिले के सोजत थाना पुलिस ने दिखाया है। जहां थाने के सफाईकर्मी की बिटिया की शादी में पूरे थाना स्टाफ व अन्य पुलिस कर्मियों ने आपसी सहयोग से 51000 रुपये की राशि मायरे में भरकर मिसाल कायम की है। पुलिसकर्मियों के इस प्रयास से यहां सफाईकर्मी और उसका परिवार हतप्रभ है वहीं लॉकडाउन के विकट समय मे पुलिस का मददगार चेहरा सभी की चर्चा का विषय बना है।

27 अप्रैल को हुआ विवाह

जोधपुर संभाग के पाली जिले के सोजत रोड थाना में सफाई कार्य करने वाले आर्थिक दृष्टि से कमजोर रमेश

कुमार की बेटी किरण का विवाह 27 अप्रैल को हुआ। दलित समुदाय से होने साथ साथ आर्थिक स्थिति भी संहि नही थी, ऐसे में पाली जिले के सोजत रोड थाने में थानाधिकारी सीमा जाखड़ के नेतृत्व में थाने के करीब 30 पुलिसकर्मियों ने एक राय होकर रमेश की बेटी की शादी में मायरा भरने का निर्णय लिया।समस्त थाना स्टाफ ने किरण की शादी में 51 हजार रुपये नक़द देकर मदद की। वही रमेश समेत उसके पूरे परिवार और बेटी जवाई के लिए ड्रेस इत्यादि देकर शानदार मायरा भरा।

परिवारजन हतप्रभ रह गए

थाने की ओर से इतनी बड़ी राशी पाकर रमेश कुमार व सभी परिवारजन हतप्रभ रह गए।सभी ने सोजत रोड थाना स्टॉफ की खूब प्रशंसा की। राजस्थान पुलिस के इस गौरवमयी कार्य के साथ पुलिस के इस मानवीय रूप को सभी ने सराहा। थानाधिकारी सीमा जाखड़ के साथ भवरलाल एएसआई, घनश्याम लाल हेड कांस्टेबल, दीनाराम हेड कांस्टेबल, मीठालाल हेड कांस्टेबल, नर्सिंग राम हेड कांस्टेबल, मुकेश कुमार हेड कांस्टेबल, कांस्टेबल रूपाराम सोढा, किशोर कुमार, नाथूराम, जगदीश कुमार, राजूराम, हनुमान राम सहित समस्त थाना स्टॉफ ने बढ़चढ़ कर सहयोग किया।

राजस्थान में कोरोना कहर, जयपुर के एक अस्पताल में ऑक्सीजन की कमी से 7 मरीजों की मौत

जयपुर । तेजी से फैलती कोरोना महामारी के बीच मंगलवार रात राजस्थान के दो जिलों में 7 मरीजों की मौत हो गई। जयपुर के एक निजी अस्पताल में ऑक्सीजन खत्म होने से 4 मरीजों की मौत हो गई। एक दर्जन से अधिक मरीजों की तबीयत बिगड़ने लगी। अचानक हुई मौतों से घबराए डॉक्टर और नर्सिंग स्टाफ अस्पताल से फरार हो गए। अस्पताल में भर्ती मरीजों के परिजनों ने अस्पताल के बाहर हंगामा शुरू कर दिया।

अस्पताल जयपुर के ग्रामीण इलाके में होने के कारण उच्च अधिकारियों को देर रात इस घटनाक्रम की सूचना मिली। सूचना मिलने पर पुलिस एवं चिकित्सा विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंचे। उन्होंने अस्पताल में भर्ती मरीजों को दूसरे अस्पताल में शिफ्ट किया। रात 3 बजे तक मरीजों को शिफ्ट करने का सिलसिला जारी रहा। परिजन बुधवार सुबह तक हंगामा करते रहे।

पुलिस अधिकारियों ने काफी मशक्कत के बाद उन्हे शांत कराया। मृतक परिजनों के शवों का पोस्टमार्टम कराने के बाद परिजनों को सौंप दिए गए। कोविड़ गाइडलाइन के अनुसार शवों का अंतिम संस्कार करने के लिए कहा गया। जिला कलेक्टर अंतर सिंह नेहरा ने मौके पर पहुंचकर हालात का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि जांच की जा रही है, यदि अस्पताल प्रशासन की लापरवाही रही है तो उसके खिलाफ आवश्यक कार्यवाही की जाएगी। यह घटना जयपुर हाथोज गांव स्थित कोनिक्स खंडाका अस्पताल में हुई। प्रशासनिक की प्रारंभिक जांच एवं मृतकों के परिजनों के अनुसार अस्पताल में ऑक्सीजन की कमी थी। सिलेंडर खाली पड़े थे।अस्पताल के प्रशासक सुधीर व्यास ने कहा कि चारों मरीजों को गंभीर अवस्था में भर्ती कराया गया था। ऑक्सीजन की कमी नहीं थी। इसी तरह बीकानेर के पीबीएम अस्पताल में ऑक्सीजन की कमी से 3 मरीजों की मौत हुई। ऑक्सीजन की कमी से तड़पते हुए मरते मरीजों का बुधवार सुबह इंटरनेट मीडिया पर वीडियो वायरल हुआ। मृतकों के परिजनों ने अस्पताल में ऑक्सीजन नहीं होने की बात कही। इस मामले में सफाई देते हुए अस्पताल अधीक्षक डॉ.परमिंदर सिंह ने कहा कि जिन 3 मरीजों की मौत हुई है, उनकी स्थिति पहले से गंभीर थी। वे वेंटिलेटर पर थे। ऑक्सीजन की कमी से मौत होने की बात गलत है।

कोरोना महामारी की दूसरी लहर पर बोले सचिन पायलट-सर्वदलीय बैठक बुलाई जाए

जयपुर । राजस्थान के पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट ने कोरोना महामारी की दूसरी लहर को राष्ट्रीय चिकित्सीय आपातकाल के तौर पर देखने की जरूरत बताई है। केंद्र सरकार को कोविड मैनेजमेंट में विफल बताते हुए पायलट ने कहा कि महामारी से निपटने के बजाय राजनीति पर ध्यान दिया गया। मंगलवार को एक बयान में उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार को आगे आकर हालात से निपटने की जिम्मेदारी केवल राज्यों पर नहीं छोड़नी चाहिए। देश को ऑक्सीजन, रेमडेसिविर और वेंटिलेटर के लिए युद्ध का मैदान नहीं बनने दिया जा सकता है।

पायलट ने कहा कि इस मुद्दे को लेकर सर्वदलीय बैठक बुलाई जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार को सभी आवश्यक संसाधनों के लिए मानदंड तैयार करने चाहिए थे,लेकिन प्रारंभ में ध्यान नहीं दिया गया। परदर्शी ढंग से संसाधनों का वितरण होना चाहिए। वैक्सीन की कीमतों को भी नियंत्रित किया जाना चाहिए। पायलट ने कहा कि जीवन रक्षक टीकों की कीमत और मुनाफे का फैसला कंपनियों पर नहीं छोड़ा जाना चाहिए। टीकों के निर्माण में भारत दुनिया में आगे रहा है,लेकिन अब यहां के ही नागरिक वैक्सीन लगवाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

आशका गोराडिया

ने एक्टिंग को कहा 'BYE-BYE', बोलीं- बिजनेस मेरे खून में है

टीवी एक्ट्रेस आशका गोराडिया (Aashka Goradia) पिछले कुछ दिनों से एक्टिंग से दूर हैं, लेकिन सोशल मीडिया पर वह काफी एक्टिव हैं. आए दिन उनकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल होती रहती हैं. इसी बीच आशका गोराडिया (Aashka Goradia) के फैंस के लिए एक बुरी खबर सामने आ रही है. आशका गोराडिया ने एक्टिंग को अलविदा कह दिया है.

आशका गोराडिया (Aashka Goradia) ने अपने बाकी सपनों को पूरा करने के लिए एक्टिंग को अलविदा कह दिया है. टीवी की चकाचौंध से दूर होने के लिए काफी प्रेरणा और हिम्मत की जरूरत पड़ती है. यह हिम्मत दिखाते हुए आशका गोराडिया अब अपने दूसरे सपने को पूरा करने के पीछे लग गई हैं. महाराणा प्रताप, नागिन और बालवीर जैसे फेमस टीवी शोज में काम करके अब वह अपने दूसरे सपने की तरफ उड़ान भर रही हैं.

आशका गोराडिया (Aashka Goradia) से पूछा गया कि क्या वह टीवी कंटेंट से दूर जाना चाहती हैं तब उन्होंने बताया कि बाकी इंडस्ट्रीज की तरह ही टीवी इंडस्ट्री बहुत बड़ी है लेकिन टीवी का कंटेंट एक एक्टर के हाथ में नहीं होता है. एक्टिंग के अलावा भी वह बहुत कुछ करना चाहती हैं. आशका अपनी जर्नी से बहुत खुश हैं और यह मानती हैं कि उनके जीवन में उनको बहुत कुछ दिया है. एक्टिंग से लेकर योगा और उद्यमी बनने तक उन्हें बहुत कुछ मिला है. व्यवसाय खड़ा करने के बाद अब लोग उनके काम की तारीफ कर रहे हैं और उन्हें अवार्ड भी मिल रहे हैं.

एक इंटरव्यू में उन्हेंने कहा कि %व्यवसाय% हमेशा उसके खून में रहा है, और वह एक्टिंग में बाई चांस चली गई. उन्होंने कहा कि उसने इंडस्ट्री में प्रोड्यूसर्स को अपना फैसला सुनाया है. क्योंकि सास भी कभी बहू थी, नागिन, भारत का वीर पुत्र- महाराणा प्रताप, बिग बॉस और खतरों के खिलाड़ी जैसे बड़े शोज में वो नजर आ चुकीं आशका फिटनेस पर बहुत ध्यान देती हैं.

अक्षय कुमार से लेकर प्रियंका चोपड़ा तक, इस मुश्किल घड़ी में सितारे कर रहे हैं लोगों की मदद

देश में कोरोना (Coronavirus) संकट बढ़ता जा रहा है. हर दिन कोरोना के बढ़ते मामलों के चलते लोग जूझ रहे हैं. अस्पतालों में ऑक्सीजन (Oxygen) की कमी देखने को मिल रही है. ऑक्सीजन को लेकर इस साल जितना हाहाकार देश में मचा है वो कोरोना की पहली वेव में नहीं देखने को मिला था. इस बीच सरकार ने ऑक्सीजन की कमी की भरपाई करने के लिए कई कदम उठाए हैं. इसी कड़ी में कई सेलेब्स अपने तरीके से लोगों की मदद के लिए आगे आए हैं.इन सब में सबसे ऊपर नाम सोनू सूद (Sonu Sood) का है. वह पिछले साल से ही प्रवासी मजदूरों और कामगारों की मदद कर रहे हैं. वह एक मसीहा के तौर पर उनके लिए उभरे हैं. हाल में सोनू सूद छोटे-छोटे और दूर-दराज के गांवों में वैक्सीनेशन करवा रहे हैं और लोगों के बीच जागरुकता फैला रहे हैं.प्रियंका चोपड़ा (Priyanka Chopra) भारत में नहीं है लेकिन वह अनुरोधों को बढ़ा रही है और देश भर से कोविड से बचाव करने वाले संसाधनों का आदान-प्रदान कर रही हैं, जिससे की लोग अपनी आवश्यकता के अनुसार उन संसाधनों को पा सकें. अपनी वैश्विक पहुंच का उपयोग करते हुए, प्रियंका इस समय के दौरान हमारे साथी नागरिकों की मदद करने के लिए सामुदायिक भागीदारी की जरूरतों पर जोर दे रही हैं.अक्षय कुमार (Akshay Kumar) ने एक दिन पहले क्रिकेटर गौतम गंभीर के फाउंडेशन को एक करोड़ रुपए दिए हैं. इन करोड़ रुपए जरूरतमंदों को फूड, मेडिसिन और ऑक्सीजन के लिए इस्तेमाल किया जाएगा.

भूमि पेडनेकर हाल में ही कोरोना से रिकवर हुई हैं और उन्होंने खुद भी प्लाज्मा डोनेट किया और लोगों को भी प्लाज्मा डोनेट करने की अपील की.इसके अलावा कई और भी सितारे हैं जिन्होंने इस महामारी में कई लोगों की मदद की है और कर रहे हैं. सलमान खान भी लोगों को खाना बनवा रहे हैं.

मलाइका अरोड़ा ने बॉयफ्रेंड अर्जुन कपूर को क्या-क्या है सिखाया? एक्टर ने किया खुलासा

बॉलीवुड एक्ट्रेस मलाइका अरोड़ा (Malaika Arora) इन दिनों बॉयफ्रेंड अर्जुन कपूर (Arjun Kapoor) को लेकर चर्चा में हैं. दोनों अपने रिलेशनशिप को लेकर अक्सर ही लाइमलाइट में बने रहते हैं. सोशल मीडिया पर दोनों साथ में अपनी तस्वीरें भी शेयर करते रहते हैं. मलाइका और अर्जुन (Malaika-Arjun) के बीच की बॉन्डिंग भी सुर्खियों में छाई रहती है.

हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में अर्जुन कपूर ने मलाइका अरोड़ा (Malaika Arora) के बारे में बात की है. HT Brunch से बातचीत में अर्जुन ने मलाइका से क्या सीखा इस बारे में बताते हुए उन्होंने कहा, मुझे प्यार है कि मलाइका कितनी डिग्निफाइड हैं. 20 की उम्र से लेकर अभी तक वो जैसी रही हैं, एक स्वतंत्र महिला होने के नाते, अपनी खुद की पर्सनालिटी के साथ मैंने उन्हें चीजों के बारे में अपने नेरेटिव्स को बदलने की कोशिश करते देखा है.

एक्टर ने आगे कहा कि वो सिर्फ अपने सिर को गरिमा के साथ झुकाने और अपने काम को बोलने देने में विश्वास करती है और ऐसा जीवन जीने की कोशिश करती हैं जिससे वो खुश हो सके. मैं हर दिन उनसे सीखता हूं. आपको बता दें कि एक इंटरव्यू में मलाइका ने अपने और अर्जुन के एज गैप को लेकर चुप्पी तोड़ी थी. मलाइका 48 साल की हैं तो अर्जुन की उम 38 साल है. मलाइका (Malaika Arora) को उम्र में अपने से कहीं छोटे अर्जुन को डेट करने पर काफी आलोचना और तानों का सामना करना पड़ा था. उन्हें सोशल मीडिया पर जमकर ट्रोल भी किया गया था. इन आलोचनाओं का मलाइका ने करारा जवाब दिया था.

कार्तिक आर्यन

ने लोगों को पब्लिकली यह स्टंट नहीं करने की चेतावनी दी

बॉलीवुड एक्टर एक उत्साही सोशल मीडिया यूजर हैं. वे अक्सर अपने इंस्टाग्राम हैंडल से फैंस और फॉलोअर्स के लिए अपने दिन-प्रतिदिन के अपडेट शेयर करते हैं. इस समय देश कोरोनो वायरस (Coronavirus) की घातक सेकेंड वेव का सामना कर रहा है. सोशल मीडिया के माध्यम से कुछ सेलेब लोगों की मदद करने के लिए सामने आए हैं.

कार्तिक आर्यन (Kartik Aaryan) भी अपने फैंस और फॉलोअर्स से मास्क लगाने और सभी आवश्यक सेफ्टी नॉर्म्स का पालन करने का आग्रह कर रहे हैं. अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर उन्होंने अपनी एक इमेज शेयर की, इसमें वे गले में पहने हुए अपने मफलर को हाथ से पकड़े हुए हैं. अपनी पोस्ट के माध्यम से उन्होंने लोगों को एक सख्त मैसेज दिया. इस मैसेज में उन्होंने लिखा था, 'इसे सार्वजनिक रूप से आजमाएं नहीं.'

उनके कुछ फैंस ने उनके लुक के लिए उनकी तारीफ भी की. एक इन्स्टाग्रामर यूजर ने लिखा, 'हम कोशिश करें भी तो आपकी तरह थोड़ी ही दीखेंगे ?? बेहतर है कि हम मास्क ही पहन लें'. एक अन्य यूजर ने लिखा, 'परफेक्ट पिक्चर'.

इस बीच, पिछले हफ्ते एक्टर ने अपने ट्विटर हैंडल से प्रयागराज में एक एम्बुलेंस की व्यवस्था के लिए एक दोस्त की मदद ली थी. कार्तिक ने ट्वीट किया था, 'प्रयागराज में एक मित्र को तत्काल आधार पर एक एम्बुलेंस की जरूरत है... कृपया संपर्क करके मदद करें'. कुछ ही समय में, नेटिजेंस ने एक्टर की मदद की. बदले में, उदार एक्टर ने अपने फैंस को उनकी मदद करने के लिए धन्यवाद दिया.

उन्होंने लिखा, 'सभी को मदद के लिए धन्यवाद.' कार्तिक का यह पहला ट्वीट था जब धर्मा प्रोडक्शंस ने फिल्म दोस्ताना 2 से उन्हें बाहर निकलने की घोषणा की. कुछ दिनों पहले, कार्तिक ने लोगों से अपना मुखौटा पहनने और सुरक्षित रहने का आग्रह किया था. एक्टर ने मास्क के साथ अपनी एक इमेज शेयर की थी.

टोक्यो में ओलंपिक आयोजन समिति की प्रेसीडेंट सीको हेसीमोतो रेनबो रंग का मास्क पहनकर प्रतिनिधियों के साथ नजर आयीं।

आईपीएल में आज आमने-सामने होंगी रोहित और सैमसन की टीमें

नई दिल्ली, (एजेंसी)। आईपीएल के इस सत्र में अब तक उम्मीद के अनुरुप प्रदर्शन नहीं कर पायी कप्तान रोहित शर्मा की मुंबई इंडियंस गुरुवार को यहां संजू सैमसन की राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ जीत के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के इरादे से उतरेगी। मुम्बई की टीम को पिछले दो मैचों में लगातार हार का सामना करना पड़ा है जिससे अब वह उबरना चाहेगी हालांकि इसके लिए उसके मध्यक्रम के बल्लेबाजों को बेहतर प्रदर्शन करना होगा। पिछले मैच में मुम्बई को पंजाब किंग्स ने नौ विकेट से हरा दिया था। इससे टीम पर बेहतर प्रदर्शन का दबाव रहेगा। मुंबई को अगर जीत दर्ज करनी है तो उसके कप्तान रोहित के अलावा उनके जोड़ीदार क्विंटन डिकॉक को भी बड़ी पारी खेलनी होगा क्योंकि टीम का मध्यक्रम अब तक रन नहीं बना पाया है। मध्यक्रम में सूर्यकुमार यादव ने सबसे ज्यादा रन बनाये हैं पर उन्हें अन्य खिलाड़ियों इशान किशन , हार्दिक पंड्या , क्रुणाल पंड्या और कीरोन पोलार्ड का साथ नहीं मिल पाया है। वहीं गेंदबाजी में तेज गेंदबाज ट्रेंट बोल्ट और जसप्रीत बुमराह ने डेथ ओवरों में बहुत अच्छी गेंदबाजी की है। लेग स्पिनर राहुल चाहर और क्रुणाल की भी गेंदबाजी प्रभावशाली रही है। ऐसे में उन्हें यहां की पिच पर भी सफलता मिलने की उम्मीदें हैं। पोलार्ड को पांचवें या छठे गेंदबाज के रूप में उपयोग किया जा रहा है जबकि हार्दिक केवल बल्लेबाजी ही करेंगे। वहीं दूसरी ओर सैमसन के नेतृत्व में उतरी राजस्थान ने पहले तीन मैच में हार के बाद अपने चौथे मैच में कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) को हराकर इस टूनार्मेंट में अपनी पहली जीत हासिल की है। अब उसका लक्ष्य इस सिलसिले को आगे भी जारी रखना रहेगा। राजस्थान की भी राह आसान नहीं है। उसे विदेशी खिलाड़ियों जोफ्रा आर्चर, बेन स्टोक्स, लियाम लिविंगस्टोन और एंड्रयू टाइ के टूनार्मेंट से हटने के कारण इनके विकल्प तलाशने हैं।

राजस्थान टीम के पास अभी तक एक अच्छी सलामी जोड़ी नहीं है। युवा मनन वोहरा और यशस्वी जायसवाल अब तक बड़ी पारी नहीं खेल पाये हैं। टीम को अगर जीत दर्ज करनी है तो इन खिलाड़ियों के अलावा जोस बटलर को भी बड़ी पारी खेलनी होगी। इसके साथ ही कप्तान सैमसन को रन बनाते रहना होगा। युवा शिवम दुबे, डेविड मिलर और रियान पराग को भी अहम योगदान देना होगा। ऑलराउंडर क्रिस मौरिस को टीम ने भारी रकम देकर खरीदा है, उन्हें भी बेहतर प्रदर्शन कर अपने चयन को सही साबित करना होगा। गेंदबाजी में अब तक तेज गेंदबाज चेतन सकारिया ने अच्छी भूमिका निभायी है, इसके अलावा जयदेव उनादकट और मुस्ताफिजुर रहमान का भी प्रदर्शन अच्छा रहा है। इन तीनों तेज गेंदबाजों के अलावा मौरिस को भी अपने प्रदर्शन में निरंतरता बनाये रखनी होगी।

लेग स्पिनर राहुल तेवतिया को अब तक के मैचों में केवल एक विकेट मिला है जबकि एक अन्य लेग स्पिनर श्रेयस गोपाल भी पिछले दो मैचों में कोई विकेट नहीं ले पाये है। ऐसे में इन दोनो को अपने प्रदर्शन में सुधार करना होगा।

दोनो टीमें इस प्रकार हैं :

मुंबई इंडियन्स : रोहित शर्मा, एडम मिल्ने, आदित्य तारे, अनमोलप्रीत सिंह, अनुकुल रॉय, अर्जुन तेंदुलकर, क्रिस लिन, धवल कुलकर्णी, हार्दिक पंड्या, इशान किशन, जेम्स नीशाम, जसप्रीत बुमराह, जयंत यादव, कीरोन पोलार्ड, क्रुणाल पंड्या, मार्को जानसेन, मोहसिन खान, नाथन कूल्टर नाइल, पीयूष चावला, क्विंटन डिकॉक, राहुल चाहर, सौरभ तिवारी, सूर्यकुमार यादव, ट्रेंट बोल्ट और युद्धवीर सिंह।

राजस्थान रॉयल्सः संजू सैमसन (कप्तान), जोस बटलर, यशस्वी जायसवाल, मनन वोहरा, अनुज रावत, रियान पराग, डेविड मिलर, राहुल तेवतिया, महिपाल लोमरोर, श्रेयस गोपाल, मयंक मारकंडे, जयदेव उनादकट, कार्तिक त्यागी शिवम दुबे, क्रिस मौरिस, मुस्ताफिजुर रहमान, चेतन सकारिया, केसी करियप्पा, कुलदीप यादव और आकाश सिंह।

अपने खेल से लोगों को खुशी देना चाहते हैं : मैकुलम

अहमदाबाद, (एजेंसी)। कोरोना महामारी के बीच ही आईपीएल के आयोजन पर जारी बहस के बीच ही कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के मुख्य कोच ब्रैंडन मैकुलम ने कहा है कि उनकी टीम इस कठिन समय में अपने खेल के जरिये लोगों को खुशी देना चाहती है। भारत में कोरोना की दूसरी लहर से भारी नुकसान हुआ है और कई लोगों को अपनी जानें गंवानी पड़ी हैं।

इसी कारण कई विदेशी खिलाड़ियों ने भी आईपीएल छोड़कर स्वदेश लौटने में ही भलाई समझी है। इसका प्रभाव आईपीएल के जैविक रूप से सुरक्षित माहौल में भी देखा जा रहा है। मैकुलम ने कहा, मुझे पता है कि महामारी के कारण लोग बेहद परेशान हैं पर ये हाल भारत में ही अन्य देशों में भी हैं।

उन्होंने कहा, इस अवसर पर हम ऐसा क्रिकेट खेलने का प्रयास करेंगे जिससे लोगों को कुछ देर के लिए खुश होने का अवसर जरुर मिल जाएगा। मैकुलम ने कहा, इस मुश्किल घड़ी में भी हम खेल के जरिये लोगों के जीवन में उम्मीदें जगा सकते हैं।

वार्नर ने डिविलियर्स को लीजेंड करार दिया

अहमदाबाद, (एजेंसी)। सनराईजर्स हैदराबाद के कप्तान डेविड वार्नर ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के स्टार बल्लेबाज एबी डिविलियर्स की दिल्ली कैपिटल्स के खेली गयी अर्धशतकीय पारी की जमकर तारीफ की है। डिविलियर्स की इस पारी के कारण ही आरसीबी की टीम दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ 171 रनों का अच्छा स्कोर बनाने में सफल रही। डिविलियर्स ने अपनी पारी के दौरान 42 गेंदों पर 75 रन बनाये। अपनी इस पारी में डिविलियर्स ने 5 छक्के और 3 चौके लगाए। डीविलियर्स की इस आक्रामक पारी से उनके प्रशंसक बेहद खुश हैं। सोशल मीडिया पर भी अपनी इस पारी के कारण डीविलियर्स छाये हुए हैं। वहीं वार्नर भी इस पारी को देखकर उनके मुरीद हो गये हैं।

वार्नर ने डीविलियर्स की इस पारी पर ट्वीट करते हुए उन्हें लीजेंड करार दिया। उन्होंने इसके साथ ही लिखा कि डिविलियर्स उनके आदर्श हैं। इस मैच में अपनी शानदार बल्लेबाजी के साथ ही डीविलियर्स ने आईपीएल में अपने पांच हजार रन भी पूरे किये हैं। वह सबसे कम गेंदों पर ऐसा करने वाले बल्लेबाज हैं। आईपीएल में डीविलियर्स पांच हजार रन बनाने वाले दूसरे विदेशी बल्लेबाज हैं। उनसे पहले यह उपलब्धि ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज डेविड वार्नर ने हासिल की थी। वार्नर सबसे कम पारियों में पांच हजार रनों का रिकॉर्ड बनाने वाले खिलाड़ी हैं जबकि डीविलियर्स ने सबसे कम गेंदों पर यह रन बनाये हैं।

ऑस्ट्रेलियाई उड़ानों पर प्रतिबंध को बड़ा मामला नहीं मानते हैं पोंटिंग

अहमदाबाद, (एजेंसी)। दिल्ली कैपिटल्स के मुख्य कोच रिकी पोंटिंग ने ऑस्ट्रेलिया के भारत के साथ उड़ानों पर रोक के फैसले को लेकर कहा है कि कोरोना महामारी के कारण इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के जैव सुरक्षित वातावरण के बाहर जो हालात हुए हैं उसको देखते हुए यह कोई बड़ा मामला नहीं है। ऑस्ट्रेलिया ने कोविड-19 के मामलों में बढ़ोतरी को देखते हुए भारत से 15 मई तक सभी सीधी यात्री उड़ानों पर प्रतिबंध लगा दिया है।

वहीं इससे पहले ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री स्कॉट मॉरीसन ने साफ कर दिया था कि आईपीएल में भाग ले रहे उनके देश के खिलाड़ियों को वापसी के लिये स्वयं ही कोई व्यवस्था करनी होगी। पोंटिंग ने कहा, जहां तक आस्ट्रेलियाई लोगों के भारत से वापस स्वदेश लौटने की बात है तो हमारी सरकार ने कुछ निर्णय किये हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि इसकी राह में कुछ रुकावटें हैं पर हमारी और अन्य आस्ट्रेलियाई नागरिकों की यात्रा छोटा मुद्दा है। उन्होंने कहा, हम हर दिन बाहर की स्थिति के बारे में सोच रहे हैं और हम जानते हैं कि हम कितने भाग्यशाली है जो हम खेल पा रहे हैं। उम्मीद है कि भारत में लोग आईपीएल क्रिकेट को देखकर मनोरंजन कर रहे होंगे। कोरोना संक्रमण बढ़ने के कारण ही ऑस्ट्रेलिया के तीन खिलाड़ी टूनार्मेंट से हट गये हैं जबकि मुंबई इंडियन्स के बल्लेबाज क्रिस लिन ने क्रिकेट आस्ट्रेलिया (सीए) से टूनार्मेंट समाप्त होने के बाद खिलाड़ियों की स्वदेश वापसी के लिये विशेष विमान की व्यवस्था करने की अपील की है। दूसरी ओर भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों को आश्वस्त किया है कि बोर्ड उनके स्वदेश वापसी की पूरी व्यवस्था करेगा। इसलिए उन्हें परेशान होने की जरुरत नहीं है।

ऋषभ ने बताया दिल्ली की हार का कारण

अहमदाबाद, (एजेंसी)। दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान ऋषभ पंत ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर (आरसीबी) के हाथों मिली हार पर निराशा व्यक्त करते हुए कहा है कि उनकी टीम ने बल्लेबाजी के दौरान विरोधी टीम को करीब 10 से 15 रन ज्यादा बनाने दिए जिससे यह मैच उनके हाथ से निकल गया।

इस मैच में स्टार बल्लेबाज एबी डिविलियर्स ने 42 गेंद में नाबाद 75 रनों की आक्रामक पारी खेलकर अपनी टीम को जीत दिलाई। डिविलियर्स इस पारी के कारण आरसीबी की टीम ने पांच विकेट पर 171 रन बनाए। डिविलियर्स के अलावा रजत पाटीदार ने 31 जबकि ग्लेन मैक्सवेल ने 25 रन बनाये।

वहीं इसके जवाब में दिल्ली कैपिटल्स की ओर से लक्ष्य का पीछा करते हुए कप्तान ऋषभ पंत ने 48 गेंद में नाबाद 58 रन जबकि शिमरोन हेटमायर ने 25 गेंदबों में नाबाद 53 रन बनाये। ऋषभ और हेटमायर की अर्धशतकीय पारियों के बाद भी दिल्ली की टीम 20 ओवर में चार विकेट पर 170 रन ही बना पायी और उसे एक रन से हार का सामना करना पड़ा।

ऋषभ ने मैच के बाद कहा, मुझे लगता है कि इस विकेट पर उन्होंने 10 से 15 रन ज्यादा बना लिए थे। इसके बाद भी हेटमायर की आक्रामक पारी से हम जीत के बेहद करीब पहुंच गये थे, इसके बाद भी जीत न मिलना निराशाजनक रहा।

उन्होंने कहा, जब हमें 14 या 16 रन बनाने थे तो हम योजना बना रहे थे कि जो भी स्ट्राइक पर होगा वह अधिक से अधिक रन बनाने की कोशिश करेगा।

इससे पहले आरसीबी की बल्लेबाजी के दौरान डिविलियर्स ने अंतिम ओवर में मार्कस स्टोइनिस पर तीन छक्के लगाकर 23 रन बनाये। दिल्ली के कप्तान ऋषभ इसके बाद भी अंतिम ओवर स्टोइनिस को देने के फैसले को सही करार दिय। उन्होंने कहा कि इस विकेट पर स्पिनरों को उतनी सहायता नहीं मिल रही थी जितनी हमें उम्मीद थी। यही कारण है कि अंतिम ओवर स्टोइनिस को दिया गया। सभी मैचों से सकारात्मक पक्ष लेना अच्छा होता है, एक युवा टीम के रूप में हम प्रत्येक दिन के साथ ही बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं।

वहीं दूसरी ओर आरसीबी के कप्तान विराट कोहली ने भी माना कि इस पिच पर 160-165 रन का स्कोर अच्छा था पर साथ ही कहा कि उनकी टीम की कुछ गलतियों के कारण मुकाबला करीबी हो गया था। उनकी टीम ने कुछ गल्तियां की जिससे मुकाबला काफी करीबी रहा।

कोहली ने कहा, 30 रनों पर ही दो विकेट खोने के बाद भी डिविलियर्स ने शानदार पारी खेली। इसके अलावा ग्लेन मैक्सवेल और रजत पाटीदार ने भी अच्छी बल्लेबाजी की। हमने क्षेत्ररक्षण ठीक नहीं किया इसी कारण मैच एक समय हमारे हाथ से निकल गया था।

सिंगापुर और थाईलैंड में होंगे महिला विश्व कप गोल्फ मुकाबले

सिंगापुर, (एजेंसी)। कोरोना महामारी के कारण एशिया में पिछले डेढ़ साल से नहीं हो पाये महिला गोल्फ (एलपीजीए) टूर के टूनार्मेंट अब सिंगापुर और थाईलैंड में होंगे। कोविड-19 संक्रमण के डर से हालांकि कुछ प्रतियोगिताएं रद्द भी की गयी हैं। एचएसबीसी महिला विश्व गोल्फ चैंपियनशिप मई के पहले सप्ताह में सिंगापुर के सेंटोसा गोल्फ क्लब में शुरू होगी जबकि इसके बाद बैंकाक के करीब चोनबरी में छह से नौ मई के बीच होंडा एलपीजीए थाईलैंड ओपन का आयोजन होगा।

वहीं तीसरा टूनार्मेंट चीन के हैनान आइलैंड में आयोजित किया जाना था पर एलपीजीए ने महामारी से जुड़ी यात्रा पाबंदियों को देखते हुए इसे तीन सप्ताह पहले ही इसे स्थगित कर दिया था। सिंगापुर ओपन में 69 खिलाड़ी भाग लेंगे और इसमें कट नहीं होगा। वहीं इस दौरान दर्शकों को सीमित संख्या में गोल्फ कोर्स पर आने की अनुमति मिलेगी।

जंपा ने आईपीएल छोड़ने का कारण बताया, बायोबबल में भी सबसे असुरक्षित लगा टूर्नामेंट

सिडनी, (एजेंसी)। कोरोना महामारी के कारण बीच में इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) छोड़कर ऑस्ट्रेलिया लौटने वाले आरसीबी के स्पिनर एडम जंपा ने कहा है कि आईपीएल का 14 वां सत्र भी संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में ही होना चाहिये था। जंपा ने कहा कि उन्होंने आईपीएल को बीच में ही छोड़ने का फैसला इसलिए किया क्योंकि यह जैविक रूप से सुरक्षित माहौल (बायोबबल) में भी सबसे असुरक्षित टूनार्मेंट लग रहा था। आरसीबी का कहना है कि जंपा और रिचर्डसन निजी कारणों से स्वदेश लौटे हैं। जंपा ने स्थानीय मीडिया से कहा कि वह यूएई में कहीं अधिक सुरक्षित महसूस कर रहे थे जहां पिछले साल टूनार्मेंट का आयोजन हुआ था।

जंपा ने कहा, कोरोना महामारी के बाद से हम अब तक कई बार जैविक रूप से सुरक्षित माहौल का हिस्सा रहे हैं पर मुझे लगता है कि यह संभवतः सबसे असुरक्षित रहा है। मुझे लगता है कि ऐसा भारत में संक्रमण बढ़ने के कारण हुआ। हमें यहां साफ सफाई के बारे में हमेशा बताया जाता रहा। इसके साथ ही अतिरिक्त सतर्कता भी बरतने को कहा गया। मुझे लगा कि यहां सबसे अधिक असुरक्षित माहौल था।

इस लेग स्पिनर ने कहा, आईपीएल का आयोजन छह महीने पहले दुबई में हुआ था पर तब हमने वहां बिलकुल भी असुरक्षित अनुभव नहीं किया। मैंने वहां बेहद सुरक्षित महसूस किया। निजी तौर पर मुझे लगा कि इस आईपीएल के लिए भी यह बेहतर विकल्प होता। उन्होंने कहा, इसी साल भारत में टी20 विश्व कप भी होना है। ऐसे में क्रिकेट जगत में अब इसको लेकर सबसे अधिक चर्चा होगी हालांकि इसमें अभी छह महीने का लंबा समय है। आईपीएल के 14 वें सत्र में जंपा को एक भी मैच खेलने को नहीं मिला है जबकि उन्हें टीम ने डेढ़ करोड़ रुपये में खरीदा था। उन्होंने कहा कि कई कारणों से उन्होंने आईपीएल से हटने का फैसला किया। उन्होंने कहा, बेशक यहां कोविड से जुड़ी स्थिति बेहद खराब थीं। इसके अलावा मुझे टीम में खेलने का मौका भी नहीं मिला, मैं ट्रेनिंग के लिए जा रहा था और मुझे कोई प्रेरणा नहीं मिल रही थी। जंपा ने कहा, कुछ और चीजें भी थी जैसे जैविक रूप से सुरक्षित माहौल की थकान और स्वदेश जाने वाली उड़ानों से जुड़ी खबरें। मुझे लगा कि यह वापसी का फैसला करने का सही समय है। आईपीएल जारी रहने के संदर्भ में जंपा ने कहा, काफी लोग कह रहे हैं कि क्रिकेट से कुछ लोगों को राहत मिल सकती है लेकिन यह काफी निजी जवाब है।उन्होंने कहा, अगर किसी के परिवार का सदस्य मौत से जूझ रहा है तो वह संभवतः क्रिकेट के बारे में विचार नहीं करता।

मैड्रिड में चेलेसा के क्रिस्टीयन पूलीसिस चैम्पियंस लीग फुटबॉल के सेमीफाइनल में रियल मैड्रिड के गोलकीपर थीबाउट को गोल करने से रोकने का प्रयास करते हुए।

श्रीलंका के पूर्व क्रिकेटर जोएसा पर 6 साल का प्रतिबंध

कोलंबो, (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने मैच फिक्सिंग मामले में श्रीलंका के पूर्व क्रिकेटर नुवान जोएसा पर छह साल का प्रतिबंध लगा दिया है। आईसीसी के अनुसार पूर्व तेज गेंदबाज जोयसा ने मैच फिक्स करने के प्रयास किये थे। आईसीसी के अनुसार जोएसा पर यह प्रतिबंध 31 अक्टूबर 2018 से लागू होगा जब से उन्हें अस्थायी तौर पर निलंबित किया गया था।

वहीं आईसीसी की इंटीग्रिटी यूनिट के महाप्रबंधक अलेक्स मार्शल ने कहा, राष्ट्रीय टीम के कोच भी रहे जोएसा को आदर्श स्थापित करना चाहिए था पर इसकी जगह वह अनैतिक गतिविधियों में शामिल रहे और अन्य को भी इसमें शामिल करने का प्रयास करने लगे। मार्शल ने कहा, मैचों को फिक्स करना खेल सिद्वांतों और प्रशंसकों के साथ धोखा है। इसे किसी भी कीमत पर सहन नहीं किया जाएगा। श्रीलंका की ओर से 30 टेस्ट और 95 वनडे खेलने वाले 42 वर्षीय जोएसा पर 2017 में यूएई में आयोजित टी10 टूनार्मेंट के दौरान श्रीलंकाई टीम के गेंदबाजी कोच के रूप में मैच फिक्सिंग में शामिल होने के आरोप लगाये गये थे।